सहायक सामग्री निर्माण समिति

हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा-XII

क्र.सं.	*नाम*	*पद*
1.	**श्रीमती रानी देवी** **(समूह संदर्शिका)**	*प्रधानाचार्या* सर्वोदय कन्या विद्यालय नं. 1 ज़ीनत महल, कमला मार्किट, नई दिल्ली-2
2.	**डॉ. सीमा पाण्डे** **(सदस्य)**	*व्याख्याता - हिंदी* दीनदयाल उपाध्याय सर्वोदय बाल विद्यालय, राउज़ ऐवन्यू, नई दिल्ली-2
3.	**श्रीमती कान्ता** **(सदस्य)**	*व्याख्याता - हिंदी* डॉ. राजेन्द्रप्रसाद सर्वोदय विद्यालय, राष्ट्रपति संपदा, नई दिल्ली-4
4.	**डॉ. रेखा सिंह** **(सदस्य)**	*व्याख्याता - हिंदी* बी. सी. एस. जी. सर्वोदय बाल विद्यालय जे ब्लाक साकेत नई दिल्ली-17

अध्यापन निर्देश

प्रस्तुत सहायक सामग्री कक्षा बारहवीं, हिन्दी (ऐच्छिक) के विद्यार्थियों को पुनरावृत्ति कार्य कराने के लिए एक सम्पूर्ण मार्गदर्शिका के रूप में तैयार की गई है। इस सहायक सामग्री के अंतर्गत बोर्ड द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम एवं परीक्षा की दृष्टि से आवश्यक पाठ्य-सामग्री को इस प्रकार सरल एवं प्रभावी भाषा में प्रस्तुत किया गया है कि विद्यार्थियों को कम समय में अधिकाधिक पुनरावृत्ति कार्य करवाया जा सकता है। पुनरावृत्ति कार्य करवाते समय अध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त, बोर्ड परीक्षा प्रश्नपत्र हल करने हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर भी विद्यार्थियों का विशेष मार्गदर्शन करेंगें- -

(1) पुनरावृत्ति-कार्य करवाते समय शब्द सीमा एवं समय प्रबन्धन का ज्ञान अवश्य दें ताकि छात्र निर्धारित समय से लगभग 10 मिनट पूर्व कार्य समाप्त कर स्वलिखित कार्य को दोहरा सकें।

(2) प्रश्न-पत्र का आरंभ अपठित गद्यांश, पद्यांश, निबंध-लेखन और पत्र-लेखन, जैसी रचनात्मक अभिव्यक्ति से होता है जिसके निमित्त अत्यधिक अभ्यास एवं स्वभाषा प्रयोग पर बल दिया जाए।

(3) पत्र-लेखन में अंक विभाजन चार भागों में होता है। प्रारंभ और अंत की औपचारिकताएँ 1+1, विषय प्रतिपादन 2 अंक, प्रस्तुतिकरण 1 अंक। इसलिए पत्र-लेखन अभ्यास कार्य में चारों ही पक्षों को समाहित करना आवश्यक है, साथ ही शिक्षक यह ज्ञान भी दें कि समस्या समाधान का आग्रह किससे करना है और किससे नही।

(4) अभिव्यक्ति और माध्यम के अंतर्गत 5 अंक वाले प्रश्नों के अतिरिक्त 1 अंक वाले लघूत्तरात्मक प्रश्नों का अभ्यास अत्यंत आवश्यक है।

(5) काव्य-खण्ड के अंतर्गत व्याख्या के लिए निर्धारित अंक 8 हैं। अत: छात्रों को सतत् अभ्यास से यह ज्ञान कराना आवश्यक है कि सप्रसंग व्याख्या को तीन उपशीर्षकों में (प्रसंग, व्याख्या, शिल्प सौन्दर्य) विभाजित करना आवश्यक है अन्यथा यह अपूर्ण है।

(6) लेखक अथवा कवि के जीवन परिचय के अतंर्गत भी तीन उपशीर्षकों का होना आवश्यक है। 1. जीवन-परिचय 2. रचनाएँ 3. काव्यगत विशेषताएँ/भाषा शैलीगत (साहित्यिक विशेषताएँ)।

(7) सामान्यत: विद्यार्थी काव्यसौन्दर्य एवं व्याख्या को एक ही पद्धति से हल करते हैं। इस संदर्भ में उन्हें अगर यह जानकारी दे दी जाए कि काव्य सौन्दर्य को दो उपशीर्षकों 1 - भाव सौन्दर्य, 2 शिल्प सौन्दर्य में स्पष्ट किया जाए और व्याख्या को तीन उपशीर्षकों (प्रसंग, व्याख्या, शिल्प-सौन्दर्य) में स्पष्ट किया जाए तो विद्यार्थियों के लिए यह सरल होगा।

(8) पूरक पुस्तक अंतराल के बोधात्मक 3 अंक वाले प्रश्नों का उत्तर 60-70 शब्दों तथा 6 अंक वाले प्रश्न का उत्तर लगभग 100-125 शब्दों में होना चाहिए। यदि चरित्र-चित्रण से संबंधित कोई प्रश्न आता है तो उसे यथासंभव उपशीर्षकों में बाँटकर स्पष्ट करें।

विशेष - विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें कि वे प्रश्नों को प्रश्नपत्र के क्रमानुसार ही करने का प्रयास करें तथा एक प्रश्न के खण्डों और उपखण्डों को विभिन्न पृष्ठों पर न करके संकलित रूप से एक स्थान पर क्रमानुसार हल करें।

हिंदी (ऐच्छिक)

कोड सं. 002

कक्षा-XII

(क)	अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश-बोध)	(15+5)	20
(ख)	रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन		25
(ग)	अंतरा भाग-2 : (काव्य भाग)		20
	: (गद्य-भाग)		20
(घ)	अंतराल भाग-2		15

क	**अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश-बोध)**		**(२०)**
	1. गद्यांश बोध : गंद्याश पर आधारित बोध, प्रयोग, स्थानांतरण तथा शीर्षक आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न		15
	2. काव्यांश बोध : दो में से एक काव्यांश पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न		05
ख	**रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन**		**२५**
	3. निबंध (विकल्प) (किसी एक विषय पर)		10
	4. कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित)		05
	5. रचनात्मक लेखन पर दो में एक प्रश्न		05
	6. 'अभिव्यक्ति और माध्यम' के आधार पर व्यावहारिक लेखन पर पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न	(1x5)	05
ग	**अंतरा भाग-२**	(20+20)	40
	काव्य भाग		20
	7. दो में से एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या		08
	7. कविताओं के कथ्य पर दो प्रश्न	(3+3)	06
	8. कविताओं के काव्य-सौन्दर्य पर तीन में से दो प्रश्न	(3+3)	06

गद्य-भाग:			20
10.	दो में से एक गद्यांश की सप्रंसग व्याख्या		06
11.	पाठों की विषय वस्तु पर तीन में से दो प्रश्न	(4+4)	08
12.	**दो** में से किसी **एक** कवि/लेखक का साहित्यिक परिचय		06
(घ) पूरक पुस्तक : अंतराल (भाग-२)			06
13.	विषयवस्तु पर आधारित (चार में से तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न)	(3+3+3)	09
14.	विविध वस्तु पर आधारित दो में से एक निबंधात्मक प्रश्न	(3+3)	06

निर्धारित पुस्तकें

(अ) अतंरा भाग-2 एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित

(ब) अंतराल भाग -2 (विविध विधाओं का संकलन) एन. सी. ई. आर. टी द्वारा प्रकाशित

(स) अभिव्यक्ति और माध्यम एन. सी. ई. आर. टी द्वारा प्रकाशित

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	अंतरा (गद्य खण्ड)	7-35
2.	अंतरा (काव्य खण्ड)	36-63
3.	पूरक पुस्तक - अंतराल	64-78
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	79-99
5.	अपठित बोध (काव्यांश, गद्यांश)	100-108
6.	व्यावहारिक लेखन (निबंध, पत्र)	109-111

गद्य-खण्ड

प्रेमघन की छाया -स्मृति

रामचन्द्र शुक्ल

पाठ परिचय - 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का एक संस्मरणात्मक निबन्ध है। प्रस्तुत निबन्ध में शुक्ल जी ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति अपने प्रारंभिक रूझानों का वर्णन किया है। परिवार के साहित्यिक परिवेश, मित्र-मंडली के प्रभाव एवं प्रेमघन के सम्पर्क में आने से वे किस प्रकार साहित्य-रचना और प्रवृत्त हुए, उन्होंनें इसका भी वर्णन किया है।

स्मरणीय बिन्दु

- लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पिता फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। वे पुरानी हिन्दी कविता के प्रेमी थे। फारसी कवियों की उक्तियों को हिन्दी कवियों की उक्तियों के साथ मिलाने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था। वे प्राय: रात को घर के सब लोगों को एकत्र करने रामचरितमानस और रामचन्द्रिका पढ़कर सुनाया करते थे। भारतेंदु जी के नाटक उन्हें बहुत प्रिय थे। लेखक 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक के नायक राजा हरिश्चन्द्र तथा लेखक भारतेंदु हरिश्चन्द्र को एक ही समझता था। फलस्वरूप भारंतेदु जी के प्रति लेखक के बालमन में एक अपूर्व मधुर भावना जागृत हो गई थी।
- जब आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आठ वर्ष के थे, तब उनके पिता का तबादला राठ तहसील से मिर्जापुर हो गया। उन्हें पता चला कि भारतेंदु मंडल के प्रसिद्ध कवि उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' पास ही कहीं रहते हैं। शुक्ल जी के मन में उनके दर्शन की अभिलाषा उत्पन्न हुई। साथी बालकों की मंडली के साथ वह डेढ़ मील का सफर तय करके चौधरी साहब के मकान में सामने पहुँचे। ऊपर का बरामदा सघन लताओं के जाल से ढका हुआ था, बीच-बीच में खम्भे और खाली जगह थी। काफी इंतजार के बाद उन्हें चौधरी साहब की एक झलक दिखाई दी। उनके बाल बिखरे हुए थे तथा एक हाथ खम्भे पर था। कुछ ही देर में यह छवि आँखों से ओझल हो गई। यही थी 'प्रेमघन' की पहली झलक।
- समय के साथ-साथ हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर लेखक का रूझान बढ़ता गया। उनके घर में जीवन भारत प्रेस की पुस्तकें आती थी। वे पं॰ केदारनाथ जी पाठक के पुस्तकालय से लाकर पुस्तकें पढ़ा करते थे। शुक्ल जी एक बार किसी बारात में शामिल होने काशी गए थे। वहाँ घूमते हुए उन्होनें पं. केदारनाथ जी को एक घर से निकलते देखा। यह पता चलने पर कि

वह मकान भारतेंदु जी का है, शुक्ल जी बड़े प्रेम, कुतूहल एवं भावनाओं में लीन होकर उस मकान को देखने लगे। पाठक जी लेखक की यह श्रद्धा और प्रेम देखकर बहुत प्रसन्न हुए तथा दूर तक उनके साथ बातचीत करते हुए गए। यहीं से पाठक जी और शुक्ल जी में गहरी मित्रता हो गई। इस प्रकार भारतेंदु जी के मकान के नीचे पं. केदारनाथ जी का लेखक के भावुक हृदय से परिचय हुआ जो बाद में गहरी दोस्ती में बदल गया।

- 16 वर्ष की उम्र तक लेखक की समवयस्क हिन्दी-प्रेमियों की एक मंडली बन गई थी, जिनमें प्रमुख थे - श्रीयुत् काशीप्रसाद जी जायसवाल, बा० भगवानदास जी हालना, पं० बदरीनारायण गौंड़, पं० उमाशंकर द्विवेदी।
- लेखक जिस स्थान पर रहता था, वहाँ अधिकतर वकील, मुख्तारों तथा कचहरी के अफसरों और अमलों की बस्ती थी। लेखक की मित्र मंडली की बातचीत प्राय: लिखने-पढ़ने की हिंदी में हुआ करती थी जिसमें निस्संदेह इत्यादि शब्द आया करते थे। बस्ती के उर्दूभाषी लोगों को उनकी बोली अनोखी लगती थी। उन्होनें इस मंडली का नाम ' निस्संदेह' रख दिया था।
- चौधरी साहब भारतेंदु मंडल के प्रसिद्ध कवि थे। वे पुराने एवं प्रतिष्ठित कवियों में से थे। उनके रहन सहन और व्यवहार से उनकी रईसी प्रकट होती थी। उनके संवाद सुनने लायक होते थे। उनकी बातचीत का अंदाज निराला था। उनको सुनने की जिज्ञासा हमेशा लेखक के मन में बनी रहती थी। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वरिष्ठ एवं अनुभवी होने के कारण लेखक तथा उसके मित्र चौधरी साहब को एक पुरानी चीज समझा करते थे परन्तु चौधरी साहब के प्रति प्रेम एवं आदर का भाव सदैव बना रहता था तथा उन्हें सुनने की इच्छा निरंतर बनी रहती थी। अत: इस पुरातत्व की दृष्टि से प्रेम और कुतुहल का एक अद्‌भुत मिश्रण रहता था।
- बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' एक हिन्दुस्तानी रईस थे। बसंत-पंचमी, होली आदि त्योहारों पर उनके यहाँ उत्सव हुआ करते थे। उनकी बातों में विलक्षण वक्रता थी। उनकी बातचीत का ढंग निराला था। वे बहुत विनोदप्रिय एवं हाजिर जवाब भी थे।

अभ्यास कार्य

1 :- लेखक ने अपने पिता जी की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

2 :- उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की पहली झलक लेखक ने किस प्रकार देखी?

3 :- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया?

4 :- लेखक की मित्र मंडली का नाम निस्संदेह किसने तथा क्यों रखा?

5 :- लेखक के समव्यस्क हिंदी प्रेमियों की मंडली में कौन-2 से लेखक थे?

6 :- 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' के आधार पर चौधरी साहब के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

7 :- 'भारतेन्दु जी के मकान के नीचे का यह हृदय-परिचय बहुत शीघ्र गहरी मैत्री में परिणत हो गया।' - आशय स्पष्ट कीजिए।

8 :- 'इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का अद्‌भुत मिश्रण रहता था।' इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

सप्रसंग व्याख्या

(क) मेरे पिताजी .... बदरीनारायण चौधरी। (ख) भारतेन्दु मंडल .... पहली झाँकी थी।

सुमिरिनी के मनके

–पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी

(क) बालक बच गया

पाठ परिचय

सुमिरिनी के मनके शीर्षक के अंतर्गत गुलेरी जी द्वारा रचित तीन लघु निबंध संकलित हैं – 'बालक बच गया,' 'घड़ी के पुर्जे' और 'ढेले चुन लो'। 'बालक बच गया' में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि बच्चों को उनकी आयु के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि उनका स्वाभाविक विकास हो सके।

'घड़ी के पुर्जे' में लेखक ने घड़ी के दृष्टांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि धर्म के रहस्यों की जानकारी रखना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। धर्मोपदेशकों द्वारा इस कार्य में बाधा डालने को लेखक ने बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'ढेले चुन लो' में लेखक ने समाज में प्रचलित अंध विश्वासों पर कड़ा प्रहार किया है तथा उन्हें छोड़ देने का आग्रह किया है।

स्मरणीय बिन्दु

- लेखक एक पाठशाला के वार्षिकोत्सव पर आमंत्रित थे। प्रधान अध्यापक का आठ वर्षीय पुत्र भी वहाँ था। उसकी आँखे सफेद थी, मुँह पीला था तथा दृष्टि भूमि से उठती नहीं थी।
- बालक से प्रश्न पूछे जा रहे थे तथा वह उन प्रश्नों के रटे-रटाये उत्तर दे रहा था। सभा 'वाह-वाह' करके उसके उत्तर सुन रही थी। वह धर्म के दस लक्षण, नौ रसों के उदाहरण, चंद्रग्रहण का वैज्ञानिक समाधान, इंग्लैंड के राजा आठवें हेनरी की पत्नियों के नाम तथा पेशवाओं के शासनकाल के विषय में बता गया।
- पूछे जाने पर बालक ने बताया कि वह जन्म भर लोकसेवा करना चाहता है। उसके पिता अपने पुत्र के प्रदर्शन से बेहद प्रसन्न थे।
- एक वृद्ध महाशय ने बालक से इनाम माँगने के लिए कहा। बालक के मुख पर भावों में परिवर्तन हो रहे थे। उसकी आँखों से स्पष्ट था कि उसके हृदय में बनावटी और स्वाभाविक भावों के बीच संघर्ष चल रहा है।

- बालक को निर्णय लेने में कठिनाई हो रही थी। लेखक चिंतित था कि पता नहीं बालक अब कौन-सा रटा रटाया उत्तर दे। बालक ने धीरे से लड्डू माँगा। बालक के उत्तर से उसके पिता और अध्यापक निराश हो गए। लेखक ने चैन की साँस ली।

जब तक बालक ने पुरस्कार नहीं माँगा था, तब तक लेखक की साँस घुट रही थी। पिता और अध्यापक ने बालक की भावनाओं को कुचलने में कोई कसर नही छोड़ी थी। किन्तु बालक द्वारा लड्डू माँगे जाने से लेखक को लगा कि बालक बच गया, उसका बचपन बच गया क्योंकि लड्डू की माँगं उसके बालमन की स्वाभाविक माँग है। उसका बालमन, उसकी बाल-भावनाएँ अभी भी जीवित हैं। लेखक को बालक की माँग जीवित वृक्ष के हरे पत्तों की मधुर आवाज लगी जिसमें जीवन संगीत है, सूखी लकड़ी से बनी अलमारी की खड़खड़ाहट नहीं जो सिरदर्द देती है।

अभ्यास कार्य

1 :- बालक से कौन - 2 से प्रश्न पूछे गए?

2 :- ''मै यावज्जन्म लोकसेवा करूँगा।'' किसने कहा तथा क्यों कहा?

3 :- बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी?

4 :- ''बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह लड्डू की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट नहीं।'' कथन के आधार पर बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए?

(ख) घड़ी के पुर्जे

धर्मोपदेशक उपदेश देते समय कहते हैं कि धर्म की बातों को गहराई से जानने की इच्छा हर व्यक्ति को नहीं करनी चाहिए। जो कुछ उपदेशक बताते हैं उसे चुपचाप स्वीकार कर लेना चाहिए। इस मत के समर्थन में वे घड़ी का दृष्टांत देते हैं। उनका कहना है कि यदि आपको समय जानना हो तो जिसे घड़ी देखनी आती हो, उससे समय जानकर अपना काम चला लेना चाहिए। यदि आप इतने से संतुष्ट नहीं होते तो स्वयं घड़ी देखना सीख सकते हैं। किंतु मन में यह इच्छा नहीं करनी चाहिए कि घड़ी को खोलकर, इसके पुर्जे गिनकर, उन पुर्जो को यथा स्थान लगाकर घड़ी को बंद कर दे। यह काम साधारण व्यक्ति का नहीं, विशेषज्ञ का है। इसी प्रकार धर्म के रहस्यों का जानना भी केवल धर्माचार्यो का काम है।

लेखक कहता है कि घड़ी खोलकर ठीक करना कोई कठिन काम नहीं है। साधारण लोगों में से ही बहुत से लोग घड़ी को खोलकर ठीक करना सीखते भी है और दूसरों को सिखातें भी है। इसी प्रकार धर्माचार्यो को चाहिए कि वह आम आदमी को भी धर्म के रहस्यों की जानकारी दे। धर्म का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति को कोई धर्म के विषय में मूर्ख नहीं बना सकेगा। तुम अनाड़ी के हाथ में घड़ी मत दो, परन्तु जो घड़ीसाजी की परीक्षा उत्तीर्ण करके आया है उसे तो घडी देख लेने दो। लेखक धर्माचार्यो से यह भी कहता है कि यदि वे लोगों को धर्म के बारे में शिक्षित करते है तो इससे यह भी पता चलता है कि स्वयं धर्माचार्यो को धर्म की कितनी जानकारी है। लेखक, स्वयं को धर्म का ठेकेदार समझने वाले धर्माचार्यों पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि ये लोग दूसरों को धर्म के रहस्य जानने से रोकते है क्योंकि स्वयं उन्हें ही धर्म की पूरी जानकारी नही है। ये धर्माचार्य उस व्यक्ति

की तरह है जो परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरता है, वह बंद हो गई है, न तो उसे चाबी देना आता है, न पुर्जे सुधारना तब भी दूसरों को घड़ी को हाथ नहीं लगाने देता, क्योंकि इससे उसकी अपनी सच्चाई सामने आ जाने का डर है।

अभ्यास कार्य

1 :- ''धर्म का रहस्य जानना वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यो का ही काम है।'' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत है?

2 :- धर्म का रहस्य जानने के लिए लेखक ने 'घड़ी के पुर्जे' का दृष्टांत क्यों दिया है?

3 :- ''अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो।'' - आशय स्पष्ट कीजिए।

4 :- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि - ''हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरते हो, वह बंद हो गई है तुम्हें न चाबी देना आता है न पुर्जे सुधारना, तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते।''

5 :- 'जहाँ धर्म पर कुछ मुट्ठी भर लोगों का एकाधिकार धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है वहीं धर्म का आम आदमी से संबंध उसके विकास एवं विस्तार का द्योतक है।' तर्क सहित व्याख्या कीजिए।

(ग) ढेले चुन लो

- शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' में पोर्शिया अपने वर को बड़ी सुंदर विधि से चुनती है। बबुआ हरिश्चन्द्र के नाटक 'दुर्लभ बंधु' में पुरश्री, पेटियों के द्वारा वर का चुनाव करती है।
- इसी प्रकार वैदिककाल में जीवन-साथी का चुनाव करने के लिए हिन्दुओं में मिट्टी के ढेलों की लाटरी चलती थी। इस लाटरी में विवाह का इच्छुक युवक कन्या के पिता के घर जाता था और उसे गाय भेंट करने के बाद कन्या के सामने कुछ मिट्टी के ढेले रखकर, उनमें से एक ढेला चुनने को कहता था। इन ढेलों को कहाँ से लिया गया था, यह केवल युवक जानता था, कन्या नहीं। यदि कन्या युवक की इच्छानुसार ढेले चुन लेती तो युवक उसे अपना जीवनसाथी बना लेता था।
- ढेलों के चुनाव के विषय में यह माना जाता था कि यदि कन्या वेदी का ढेला उठा ले तो संतान 'वैदिक पंडित', यदि गोबर चुना तो' 'पशुओं का धनी', खेती की मिट्टी छू ली तो 'जमीदांर पुत्र' होगी। मसान की मट्टी को हाथ लगाना बड़ा अशुभ माना जाता था। परन्तु ऐसा नहीं था कि मसान की मिट्टी छूने वाली कन्या का कभी विवाह नहीं होगा। यदि वही कन्या किसी अन्य युवक के सामने कोई अन्य ढेला उठा ले, तो उसका विवाह हो जाता था।
- ढेलों के आधार पर जीवनसाथी का चयन आज के लोगों को कोरा अंधविश्वास प्रतीत हो सकता

है, परन्तु लेखक का मत है कि आज भी लोग ज्योतिष गणना, कुंडली तथा गुणों के मिलान के आधार पर विवाह तय करते है। लेखक के अनुसार यदि मिट्‌टी के ढेलों द्वारा जीवनसाथी का चयन अनुचित है तो ग्रहों-नक्षत्रों की चाल के आधार पर जीवनसाथी चुनना तो और भी अनुचित है।

- लेखक का मानना है कि जो हमारे पास आज है उसी पर निर्भर होना अच्छा है बजाए उस चीज के जिसकी हमें भविष्य में मिलने की उम्मीद है। भविष्य अनिश्चित है। पता नहीं वह वस्तु हमें मिले या ना मिले। इसलिए भविष्य की अपेक्षा वर्तमान पर विश्वास करना उचित होगा। ठीक इसी प्रकार लेखक जीवन साथी के चुनाव के लिए मिट्‌टी के ढेलों को ग्रह नक्षत्रों की काल्पनिक चाल की गणना से अधिक विश्वसनीय मानता है क्योंकि ये ढेले वर द्वारा स्वयं चुने तथा एकत्र किए गए है।

अभ्यास कार्य

1 :- वैदिककाल में हिंदुओं में जीवनसाथी के चुनाव के संबंध में क्या प्रथा प्रचलित थी?

2 :- ''अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथों से चुने हुए मिट्‌टी के डगलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों करोड़ों कोस दूर बैठे बड़े-बड़े मिट्‌टी और आग के ढेलों, मंगल, शनिचर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है?'' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

3 :- जीवनसाथी का चुनाव मिट्‌टी के ढेलों पर छोड़ने से कौन-कौन से फल प्राप्त होती है?

4 :- ''आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से। आँखो देखा ढेला अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस के तेजपिंड से।'' - इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

कच्चा चिट्ठा

- ब्रजमोहन व्यास

पाठ-परिचय -

प्रस्तुत पाठ लेखक ब्रजमोहन व्यास की आत्मकथा 'मेरा कच्चा चिट्ठा' का एक अंश है। व्यास जी की सबसे बड़ी देन इलाहाबाद का विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय है। इस पाठ में उन्होने इस संग्रहालय के लिए बिना किसी विशेष व्यय के, अपने श्रम एवं बौद्धिक कौशल का प्रयोग करते हुए सामग्री एकत्र करने का विवरण प्रस्तुत किया है।

स्मरणीय बिन्दु

- सन् 1936 के लगभग लेखक कौशाम्बी गया था। वहाँ से काम समाप्त कर वह पसोवा चला गया। पसोवा एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ है। प्राचीन काल से वहाँ हर वर्ष जैनों का मेला लगता है। कहते है इसी स्थान पर एक छोटी सी पहाड़ी की गुफा में बुद्धदेव व्यायाम करते थे। यह भी कहा जाता है कि इसी के पास सम्राट अशोक ने एक स्तूप बनवाया था जिसमें बुद्ध के थोड़े से केश और नखखंड रखे गए थे। अब यहाँ स्तूप और व्यायामशाला के चिह्न नहीं है, परन्तु पहाड़ी अवश्य है।

- लेखक संग्रहालय के लिए पुरातत्व महत्व की सामग्री की खोज में लगा रहता था। लेखक कहता है कि वह कहीं भी जाता है तो छूँछे (खाली) हाथ नहीं लौटता है। पसोवा में उसे काफी अच्छी मिट्टी की मूर्तियाँ, सिक्के और मनके प्राप्त हुए। लेखक इस सामग्री को लेकर कौशाम्बी लौट रहा था तो रास्ते में लगभग 20 सेर वजन की शिव की एक चतुर्मुखी मूर्ति पेड़ के नीचे रखी दिखाई दी। लेखक का मन उसे उठाने के लिए ललचाने लगा। लेखक अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए बताता है जैसे किसी बिल्ली ने चांद्रायण का उपवास रखा हो और उसके सामने स्वयं एक चूहा आ जाए तो ऐसी स्थिति में बिल्ली को चूहा खाने के कर्त्तव्य का पालन करना ही पड़ेगा। बिल्ली का कर्त्तव्य है, चूहे को अपना भोजन बनाना। चूहे को सामने देखकर तो वह अपना व्रत तोड़ने को विवश होगी ही, इसमें बिल्ली का क्या दोष है? इसी प्रकार लेखक ने भी अपना कर्त्तव्यपालन करते हुए मूर्ति को उठाकर इक्के पर रख लिया और लाकर नगरपालिका के संग्रहालय में रखवा दिया।

- कुछ समय बाद गाँववालों को पता चला कि चतुर्मुख शिव की मूर्ति अपने स्थान से गायब है। उनका शक सीधा लेखक पर गया क्योंकि लेखक मूर्तियाँ उठाने के लिए पूरे क्षेत्र में प्रख्यात था। लेखक एक कहावत का हवाला देते हुए कहता है कि जब अपना सोना ही खोटा हो तो परखने वाले का क्या दोष? कौशाम्बी मंडल से कोई भी मूर्ति गायब होने पर लोगों का शक सीधा लेखक पर जाता था और 95 प्रतिशत मामलों में उनका संदेह सही भी निकलता था।

- सारे गाँववाले एकत्र होकर लेखक के पास पहुँच गए। उन्होनें मूर्ति लौटाने की प्रार्थना की। उनकी ममता और श्रद्धा देखकर लेखक ने भगवान शंकर की मूर्ति उन्हें लौटा दी।
- एक बार लेखक को कौशाम्बी में एक खेत की मेड़ पर बोधिसत्व की आठ फुट लम्बी मूर्ति जिसका सिर नही था दिखाई पड़ी।
- वह मूर्ति मथुरा के लाल पत्थर की बनी हुई थी। लेखक जब पाँच-छह लोगों के साथ मूर्ति उठाने लगा तो एक बुढ़िया ने उन्हें रोक दिया। लेखक बुढ़िया को दो रूपये देकर मूर्ति को संग्रहालय में ले आया।
- एक बार एक फ्रांसीसी व्यक्ति संग्रहालय देखने आया। बातों ही बातों में पता चला कि वह पुरातत्व वस्तुओं का व्यापारी है। इसी संदर्भ में लेखक कहता है कि कौवा और कोयल दोनों का रंग-रूप एक जैसा होता है। परन्तु बोली से दोनों का अंतर स्पष्ट होता हैं। इसी प्रकार जब फ्रांसीसी व्यक्ति संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुओं का मूल्य आँकने लगा तो पता लगा कि वह एक दर्शक नहीं व्यापारी है। फ्रांसीसी डीलर ने लेखक से कहा उसका संग्रह बहुत कीमती है, यदि उसकी कीमत रूपयों में बता दी जाए तो लेखक का ईमान डगमगा सकता है। लेखक ने उत्तर दिया कि ईमान जैसी कोई वस्तु उसके पास है ही नहीं तो उसके डिगने का सवाल ही नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा-कौड़ी के हो ही नहीं सकता। इस प्रकार लेखक अपने हल्के-फुल्के अंदाज में उस डीलर को यह संकेत दे दिया कि - पहला, उसका संग्रह बिकाऊ नही है। दूसरा, इस संग्रह के लिए उसे कई बार बेईमानी का सहारा भी लेना पड़ा, लेकिन इसमें उसका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं था।
- फ्रांसीसी डीलर ने बोधिसत्व की मूर्ति का मूल्य दस हजार लगाया। लेखक ने मूर्ति देने से इंकार कर दिया। यह मूर्ति बोधिसत्व की अब तक की सबसे प्राचीन मूर्तियों में से थी। इस मूर्ति के पदस्थल पर यह उत्कीर्ण था कि कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्यकाल के दूसरे वर्ष स्थापित की गई थी। इसके बाद लेखक उत्साहपूर्वक मूर्तियों की तलाश में और अधिक तेजी से जुट गया।
- सन् 1938 के लगभग श्री मजूमदार की देखरेख में पुरातत्व विभाग कौशाम्बी में खुदाई कर रहा था। गाँव हजियापुर में खुदाई के दौरान भद्रमथ का एक भारी शिलालेख मिला। श्री मजूमदार उसे उठवा ले जाना चाहते थे। गाँव के जमींदार गुलजार मियाँ उस शिलालेख को संग्रहालय के लिए व्यास जी को देना चाहते थे। परंतु अन्ततः दिल्ली से दीक्षित साहब के हस्तक्षेप के बाद गुलज़ार मियाँ को वह शिलालेख मजूमदार जी को ही सौंपना पड़ा।
- लेखक ने सोचा जिस गाँव में भद्रमथ शिलालेख हो सकता है वहाँ और भी शिलालेख होंगें, इसलिए वह हजियापुर गाँव पहुँचा। वहाँ गुलजार मियाँ के घर के सामने एक कुँआ था। उस पर अठपहल पत्थर की बँडेर थी जिस पर एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक ब्राह्मी अक्षरों में लेख था। गुलजार मियाँ ने तुरन्त लेखक को वह बँडेर सौंप दी। इस प्रकार भद्रमथ के शिलालेख की क्षतिपूर्ति हो गई।

- अपने आधिकारिक दौरों के दौरान भी लेखक संग्रहालय के लिए ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं के संग्रह में लगा रहता था। सामग्री की अधिकता के कारण संग्रहालय के लिए नए भवन का निर्माण किया गया।
- लेखक कच्चे चिट्ठे के समापन से पहले अपने सहयोगियों का आभार प्रकट करता है, जिनके नाम इस प्रकार है - राय बहादुर कामता प्रसाद कक्कड़ (तत्कालीन चेयरमैन) हिज हाइनेस श्री महेन्द्र सिंहजू देव नागौद नरेश, उनके दीवान लाल भार्गवेन्द्र सिंह तथा लेखक का अर्दली जगदेव।

  लेखक स्वयं को निमित मात्र मानता है तथा संग्रहालय का कार्यभार सुयोग्य संरक्षक डॉ॰ सतीशचन्द्र काला के हाथों सौपकर सन्यास ले लेता है।

अभ्यास प्रश्न

1 :- लेखक पसोवा क्यों जाना चाहता था? पसोवा की प्रसिद्धि का क्या कारण था?

2 :- 'मैं कहीं जाता हूँ तो 'छूँछे' हाथ नही लौटता।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

3 :- ''चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्त्तव्य पालन करना ही पड़ता है।'' यह वाक्य किस संदर्भ में कहा गया हैं और क्यों?

4 :- ''अपना सोना खोटा तो परखवैया का कौन दोस?'' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

5 :- लेखक द्वारा प्रयाग संग्रहालय हेतु बोधिसत्व की मूर्ति प्राप्त करने की घटना का वर्णन कीजिए?

6 :- ''ईमान! ऐसी कोई चीज मेरे पास हई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा-कौड़ी के हो ही नही सकता।'' - यह किसने कहा और क्यों कहा?

प्रश्न 8 :- फ्रांसीसी डीलर बोधिसत्व की मूर्ति के लिए दस हजार रूपये देने को क्यों तैयार था?

प्रश्न 9 :- भद्रमथ शिलालेख की क्षतिपूर्ति किस प्रकार हुई? स्पष्ट कीजिए।

सप्रसंग व्याख्या

(क) मै कहीं जाता हूँ .... मूर्तियों के साथ रख दिया।

(ख) उसके थोड़े ही दिन बाद .... काम कर रहा था।

(ग) कौवा भी काला .... हो ही नहीं सकता।

संवदिया

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

कहानी परिचय :-

प्रस्तुत कहानी 'संवदिया' फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा रचित है। इस कहानी में मानवीय संवेदना की गहन अभिव्यक्ति हुई है। 'रेणु' ने विपन्न, बेसहारा, सहनशील बड़ी बहुरिया की असहाय स्थिति, उसकी कोमल भावनाओं, मानसिक यातना तथा पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है।

स्मरणीय बिन्दु -

- हरगोबिन एक संवदिया है। संवदिया अर्थात् संदेशवाहक। बड़ी हवेली से बड़ी बहुरिया का बुलावा आने पर हरगोबिन को आश्चर्य हुआ कि आज जबकि संदेश भेजने के लिए गाँव-गाँव में डाकघर खुल गए हैं, बड़ी बहुरिया ने उसे क्यों बुलवाया है? फिर हरगोबिन ने अंदाजा लगाया कि अवश्य ही कोई गुप्त संदेश ले जाना है।
- बड़ी हवेली पहुँचने पर हरगोबिन अतीत की यादों में खो गया पहले बड़ी हवेली में नौकर नौकरानियों की भीड़ लगी रहती थी। आज बड़ी बहुरिया सूपा में अनाज फटक रही है। समय कितना बदल गया है।
- बड़े भैया की मृत्यु के बाद तीनों भाई परस्पर लड़ने लगे। बड़ी बहू के जेवर-कपड़े तक भाइयों ने आपस में बाँट लिये। लोगों ने जमीन पर कब्जा कर लिया। तीनों भाई गाँव छोड़कर शहर में जा बसे। गाँव में केवल बड़ी बहुरिया रह गई।
- अब बड़ी बहुरिया की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई थी कि वह उधार लेकर अपना खर्च चला रही थी। गाँव की मोदिआइन अपना उधार वसूल करने के लिए बैठी थी और बड़ी बहुरिया को कड़वी बातें सुनाती जा रही थी। बड़ी बहुरिया उसका उधार चुकाने की स्थिति में नही थी।
- मोदिआइन के जाने के बाद बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को बताया कि वह अपनी माँ के पास संवाद भेजना चाहती है। संवाद कहने से पूर्व ही बड़ी बहुरिया रोने लगी। हरगोबिन ने पहली बार बड़ी बहुरिया को इस प्रकार रोते देखा था। उसकी भी आँखे छलछला आई। बड़ी बहुरिया ने फिर दिल को कड़ा करके कहा- 'माँ से कहना, मैं भाई-भाभियों की नौकरी करके पेट

पालूँगी, बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी। लेकिन अब यहाँ नही रह सकूँगी।' यदि माँ मुझे यहाँ से नही ले जाएगी तो मै आत्महत्या कर लूँगी। बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ? किसलिए जीऊँ? किसके लिए जीऊँ?

- ❑ हरगोबिन बड़ी बहुरिया के प्रति उसके देवर-देवरानियों के व्यवहार को जानता था। उसका रोम-रोम कलपने लगा। बड़ी बहुरिया की दुर्दशा देखकर उसका मन बहुत दुःखी हुआ। बड़ी बहुरिया हरगोबिन के जाने के राहखर्च के लिए मात्र पाँच रूपये जुटा पाई थी। हरगोबिन ने यह कहकर राहखर्च लेने से इंकार कर दिया कि राहखर्च का इंतजाम वह स्वयं कर लेगा।

- ❑ संवदिया अर्थात् संदेशवाहक का कार्य प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता। यह प्रतिभा जन्मजात होती है। संवदिया को संवाद का प्रत्येक शब्द याद रखना होता है। उसी सुर और स्वर में तथा ठीक उसी ढंग से संवाद सुनाना आसान काम नही है। परन्तु संवादिया के विषय में गाँववालो की धारणा सही नहीं थी। उनके अनुसार निठल्ला, पेटू और कामचोर व्यक्ति ही संवदिया का काम करता है। ऐसा व्यक्ति जिसके ऊपर कोई पारिवारिक जिम्मेवारी न हो। गाँववालों के अनुसार संवादिया औरतों की मीठी-मीठी बातों में आ जाता है तथा बिना मजदूरी लिए कही भी संवाद पहुँचाने को तैयार हो जाता है।

- ❑ पति की मृत्यु के बाद बड़ी बहुरिया हो गई थी। वह अभाव-ग्रस्त एवं कष्टमय जीवन व्यतीत कर रही थी। हरगोबिन के मन में काँटे की चुभन का अनुभव हो रहा था क्योंकि उसे बड़ी बहुरिया के संवाद का प्रत्येक शब्द उसे याद आ रहा था। उसके संवाद में उसके हृदय की वेदना, उसकी बेबसी, उसका दुःख झलक रहा था। हरगोबिन उसकी पीड़ा को अपने भीतर महसूस कर रहा था। मन की इस चुभन से छुटकारा पाने के लिए उसने अपने सहयात्री से बातचीत करने का उपाय सोचा।

- ❑ लोग संवदिया की बहुत खातिरदारी करते थे, उसे बहुत सम्मान देते थे क्योंकि वह लम्बी यात्रा करके उनके प्रियजनों का संदेश उन तक लाता था। उसे अच्छी तरह भोजन कराया जाता था। भरपेट भोजन करने के बाद संवदिया यात्रा की थकान उतारने के लिए गहरी नींद सोता था। परन्तु बड़ी बहुरिया के मायके पहुँचने पर जब हरगोबिन के सामने कई प्रकार के व्यंजनों से भरी थाली आई, तो उससे खाना खाया नहीं गया। उसे रह-रहकर बड़ी बहुरिया का ध्यान आ रहा था कि वह बथुआ साग उबालकर खा रही होगी। बूढ़ी माँ ने बहुत आग्रह किया पर हरगोबिन से ज्यादा खाया ही नहीं गया। हरगोबिन बड़ी बहुरिया का सही संदेश बूढ़ी माँ को नहीं सुना पाया था, इसी चिंता में रातभर उसे नींद नही आ रही थी। उसके मन में विचारों का संघर्ष चल रहा था।

- ❑ हरगोबिन के मन में बड़ी बहुरिया और अपने गाँव के प्रति बहुत सम्मान था। वह बड़ी बहुरिया को गाँव की लक्ष्मी मानता था। वह सोच रहा था कि यदि गाँव की लक्ष्मी ही गाँव छोड़कर मायके चली जाएगी तो गाँव में क्या रह जाएगा? वह किस मुँह से यह संदेश दे कि बड़ी बहुरिया उसके गाँव में बथुआ साग खाकर गुजारा कर रही है, वह कष्ट में है इसलिए उसे अपने पास

बुला लो। यह संवाद सुनकर लोग उसके गाँव के नाम पर थूकेंगे। अपने गाँव की बदनामी के भय से हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संदेश नहीं सुना सका।

- जलालगढ़ पहुँचकर हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया के पैर पकड़कर, संवाद न सुना पाने के कारण माफी माँगी। उसने कहा कि वह बड़ी बहुरिया के बेटे के समान है। बड़ी बहुरिया उसकी माँ के समान है, पूरे गाँव की माँ के समान है। वह उससे आग्रह करता है कि वह गाँव छोड़कर न जाए तथा साथ ही संकल्प लेता है कि वह अब निठल्ला नहीं बैठा रहेगा। उसे कोई कष्ट नहीं होने देगा तथा उसके सब काम करेगा। बड़ी बहुरिया स्वयं अपने मायके संदेश भेजने के बाद से ही पछता रही थी।

अभ्यास कार्य

1 :- एक अच्छे संवदिया की क्या विशेषताएँ है? गाँववालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

2 :- बड़ी बहुरिया अपने मायके क्या संदेश भेजना चाहती थी?

3 :- बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन ने क्या सोचा?

4 :- बड़ी हवेली पहुँचकर हरगोबिन किन यादों में खो गया?

5 :- गाड़ी पर सवार होने के बाद संवादिया के मन में काँटे की चुभन का अनुभव क्यों हो रहा था? उससे छुटकारा पाने का उसने क्या उपाय सोचा?

6 :- बड़ी बहुरिया के द्वारा अपनी माँ को भेजा गया संदेश, हरगोबिन क्यों नही सुना सका?

7 :- ''संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है।'' -से क्या तात्पर्य है?

8 :- जलालगढ़ पहुँचने के बाद हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया से माफी क्यों माँगी तथा उसके सामने क्या संकल्प लिया?

सप्रसंग व्याख्या :-

(क) आदमी भगवान .... ले जा रहा है वह।

(ख) संवदिया डटकर .... एक कोने में पड़ी रहेगी।

गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात

- भीष्म साहनी

पाठ परिचय

भीष्म साहनी द्वारा रचित संस्मरण 'गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफ़ात' उनकी आत्मकथा 'आज के अतीत' का एक अंश है। सेवाग्राम में गांधी जी, काश्मीर में जवाहरलाल नेहरू तथा फिलिस्तीन में यास्सेर अराफ़ात के साथ बिताए समय का सरस एवं प्रभावी वर्णन किया है तथा देशभक्ति तथा अंतर्राष्ट्रीय मैत्री जैसे मुद्दे भी पाठक के समक्ष रखे है।

(क) गांधी जी

स्मरणीय बिंदु

- लेखक सन् 1938 में सेवाग्राम गया था। लेखक के भाई बलराज साहनी सेवाग्राम में रहते थे। लेखक उनके पास रहने कुछ दिन के लिए गया था। भाई बलराज ने उसे बताया कि गांधी जी प्रात: भ्रमण के लिए प्रतिदिन उसके क्वार्टर के सामने से जाते है। लेखक गांधी जी के साक्षात् दर्शन हेतु बेहद उत्साहित था।
- अगले दिन सुबह की सैर के दौरान वह गांधी जी से मिला। गांधी जी को पहली बार देखकर वह रोमांचित हो उठा। गांधी जी के साथ चलने का उसका पहला अनुभव बहुत अच्छा रहा। इस महान व्यक्ति को देखकर लेखक प्रसन्न हो उठा। उसने गांधी जी को चित्रों में जिस रूप में देखा था, वास्तविक रूप में भी वे बिल्कुल वैसे ही थे। उन्होनें बड़े प्रेम से लेखक से बात की। वे बहुत धीमी आवाज में बोलते थे तथा हमेशा हँसकर बात करते थे।
- लेखक लगभग तीन सप्ताह तक सेवाग्राम रहा। यहाँ उसे अनेक जाने माने व्यक्तित्व देखने को मिले। इनमें से प्रमुख थे - पृथ्वी सिंह आजाद, मीरा बेन, खान अब्दुल गफ्फार खान तथा राजेन्द्र बाबू।
- आश्रम के बाहर सड़क के किनारे एक खोखे में एक पंद्रह वर्षीय बालक जोर-जोर से हाथ-पैर पटक रहा था तथा चिल्ला-चिल्लाकर बापू को पुकार रहा था। बापू आए और बालक का फूला हुआ पेट देखकर उसकी परेशानी समझ गए। उन्होनें उसे उल्टी कराई और जब तक वह उल्टी करता रहा, वह उसकी पीठ पर प्यार से हाथ रखे झुके रहे। इसके बाद उन्होनें उसे खोखे में लेटने को कहा।

(ख) नेहरू जी

स्मरणीय बिंदु

- नेहरू जी कश्मीर यात्रा पर आए थे। यहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में झेलम नदी में, शहर के एक सिरे में दूसरे सिरे तक, नावों में उनकी शोभायात्रा निकाली गई।

- लेखक पंडित जी की देखभाल में अपने फुफेरे भाई का सहायक था। नेहरू जी का कमरा ऊपर वाली मंजिल पर था। लेखक नीचे आकर समाचार पत्र देखने लगा। उसने निर्णय किया कि जब तक नेहरू जी स्वयं समाचार पत्र नहीं माँगेगे वह समाचार पत्र पढ़ता ही रहेगा। नेहरू जी कुछ देर चुपचाप खड़े रहे फिर धीरे से बोले – ''आपने देख लिया हो तो क्या मै भी एक नजर देख सकता हूँ।'' यह सुनकर लेखक शर्मिन्दा हो गया और उसने तुरन्त वह अखबार नेहरू जी के हाथ में दे दिया।

(ग) यास्सेर अराफ़ात

- उन दिनों लेखक अफ्रो-एशियाई लेखक संघ में कार्यकारी महामंत्री के पद पर कार्यरत था। टयूनीसिया की राजधानी ट्यूनिस में लेखक संघ के सम्मेलन में भाग लेने गया हुआ था। टयूनिस में उन दिनों यास्सेर अराफ़ात के नेतृत्व में फिलिस्तीन अस्थायी सरकार काम कर रही थी। लेखक संघ की गतिविधियों में भी फिलिस्तीनी लेखकों, बुद्धिजीवियों तथा अस्थायी सरकार का बड़ा योगदान था।
- ट्यूनिस में लोट्स पत्रिका का संपादकीय कार्यालय था। एक दिन लोटस के तत्कालीन संपादक लेखक के पास आए और उसे सपत्नी सदरमुकाम में आमंत्रित किया।
- जब लेखक अपनी पत्नी के साथ वहाँ पहुँचा तो यास्सेर अरा़फात अपने एक-दो साथियों के साथ बाहर आए और उन्हें आदर सहित अंदर ले गए। बातचीत के दौरान यास्सेर अराफ़ात से फिलिस्तीन के प्रति साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्यायपूर्ण रवैये, भारतीय नेताओं द्वारा की गई उसकी निंदा, फिलिस्तीनी आंदोलन के प्रति भारत की सहानुभूति एवं समर्थन आदि विषयों पर चर्चा हुई।
- बातचीत के दौरान गांधी जी का जिक्र आने पर अराफ़ात बोले – 'वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता है। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए है।' अराफ़ात भारतीय नेताओं के निकट सम्पर्क में रहे थे। गांधी जी की प्रसिद्धि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर थी। उनके सत्य, अंहिसा तथा सत्याग्रह आन्दोलनों तथा उनकी सफलता के कारण उन्हें पूरे विश्व में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। यास्सेर अराफ़ात भी अहिंसक आन्दोलन के द्वारा फिलिस्तीनियों को उनकी मातृभूमि दिलाना चाहते थे। भारतीयों नेताओं का समर्थन एवं सहानुभूति उन्हें प्राप्त थी। इसलिए भारतीय नेताओं विशेषकर गांधी जी के प्रति उनके मन में आदर होना स्वाभाविक था।
- यास्सेर अराफ़ात ने लेखक का बड़ा अतिथि सत्कार किया। वे लेखक को स्वयं फल छील-छीलकर खिला रहे थे। वे उनके लिए शहद की चाय भी बना रहे थे तथा साथ ही शहद की उपयोगिता के विषय में भी बता रहे थे।
- भोजन के समय लेखक जब हाथ धोने गया तो उसे उस समय बड़ी झेंप महसूस हुई जब उन्होंने देखा कि अराफ़ात गुसलखाने के बाहर तौलिया लिए हुए खड़े थे। अराफात का आतिथ्य प्रेम सचमुच ह्दय को छू लेने वाला था।

अभ्यास कार्य

1 :- लेखक सेवाग्राम कब और क्यों गया था?

2 :- गांधी जी के साथ प्रातः भ्रमण का लेखक का अनुभव कैसा रहा?

3 :- लेखक ने सेवाग्राम में किन-किन लोगों के आने का जिक्र किया है?

4 :- रोगी बालक के प्रति गांधी जी का व्यवहार किस प्रकार था?

5 :- काश्मीर में नेहरू जी का स्वागत किस प्रकार किया गया?

6 :- अखबार वाली घटना से नेहरू जी के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषता प्रकट होती है?

7 :- अराफ़ात के आतिथ्य प्रेम की किन्हीं दो घटनाओं का वर्णन कीजिए?

8 :- "वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता है। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए।" इस कथन से अराफ़ात का क्या तात्पर्य है?

लघुकथाएँ

- असगर वजाहत

(क) शेर

कथा-परिचय

'शेर' असगर वजाहत की प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघुकथा है। शेर व्यवस्था का प्रतीक है। जंगल के जानवर सामान्य जनता के प्रतीक है। शेर के पेट में जंगल के सभी जानवर किसी न किसी लालच में समाते जा रहे है। व्यवस्था भी किसी न किसी प्रकार सभी को अपने जाल में फँसा लेती है।

स्मरणीय बिन्दु

- आदमी सत्ता के जाल से बचने के लिए जंगल में जाता है किंतु वहाँ भी सत्ता का प्रतीक शेर विद्यमान है। सभी जानवर किसी न किसी प्रलोभन के कारण शेर के मुख में समाते जा रहे है।
- गधे को यह प्रलोभन दिया गया है कि शेर के मुँह में घास का मैदान है, लोमड़ी को यह बताया गया है कि वहाँ रोजगार का दफ़्तर है तथा कुत्तों से यह कहा गया है कि शेर के मुँह में प्रवेश करना ही निर्वाण का एकमात्र मार्ग है।
- लेखक सच्चाई का पता लगाने के लिए शेर के कार्यालय जाता है। जिस प्रकार सत्ता के पक्षधर सत्ता का गुणगान करते है उसी प्रकार कार्यालय के कर्मचारी शेर की तरफ़दारी करते हैं। लेखक उनसे शेर के मुँह में रोजगार के दफ़्तर होने की असलियत पूछने तथा उसका सबूत माँगने पर वे कहते है कि - 'मानव जीवन में प्रमाण से अधिक विश्वास महत्वपूर्ण है।' लेखक कहता है कि जितने भी ठग और मक्कार लोग होते है वे अपनी बात का कोई प्रमाण नहीं दे सकते क्योंकि वे झूठे होते है। इसलिए वे लोगों से बिना सबूत दिए, केवल ऐसे ही विश्वास करने का आग्रह करते है। जब लोग इन पर विश्वास करने लगते है तो वे उनके विश्वास का अनुचित लाभ उठाते हैं। शेर के आफ़िस के कर्मचारी भी यही कर रहे हैं।
- शेर का मुँह तथा रोजगार के दफ़्तर के बीच यह अन्तर है कि शेर का मुँह तो मात्र एक छलावा है। रोजगार का दफ़्तर रोजगार प्राप्ति का एक माध्यम है। शेर के मुँह में जाने से लोगों को धोखा मिलता है जबकि रोजगार दफ़्तर के माध्यम से लोगों को रोजगार मिलता है।

(ख) पहचान

कथा परिचय

पहचान के माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि राजा को अंधी, बहरी और गूँगी प्रजा पसंद होती है जो बिना कुछ देखे, सुने और बोले राजा के आदेशों का पालन करती रहे।

स्मरणीय बिंदु

- राजा देश शान्ति, उत्पादन और तरक्की का हवाला देते हुए आँखे, कान और मुँह बंद करने के आदेश देता है। परन्तु वास्तव में उसका उद्देश्य था कि लोग राजा के निरंकुश एवं स्वार्थपूर्ण

कार्यो को न देख सकें। वे किसी की बाते सुनकर सत्ता का विरोध न कर सके तथा राजा के विरूद्ध आवाज न उठाएँ।

- यदि जनता राज्य की स्थिति को अनदेखा करती है, उसकी ओर ध्यान नहीं देती तो शासक वर्ग निरंकुश हो जाता है। शासक की व्यक्तिगत उन्नति तो खूब होती है परन्तु राज्य की प्रगति रूक जाती है। यदि राज्य की जनता, राज्य की स्थिति के प्रति सचेत नही रहती है तो शासक वर्ग राज्य के संसाधनों का प्रयोग अपने व्यक्तिगत हित के लिए करता है तथा राज्य की स्थिति में सुधार और विकास में उसकी कोई रूचि नही होती है।
- खैराती, रामू और छिद्दू जागरूक एवं सचेत जनता के प्रतीक है। राजा के आदेश पर आँखे बंद करके वे भी सामान्य जनता के समान हो गए। कुछ समय बाद राज्य की प्रगति देखने की इच्छा से उन्होनें जब आँखे खोली तो उन्हें सर्वत्र सत्ता की शक्ति ही दिखाई दी। उन्हें सामने केवल राजा ही दिखाई दिया, प्रजा वहाँ नही थी। चारो और सत्ता का ही प्रभुत्व था, जनता का कोई अस्तित्व नहीं था। सत्ता इतनी शक्तिशाली हो चुकी थी कि बदलाव की कोई गुंजाइश नही थी।

(ग) चार हाथ

कथा-परिचय

- 'चार हाथ' पूंजीपतियों द्वारा मजदूरों के शोषण से उजागर करती है। पूंजीपति अपने लाभ में वृद्धि के नए-नए तरीके अपनाते है। वह अपने लाभ के लिए मजदूरों का शोषण करता है और कई बार उनके स्वाभिमान को भी ठेस पहुँचाता है। मजदूर अपनी निर्धनता और मजबूरी के कारण विरोध की स्थिति में नहीं होते है। मजदूर विवशता के कारण आधी मज़दूरी में भी काम करने को राजी हो जाते है।

स्मरणीय बिन्दु

- एक मिल मालिक ने अपना मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए, मिल के मजदूरों को चार हाथ लगाने की योजना बनाई। इस काम में वैज्ञानिकों का शोध असफल होने पर उसने यह कार्य स्वयं करने का निश्चय किया।
- मिल मालिक ने कटे हुए हाथ मजदूरों के फिट करने चाहे पर वह असफल रहा। फिर उसने लकड़ी तथा उसके बाद लोहे के हाथ फिट करने चाहे, परन्तु इस प्रयास में बहुत से मजदूर मर गए।
- चार हाथ न लग पाने की स्थिति में मिल मालिक की समझ में यह बात आयी कि मजदूरों का वेतन आधा कर दो और दुगने मजदूर काम पर रख लो तो मुनाफा वैसे ही दुगुना हो जाएगा। यह कार्य भी मजदूरों के चार हाथ लगाने जैसा ही होगा।

(घ) साझा

कथा-परिचय

उद्योगों पर कब्जा जमाने के बाद पूँजीपतियों की नजर किसानों की जमीन और उत्पाद पर जमी है। गाँव का प्रभुत्वशाली वर्ग भी पूँजीपत्तियों का सहयोग करता है। वह किसान को साझा खेती करने का झाँसा देता है और उसकी सारी फसल हड़प लेता है।

स्मरणीय बिन्दु

- 'हाथी' जो कि पूँजीपति वर्ग का प्रतीक है, उसने किसान के समक्ष साझे की खेती का प्रस्ताव रखा। किसान ने इंकार कर दिया क्योंकि साझे की खेती के विषय में उसके कटु अनुभव थे। साझे की खेती से उसका भरण-पोषण नहीं होता है, अकेले खेती करने में उसको डर लगता है इसलिए अब वह खेती करना नहीं चाहता है।
- हाथी अपनी बातों में फँसाकर उसे खेती के लिए राजी कर लिया तथा फसल के बँटवारे के समय किसान की सारी फसल हड़प ली।

अभ्यास कार्य

1 :- 'शेर' कहानी में 'शेर' तथा 'जंगल के जानवर' किस-2 के प्रतीक है?

2 :- लोमड़ी स्वेच्छा से शेर के मुँह में क्यों जा रही थी?

3 :- शेर के मुँह तथा रोजगार के दफ़्तर के बीच क्या अंतर है?

4 :- 'प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास।' - कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

5 :- राजा ने कौन-2 से हुक्म निकाले? ऐसे हुक्म निकालने के क्या कारण थे?

6 :- यदि जनता राज्य की स्थिति की ओर से आँखे बंद कर ले तो उसका राज्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

7 :- खैराती, रामू और छिद्दू ने जब आँखे खोली तो उन्हें सामने राजा ही क्यों दिखाई दिया?

8 :- मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए मिल मालिक ने क्या उपाय सोचा?

9 :- हाथी तथा किसान के बीच फसल का बँटवारा किस प्रकार हुआ?

10 :- किसान साझे की खेती क्यों नही करना चाहता था?

जहाँ कोई वापसी नहीं

- निर्मल वर्मा

पाठ परिचय

'जहां कोई वापसी नहीं 'यात्रा वृतांत निर्मल वर्मा द्वारा रचित 'धुंध में उठती धुन' संग्रह से लिया गया है। लेखक का मत है कि अंधाधुंध विकास तथा पर्यावरण संबंधी सुरक्षा के बीच संतुलन होना चाहिए अन्यथा विकास हमेशा विस्थापन तथा पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं को जन्म देता रहेगा। औद्योगिक विकास के इस दौर में प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट होता को जन्म देता रहेगा। औद्योगिक विकास के इस दौर में प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट होता रहेगा तथा मनुष्य अपनी संस्कृति तथा परिवेश से विस्थापित होकर जीने को मजबूर होगा।

स्मरणीय बिंदु

- लेखक सन् 1983 में दिल्ली की 'लोकायन' संस्था की ओर से सिंगरौली के नवा गाँव गए थे जहाँ लगभग अठारह छोटे-छोटे गाँव थे। यही एक गाँव या 'अमझर'। जहाँ आम झरते थे (अत्याधिक पैदावर) पर जब से अमरौली प्रोजेक्ट के अन्तर्गत यह घोषणा हुई कि कई गाँव उजाड़ दिए जाऐगें तब से न जाने क्यों आम के पेड़ सूखने लगे। लेखक को लगा कि उसे आज विस्थापन के विरोध में प्रकृति का (पेड़ो का) सामूहिक मूक सत्याग्रह देखने का अनुभव हुआ। लेखक को लगा सत्य ही है कि आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेगा? लेखक ने टिहरी गढ़वाल में पेड़ों की रक्षा के लिए मनुष्य का सत्याग्रह तो सुना था पर व्यक्ति के लिए पेड़ों के सत्याग्रह को पहली बार महसूस किया था।
- लेखक के लिए यह भी अनूठा अनुभव किया था कि स्वच्छ, पवित्र और प्राकृतिक खुले वातावरण में जिन्दगी बिताने वाले लोग किस प्रकार विस्थापन के पश्चात् अनाथ, अपने मूल आधार से कटे होने के अहसास के साथ दम घुटती, भयावह बस्ती में रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं।
- लेखक ने उन्हें आधुनिक भारत का नया शरणार्थी माना है जिन्हें औद्योगिक विकास के नाम पर हमेशा-हमेशा के लिए उनके मूल स्थान से हटा दिया गया। प्राकृतिक आपदा के कारण जिन लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ता है वे कुछ अरसे बाद आफ़त टलते ही दोबारा अपने जाने-पहचाने परिवेश में लौट भी आते हैं, किंतु इतिहास जब विकास और प्रगति के नाम पर लोगों को विस्थापित करता है, तो वे फिर अपने घर वापस नही लौट सकते। औद्योगीकरण की

आँधीं में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल हमेशा के लिए समाप्त हो जाते है। सिंगरौली की उर्वरा भूमि और समृद्ध जंगलों को देखकर लेखक को अहसास होता है कि विकास के नाम पर किस प्रकार एक भरे पूरे ग्रामीण अंचल को कितनी नासमझी और निर्दयता से उजाड़ा जा सकता है।

- कभी-कभी इलाके की संपदा ही उसका अभिशाप बन जाती है। अपनी अपार खनिज संपदा के अभिशाप के कारण 'बैकुंठ और कालापानी' के नाम से सुशोभित सिंगरौली गाँव औद्योगीकरण की भेंट चढ़ गया।
- लेखक को लगता था कि औद्योगीकरण का चक्का, जो स्वतंत्रता के बाद चलाया गया, उसे रोका जा सकता था, उसके विकल्प तलाशे जा सकते थे, पश्चिम जिस विकल्प को खो चुका था भारत में उसकी संभावनाएँ खुली थी पर पश्चिमी देशों का अंधा अनुकरण करने के कारण सारी संभावनाएँ हाथ से निकल गई।
- भारत की सांस्कृतिक विरासत यूरोप की तरह म्यूजियम्स और संग्रहालयों में जमा नहीं थी अपितु आदमी और प्राकृतिक के अटूट रिश्तों में जीवित थी जो उसे पूरे परिवेश के साथ जोड़ती थी।
- यूरोप और भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ बिल्कुल भिन्न है। यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है, भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच पारंपरिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है।
- लेखक के अनुसार स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी ट्रैजेडी यह है कि शासक वर्ग ने औद्योगीकरण की योजनाएँ बनाते समय पश्चिमी देशों को अपना आदर्श माना, प्रकृति मनुष्य और संस्कृति के बीच एक नाजुक संतुलन किस प्रकार बचाया जा सकता है इसे सर्वथा भूल गए। हम भारतीय मर्यादाओं को आधार बनाकर भी भारतीय औद्योगिक विकास का स्वरूप निर्धारित कर सकते थे तथा विस्थापन और पर्यावरण संबंधित समस्याओं से बच सकते थे।

अभ्यास कार्य

1 :- अमझर से आप क्या समझते है? अमझर गाँव में सूनापन क्यों है?

2 :- आधुनिक भारत के 'नए शरणार्थी' किन्हें कहा गया है?

3 :- प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है?

4 :- लेखक के अनुसार स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रेजेडी' क्या है?

5 :- औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे?

सप्रसंग व्याख्या

(1) इन्हीं गाँवों में एक .... सिंगरौली में हुआ।

(2) ये लोग आधुनिक .... नष्ट हो जाते हैं।

(3) शायद पैंतीस वर्ष .... मौजूद रहता था।

(4) यूरोप में पर्यावरण .... ऐसा नहीं जान पड़ता।

यथास्मै रोचते विश्वम्

– रामविलास शर्मा

पाठ परिचय

लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से की है। उसने कवि को प्रजापति के समान सृष्टा सिद्ध किया है। लेखक ने प्रजापति का दर्जा देते हुए कवि को उसके कार्यो के प्रति सचेत किया है। साहित्य समाज का दर्पण मात्र नही है। कवि का कार्य समाज के यथार्थ जीवन को मात्र प्रतिबिंबित करना नही है। कवि अपनी रूचि के अनुसार अपनी रचनाओं में संसार की रचना करता है। प्रजापति द्वारा निर्मित सृष्टि से असंतुष्ट होकर कवि नए समाज का निर्माण करता है। यह कवि का जन्म सिद्ध अधिकार है।

स्मरणीय बिन्दु

- ❑ कवि की सृष्टि निराधार नही होती। वह अपने सारे रंग आकार और रेखाएँ चारों और बिखरे यथार्थ जीवन से ही ग्रहण करता है। अपनी साहित्य रचना के लिए सामग्री कवि अपने चारों और के परिवेश से ही ग्रहण करता है। उज्ज्वल चरित्र को उज्ज्वल और अधिक प्रभावशाली दिखाने के लिए लेखक यथार्थ जीवन से दुश्चरित्र भी चुनता है। रावण के होने से ही राम की महत्ता है। कवि सद्गुण सम्पन्न पात्रों साथ दुर्गणयुक्त पात्रों का भी वर्णन करता है।
- ❑ बाल्मीकि ने दुर्लभ गुणों से युक्त राम के चरित्र का वर्णन किया था। दुर्लभ गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे कवि का एक ही उद्देश्य होता है– समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करना, जिससें लोग प्रेरणा ले सकें।
- ❑ प्रजापति रूपी कवि यथार्थवादी होता है। वह समाज में लोगों के सुख-दुख, आशा-निराशा दोनों पक्षों को सुनता है, उसे महसूस करता है तथा उसे अपने साहित्य में अंकित भी करता है। उसकी रचनाओं में वर्तमान समाज का ठोस आधार होता है परन्तु उसका ध्यान भविष्य के नव-निर्माण पर लगा होता है। साहित्य थके हुए व्यक्ति के लिए विश्रांति का माध्यम ही नहीं है बल्कि उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है।
- ❑ यदि ब्रह्मा द्वारा बनाए गए समाज में मानव सम्बन्ध कवि की रूचि एवं आदर्शो के अनुरूप

होते तो उसे अपनी रचनाओं में एक नया संसार रचने की आवश्यकता ही नहीं होती। कवि के असंतोष की जड़ ये मानव संबंध ही है। साहित्य की रचना का मूल ये मानव संबंध ही है। कवि के मन-मस्तिष्क में मानव संबंधो की भावना इतनी प्रबल होती है कि वह अपनी रचनाओं में ईश्वर को भी मानवीय रूप में चित्रित करता है।

- ऐसे समय में जब अधिकांश लोगों का जीवन समाज की रूढ़ियों के बंधन में जकड़ा हुआ हो, वे इन बंधनों से दुखी हो तथा मुक्ति के प्रयास कर रहे हो तब कवि का प्रजापति रूप मुखरित हो उठता है। कवि मानव रूपी पक्षी की अशांत आवाज़ को स्वर देता है। वह स्वतंत्रता के गीत गाकर जनता में शासक वर्ग के प्रति आक्रोश भरता है। वह स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित कर उस पक्षी के परों में नई शक्ति भर देता है। इसे भय से मुक्त होने तथा स्वतंत्रता के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

- यह जीवन संघर्ष का मैदान है। इसमें व्यक्ति को निरन्तर संघर्षशील रहना पड़ता है। जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने पाञ्चजन्य नामक शंख बजाकर अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरित किया था, उसी प्रकार साहित्यकार लोगों को कर्मक्षेत्र में संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। वह लोगों में उदासीनता नहीं, उत्साह का स्वर बुलंद करता है। वह इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं कि मनुष्य अत्याचार सहते हुए, कष्ट सहते हुए, भाग्य के भरोसे रहे। साहित्य तो ऐसी प्रेरणा देने वालो की निंदा करता है, उन्हें हतोत्साहित करता है।

- आज भी मानवीय-संबंधों की दृष्टि से भारत पराधीन है। भारतीय जनमानस स्वतंत्र होने के लिए व्याकुल है इसके लिए वह सतत् प्रयास कर रहा है। धिक्कार है उन साहित्यकारों को जो उन्हें रूढ़ियों से मुक्त नहीं करता। वे साहित्य में तो मानवमुक्ति के गीत गाते है किन्तु व्यवहार में भारतीय जनता को गुलामी का पाठ पढ़ाते है। ऐसे साहित्यकारों को धिक्कार है जो भारतभूमि से उत्पन्न होकर भी उसका अहित कर रहे है।

- भारतीय लोगों को गुलामी का पाठ पढ़ाने वाले ये साहित्यकार दूरदर्शी नहीं हैं। जिन साहित्यकारों को भारतभूमि से प्यार है, वे साहित्य के युग परिवर्तन की भूमिका से अवगत हैं, वे साहित्य के माध्यम से जनता का सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

अभ्यास कार्य

1. :- लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से क्यों की है?

2. :- 'साहित्य समाज का दर्पण है।' इस प्रचलित धारणा के विरोध में लेखक ने क्या तर्क दिए है।

3. :- दुर्लभ गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे कवि का क्या उद्देश्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?

4. :- 'साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नही है वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है।' स्पष्ट कीजिए।

5. :- 'मानव संबंधों से परे साहित्य नहीं है।' - कथन की समीक्षा कीजिए।

6. :- पंद्रहवी-सोलहवीं सदी में हिंदी साहित्य ने मानव जीवन के विकास में क्या भूमिका निभाई?

7. :- साहित्य के 'पाञ्चजन्य' से लेखक का क्या तात्पर्य है? साहित्य का पाञ्चजन्य मनुष्य को क्या प्रेरणा देता है?

8. :- साहित्यकार के लिए सृष्टा और दृष्टा होना अत्यन्त अनिवार्य है। क्यों और कैसे?

9. :- 'कवि-पुरोहित' के रूप में साहित्यकार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

सप्रसंग व्याख्या

1. कवि की यह सृष्टि निराधार .... होने का अवसर ही न आए।
2. साहित्य का पांचजन्य समर भूमि .... जैसे सूर्य के सामने अंधकार।
3. अभी भी मानव-संबंधों .... पराधीनता और पराभव का पाठ पढ़ाते है।

दूसरा देवदास

– ममता कालिया

पाठ-परिचय

'दूसरा देवदास' कहानी ममता कालिया द्वारा रचित युवामन की संवेदना, भावना, विचारगत उथल-पुथल को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। यह कहानी युवा हृदय में पहली आकस्मिक मुलाकात की हलचल, कल्पना और रूमानियत का उदाहरण है। इस कहानी में लेखिका ने स्पष्ट किया है कि प्रेम के लिए किसी निश्चित व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है। वह कभी भी, कहीं भी, किसी भी समय हो सकता है। लेखिका ने प्रेम को पवित्र और स्थायी स्वरूप का चित्रण किया है।

स्मरणीय बिन्दु

- संध्या के समय हर की पौड़ी पर होने वाली गंगाजी की आरती का दृश्य अत्यंत मनोहरी होता है। हर की पौड़ी पर भक्तों की भीड़ जमा होती है। फूलों के दोने इस समय एक रूपये के बदले दो रूपये के हो जाते है। भक्तों को इससे कोई शिकायत नहीं होती। आरती के समय सहस्र दीप जल उठते है। पंडित अपने आसान से उठ खड़े हो जाते है और हाथ में अंगोछा लपेट कर पांच मंजिली नीलाजंलि को पकड़ते है और आरती शुरू होती है। घंटे-घड़ियाल बजते है। लोग अपनी मनौतियों के दिये लिए हुए फूलों की छोटी-छोटी किश्तियाँ गंगा की लहरों पर तैराते है। गंगा पुत्र दोने में रखा पैसा मुँह से उठा लेता है।
- गंगापुत्र उन गोताखोरों को कहते हैं जो गंगा घाट पर हर समय तैनात रहते है। यदि कोई गंगा में डूबने लगता है तो ये उसे बचा लेते है। इनकी जीविका का साधन लोगों द्वारा अर्पित किया जाने वाला पैसा है। लोग फूल के दोने में पैसे भी रखते है। लोग मनौतियों के साथ अपना दोना गंगा की लहरों पर तैरा देता है। तब गंगापुत्र दोने में से पैसे उठाकर अपने मुँह में रख लेता है। उनका पूरा जीवन गंगा घाट पर ही बीत जाता है। गंगा मैया ही उनका जीवन और आजीविका है। वह बीस-बीस चक्कर लगाकर मुँह भर रेजगारी बटोरता है और बीवी या बहन रेजगारी बेचकर नोट कमाती है।
- संभव यहाँ अपनी नानी के पास आया था। उसने इसी साल एम. ए. पूरा किया था तथा सिविल सर्विसेज प्रतियोगिताओं में बैठने वाला था। माता-पिता की आज्ञानुसार वह हरिद्वार गंगा के दर्शन

करने आया था ताकि बेखटके सिविल सेवा में चुन लिया जाए। बहुत देर तक स्नान करने के बाद वह पानी से बाहर आया और पंडे ने उसके माथे पर चंदन तिलक लगाया। जब पुजारी उसकी कलाई-पर कलावा बाँध रहा था तो उसी क्षण एक और दुबली नाजुक सी कलाई पुजारी की तरफ बढ़ आई। पुजारी ने उस पर कलावा बाँध दिया। उस हाथ ने थाली में सवा पाँच रूपए रखे। यह एक लड़की का हाथ था। लड़की को देखकर संभव उसकी और आकर्षित हो गया। जब लड़की ने यह कहा कि अब तो आरती हो चुकी। अब हम कल आरती की बेला आएँगे। तब पुजारी ने लड़की के 'हम' को युगल अर्थ में लेकर आर्शीवाद दिया कि सुखी रहो, फूलों-फलों, जब भी आओ, साथ ही आना, गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।' यह सुनकर लड़की और लड़के को अटपटा लगा। लड़की छिटककर दूर खड़ी हो गई। इसका कारण यह था कि लड़की और लड़का एक दूसरे से अनजान थे और पुजारी ने गलत समझ लिया था कि ये दोनों पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका हैं। पुजारी की इस गलतफहमी के कारण ही वे दोनों एक दूसरे से छिटककर दूर खड़े हो गए।

- उस अनजान लड़की के साथ छोटी सी मुलाकात ने संभव के मन का चैन छीन लिया। वह खाना-पीना तक भूल गया। संभव उन गलियों की ओर चल दिया जिधर वह लड़की गई थी। संभव उसे अपने मन की बात बता देना चाहता था। उसे रात को ठीक से नींद तक नहीं आई। उसकी आँखो में उस लड़की की छवि बसी हुई थी। वह उन प्रश्नों के बारे में सोच रहा था जिन्हें वह उसके मिलने पर करने वाला था। संभव के जीवन में आने वाली यह पहली लड़की थी।
- संभव ने जब मंसा देवी के मंदिर में प्रवेश किया था तब सभी लोग अपनी-अपनी मनोकामना पूरी करने हेतु लाल-पीला धागा लेकर गिठान बाँध रहे थे। संभव ने भी धागा लेकर गिठान बाँधी थी और उसे बाँधते समय पारो के विषय में सोचा था कि कितना अच्छा हो कि उसका मेल पारो से हो जाए। अभी कुछ क्षण ही बीते थे कि उसकी भेंट पारों से हो गई। उसने जैसा चाहा था वैसा ही हुआ।
- पारो के मन की दशा बड़ी विचित्र हो रही थी। वह सोच रही थी कि यह कैसा संयोग है, इतनी भीड़ होने पर भी जिससे मुलाकात हुई थी, उससे आज भी मुलाकात हो गई। पारों का संभव से इस प्रकार मिलना उसके अंदर गुदगुदी सी पैदा कर रहा था। पारो को लगता है कि यह मनोकामना की गाँठ भी कितनी अनूठी है, कितनी आश्चर्यजनक है! अभी बाँधो अभी फल की प्राप्ति कर लो। वह फूली न समाती थी। वह स्वयं को भाग्यशाली समझ रही थी क्योंकि देवी माँ ने उसकी मनोकामना इतनी जल्दी पूरी कर दी थी।
- संभव मन मे पारो से मिलन की मनोकामना पाले हुए था। उसे इस मिलन की आशा तो थी, पर उसकी मनोकामना इतनी जल्दी पूरी होगी, यह निश्चित नहीं था। जब उसने अचानक प्रकट हुई पारो को देखा तो उसने यही सोचा – 'हे ईश्वर! मैंने कब सोचा था कि मनोकामनाा का मौन उद्‌गार इतनी शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा। यह शुभ परिणाम बहुत ही शीघ्र दिखाई दे भी गया। पारो से उसकी भेंट किसी चमत्कार से कम नहीं थी। उसे उम्मीद से बढ़कर मनोकामना

का फल जब प्राप्त हुआ।

- 'दूसरा देवदास' शीर्षक पात्र पर आधारित है। देवदास प्रेम-कहानी का प्रमुख अर्थात् नायक है। यद्यपि इस कहानी में उसका नाम संभव है, पर पारों नाम दोनों में है।

वैसे यहाँ देवदास शब्द को प्रतीकात्मक रूप में लिया। प्राय: देवदास उसे कहा जाता है जो अपनी प्रेमिका को पागलपन की हद तक प्यार करता है। संभव भी पारों को पाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। अत: इस कहानी का शीर्षक दूसरा देवदास ठीक ही हैं। यह सार्थक है।

अभ्यास कार्य

1 :- पाठ के आधार पर हर की पौड़ी पर होने वाली गंगा जी की आरती या भावपूर्ण वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

2 :- 'गंगा पुत्र के लिए गंगा मैया ही जीविका और जीवन है।' इस कथन के आधार पर गंगा पुत्रों के जीवन परिवेश की चर्चा कीजिए?

3 :- पुजारी ने लड़की के 'हम' को युगल अर्थ में लेकर क्या आर्शीवाद दिया और पुजारी द्वारा आर्शीवाद देने के बाद लड़के और लड़की को अटपटा क्यों लगा?

4 :- उस छोटी-सी मुलाकात ने संभव के मन में जो उथल-पुथल उत्पन्न कर दी, उसका सूक्ष्म विवेचन कीजिए?

5 :- 'पारो बुआ, पारो बुआ इनका नाम है ..... उसे भी मनोकामना का पीला लाल धागा और उसमें पड़ी गिठान का मधुर स्मरण हो आया', कथन के आधार पर कहानी के संकेतपूर्ण आशय पर टिप्पणी लिखिए?

6 :- मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है :- कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

7 :- दूसरा देवदास कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए?

8 :- "हे ईश्वर! उसने कब सोचा था कि मनोकामना का मौन उद्गार इतनी शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा।" स्पष्ट कीजिए?

सप्रसंग व्याख्या

1. आरती से पहले स्नान!.................... गोधूलि बेला है।
2. अभी तक उसके जीवन .... पुजारी के देवालय पर सीधी आँख पड़ें।
3. रोपवे के नाम में कोई धर्माडंबर .... सभी काम बड़ी तत्परता से हो रहे थे।

कुटज

– हजारी प्रसाद द्विवेदी

पाठ-परिचय

कुटज हिमालय पर्वत की ऊँचाई पर सूखी शिलाओं के बीच उगने वाला एक जंगली फूल है, इसी फूल की प्रकृति पर यह निबंध कुटज लिखा गया है। कुटज में न विशेष सौंदर्य है, न सुगंध फिर भी लेखक ने उसमें मानव के लिए एक संदेश पाया है। कुटज में अपराजेय जीवन शक्ति है, स्वावलंबन है, आत्मविश्वास है और विषम परिस्थितियों में भी शान के साथ जीने की क्षमता। वह समान भाव से सभी परिस्थितियों को स्वीकारता है।

स्मरणीय बिन्दु

- पर्वत शोभा निकेतन माने गए है। हिमालय को 'पृथ्वी का मानदंड' कहा जाता है। इसे शिवालिक श्रृंखला भी कहते है। 'शिवालिक' का अर्थ है शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा । यहाँ खड़े पेड़-पौधों की जड़ें काफी गहरी, पैठी रहती है। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते है।

- शिवालिक की सूखी नीरस पहाड़ियों पर वृक्ष अलमस्त हैं, किसी का नाम, कुल और शील का नहीं पता। ये अनादिकाल से है। इन्हीं में से एक छोटा सा बहुत ही ठिगना पेड़ है कुटज का। अजीब सी अदा है, मुस्कराता सा जान पड़ता है। लेखक को उसका नाम याद नहीं आता उसे लगता था कि नाम में क्या रखा है। नाम की जरूरत हो तो सौ दिए जा सकते हैं। पर मन नहीं मानता। नाम इसलिए बड़ा नही है कि वह नाम है। वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। नाम उस पद को कहते है जिस पर समाज की मुहर लगी होती है।

- कुटज को गाढ़े का साथी कहा गया है क्योंकि कुटज कठिनाई के समय में काम आया। कालिदास जब रामगिरि पहुँचे तब उन्होनें इसी कुटज का अर्ध्य देकर मेघ की अभ्यर्थना की थी। उस समय उन्हें कोई और फूल नहीं मिला। तब कुटज ने उनके संतृप्त चित्त को सहारा दिया था।

- कुटज का क्या अर्थ है? कुटज अर्थात् जो कुट से पैदा हुआ हो। 'कुट' घड़े को भी कहते है, और घर को भी कहते है। 'कुट' अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण अगस्त्य मुनि भी

'कुटज' कहे जाते है। एक जरा गलत ढंग की दासी 'कुटनी' कही जाती है। संस्कृत में उसे 'कुट्टनी' कह दिया जाता है।

- कुटज का पौधा लहराता रहता है। वह नाम और रूप दोनों से अपनी अपराजेय जीवनी-शक्ति की घोषणा करता है। वह धधकती लू में भी हरा-भरा बना रहता है। वह कठोर पत्थर के बीच रूके अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना रहता है। वह सूने गिरि कांतार में भी मस्त बना रहता है। वह कठोर पाषाण को भेदकर पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करता है। वह उल्लास में झूमता है। यही उसकी जीवनी शक्ति है। पत्थरों और चट्टानों के बीच उगते हुए अपने जीवन को किसी उद्देश्य के लिए न्यौछावर करने वाला कुटज का यह पौधा दुनिया को संदेश देता है कि यदि जीना चाहते हो तो कठिनाइयों से मत घबराओं और संघर्ष करते रहो। विषम परिस्थितियों में जीना सीखो। आत्मसम्मान के साथ जियो, शान के साथ जिओ। जहाँ से भी संभव हो अपना भोग्य प्राप्त करो।

- कुटज के जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि हर हाल में जिओ और मस्ती के साथ जिओ। अपना आत्मसम्मान बनाए रखो। परोपकार के लिए जिओ। किसी की चापलूसी मत करो। मन पर नियंत्रण रखो। हमें जीवन में किसी भी कीमत पर हार नहीं माननी चाहिए। कुटज स्वार्थ के दायरे से बिल्कुल बाहर है। हमें भी स्वार्थी नही होना चाहिए।

- लेखक ने एक स्थान पर प्रश्न किया है कि कुटज क्या केवल जी रहा है? यह प्रश्न उठाकर लेखक ने मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है मानव जरा भी मुसीबत आने पर दूसरों के द्वार पर भीख माँगने चला जाता है। कुटज का पौंधा दूसरों का द्वार भीख माँगने नहीं जाता। वह बड़ी शान से अपने स्थान पर खड़ा रहता है। सामान्य मानव शक्तिशाली के सामने घुटने टेक देता है। उसमें आत्म विश्वास की कमी है। आज का मानव परमार्थ से दूर हटता चला जा रहा है।

- लेखक का कहना है कि स्वार्थ से बढ़कर जिजीविषा से भी प्रचंड शक्ति अवश्य है और वह शक्ति है 'आत्मा'। आत्मा परमात्मा का अंश है और वह सभी में व्याप्त है। व्यक्ति की आत्मा केवल उसी तक सीमित नही है, वह व्यापक है। याज्ञवल्कय आत्मन: का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे व्यक्ति को तब तक पूर्ण सुख का आनन्द नही मिलता जब तक मनुष्य में, अपने में सब और सब में आप - इस प्रकार समष्टि बुद्धि नही आती। अपने आपको दलित द्राक्षा की भांति निचोड़कर जब तक सर्व के लिए न्यौछावर नही कर दिया जाता तब तक 'स्वार्थ' खंड-सत्य है। वह मोह को बढ़ावा देता है। ऐसा व्यक्ति दयनीय कृपण बन जाता है। वह तो स्वार्थ भी नही समझ पाता, परमार्थ तो दूर की बात है।

- 'कुटज' पाठ में बताया गया है कि दुख और सुख तो मन के विकल्प है। वास्तव में सुखी व्यक्ति वह है, जिसका मन वश में है और दुखी वह है जिसका मन परवश है। यहाँ परवश होने का अर्थ है -दूसरों की खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता करना, जी हजूरी करना। इसीलिए सुख और दुख की चिंता किए बिना हमें जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए।

अभ्यास कार्य

1. :- कुटज को गाढ़े का साथी क्यों कहा जाता है?

2. :- 'नाम' क्यों बड़ा है? लेखक के विचार अपने शब्दों में लिखिए?

3. :- 'कुट' 'कुटज' और 'कुटनी' शब्दों का विश्लेषण कर उनमें आपसी संबंध स्थापित कीजिए।

4. :- कुटज किस प्रकार अपनी अपराजेय जीवनी-शक्ति की घोषणा करता है?

5. :- 'कुटज' हम सभी को क्या उपदेश देता है? टिप्पणी कीजिए।

6. :- कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?

7. :- कुटज क्या केवल जी रहा है - लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

8. :- लेखक क्यों मानता है कि स्वार्थ से भी बढ़कर जिजीविषा से भी प्रचंड कोई न कोई शक्ति अवश्य है? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

9. :- 'कुटज' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि दुख और सुख तो मन के विकल्प है।

10. :- पाठ के आधार पर कुटज की विशेषताएँ बताइए।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

क. कभी कभी जो लोग ऊपर से .... अपना भोग्य खींच लाते है।

ख. जीना भी एक कला है .... परमार्थ नहीं है - है केवल प्रचंड स्वार्थ

ग. दुख और सुख तो मन के विकल्प .... उसे वश में कर सका हूँ।

अन्तरा - काव्य खण्ड (आधुनिक)

जय शंकर प्रसाद

(क) देवसेना का गीत

आह वेदना .... लाज गंवाई।

मूल भाव :- 'देवसेना की गीत' प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक से लिया गया है। मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन देवसेना स्कंदगुप्त के प्रेम निराश होकर जीवन भर भ्रम में जीती रही तथा विषम परिस्थितियों में संघर्ष करती रही। इस गीत के माध्यम से वह अपने अनुभवों में अर्जित वेदनामय क्षणों को याद कर जीवन के भावी सुख, आशा और अभिलाषा से विदा ले रही है।

व्याख्या बिन्दु :- देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन है। बंधुवर्मा की वीरगति के उपरांत देवसेना राष्ट्रसेवा का व्रत लेती है। वह यौवनकाल में स्कंदगुप्त को पाने की चाह रखती थी, किंतु स्कंदगुप्त मालवा के धनकुबेर की कन्या विजया की और आकर्षित थे। देवसेना जीवन में नितांत अकेली हो जाती है और गाना गाकर भीख माँगती है। जीवन के अंतिम पड़ाव पर भी देवसेना को वेदना ही मिली। स्कंदगुप्त को पाने में असफल होने के कारण निराशा भरा जीवन व्यतीत किया। यौवन क्रियाकलापों को वह भ्रमवश किए गए कर्म मानती है, इसलिए उसकी आँखो से निरंतर आँसुओं की धारा बह रही है। यौवनकाल में स्कंदगुप्त को न पाकर, अपने प्रेम को वह भूल चुकी है। स्कंदगुप्त के प्रणयनिवेदन से वह स्वप्न देखने लगती है। उसे लगता है कि परिश्रम से उत्पन्न थकान के कारण जैसे कोई यात्री सघन वन के वृक्षों की छाया में नींद से भरा हुआ स्वप्न देख रहा हो और कोई उसके कान में अर्धरात्रि में गाए जाने वाला विहाग राग सुना रहा हो। स्कंदगुप्त के प्रणय-निवेदन से उसे लगता है कि उसने अपने समस्त श्रमफल को खो दिया है। उसकी प्रेमरूपी पूँजी कहीं खो गई है। वह स्कंद गुप्त के निवेदन को ठुकरा देती है। वह जानती है कि अच्छे भविष्य की कल्पना व्यर्थ है, फिर भी उसके हृदय में मधुर कल्पनाएँ जन्म लेती है। वह भावी सुख की आशा करती है, इसलिए अपनी आशा का बावली कहती है। वह अपनी दुर्बलताओं को जानती है और यह भी कि उसकी हार निश्चित है, फिर भी वह प्रलय से मुकाबला करती है। विषम परिस्थितियों से संघर्ष करती है और पराजय स्वीकार नहीं करती। अंत में देवसेना संसार को संबोधित करती हुई कहती है कि तुम अपनी धरोहर (प्रेम) वापस ले लो, वह इसे संभाल नहीं पायेगी। उसका जीवन करूणा और वेदना से भर गया है। वह मन ही मन लज्जित है।

शिल्प सौन्दर्य :- खड़ी बोली तत्सम शब्दावली, अनुप्रास अंलकार, उपमा (आँसू से), रूपक अंलकार

– (जीवन-रथ), पुनरूक्ति प्रकाश – (छलछल, हा-हा), मानवीकरण – ' प्रलय चल रहा अपने पथ पर विरोधाभास – हारी होड़। मुक्त छंद।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न – 'मैने निज दुर्बल .... होड़ लगाई' इन पंक्तियों में 'दुर्बल पद बल' और 'हारी होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

– कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

– मैने भ्रमवश जीवन-संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

– देवसेना की हार या निराशा के क्या कारण थे?

(ख) व्याख्या

श्रमित स्वप्न .... सकल कमाई ।

(ग) काव्य सौन्दर्य

अ) चढ़कर मेरे .... हारी-होड़ लगाई।

ब) लौटा लो .... लाज गंवाई।

(ख) कार्नेलिया का गीत

अरूण यह .... रजनी भर तारा।

मूल भाव – 'कार्नेलिया का गीत' जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है। सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी कार्नेलिया इस गीत के माध्यम से भारत देश की गौरव गाथा, प्राकृतिक सौन्दर्य और संस्कृति का गुणगान कर रही है।

व्याख्या बिन्दु – सिंधु नदी के तट पर बैठी कार्नेलिया कहती है कि भारत देश मिठास एवं लालिमा अर्थात् उत्साह से परिपूर्ण है। इस देश में सूर्योदय का दृश्य अत्यंत आकर्षक एवं मनोहारी है। यहाँ पहुँच कर अनजान क्षितिज को भी सहारा मिल जाता है। अर्थात दूर अनजान देशों से आये यात्रियों को भी भारत आश्रय देता है। सूर्योदय के समय तालाबों में कमल के फूल खिलकर अपनी आभा बिखेर देते हैं तो सूर्य की किरणें उन पर नृत्य करती सी प्रतीत होती है। यहाँ का जीवन सुन्दर, सरल एवं मनोहारी दिखाई देता है। भारत की हरियाली से युक्त भूमि पर सूर्य की लालिमा ऐसी लगती है जैसे सर्वत्र मांगलिक कुमकुम बिखरा हुआ हो। प्रातःकाल मलय पर्वत की शीतल, मंद, सुगंधित पवन का सहारा लेकर इंद्रधनुष के समान सुंदर पंखो को फैला कर पक्षी भी जिस ओर मुँह करके उड़ते दिखाई देते हैं, वही उनके घोसलें हैं अर्थात् वे भारत को ही अपना घर मानते है, यहाँ उन्हें शांति मिलती है। जैसे बादल गर्मी से मुरझाऐं पेड़-पौधो पर अपने जल की वर्षा कर जीवनदान देते हैं, उसी तरह यहाँ के लोग अपनी आँखो से करूणा रूपी जल बहाकर निराश और उदास लोगो के मन में नव आशा का संचार कर जीवन की प्रेरणा देता है। विशाल समुद्र की लहरें भी भारत के किनारों से टकरा शांत हो

जाती है, उन्हें भी यहाँ विश्राम मिलता है। रात भर जागते हुए तारे प्रात:काल होने पर उन्हें भी मस्ती से ऊँघते दिखाई देते है अर्थात् छिपने की तैयारी करते हैं तब ऊषा रूपी नायिका सूर्य रूपी सुनहरें कलश में सुख रूपी जल लेकर आती है और भारत-भूमि पर लुढ़का देती है अर्थात् प्रात:काल होने पर भारतवासी सुखी, समृद्ध एवं खुशहाल दिखाई देते है।

शिल्प-सौंदर्य - भाषा खड़ी बोली, तत्सम् शब्दावली, अलंकार-अनुप्रास, मानवीकरण (तरूशिखा उषा, तारे) उपमा (लघु सुरधनु से), रूपक (हेम-कुंभ), दृश्य-विम्ब, गेयता तथा संगीतात्मकता, प्रकृति-चित्रण

अभ्यास-कार्य

(क) प्रश्न

1.कार्नेलिया का गीत में भारत वर्ष की क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

2. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखो के बादल' में क्या अर्थ व्यंजित होता है?

3. 'जहां पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा' पंक्ति का आशय स्पष्ट करो।

(ख) व्याख्या - अरूण यह मधुमय .... रजनी भर तारा ।

(ग) काव्य-सौन्दर्य - हेम कुंभ ले उषा .... रजनी भर तारा।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(क) गीत गाने दो मुझे

गीत गाने दो .... फिर सीचंने को।

मूल भाव - इस कविता में कवि ऐसे समय की ओर संकेत कर रहा है जब हर ओर निराशा ही निराशा ही निराशा व्याप्त है। वह निराशा में आशा का संचार करना चाहता है।

व्याख्या बिन्दु :- कवि कहता है कि जीवन में निरंतर बढ़ती हुई पीड़ा अथवा दु:ख को कम करने के लिए, उसे भुलाने के लिए उसे गीत गाने दो। गीत ह्रदय की अनुभूतियाँ है। ये वेदना की तीव्रता को भुला सकते हैं, दु:खों को कम कर सकते है। जीवन-मार्ग पर चलते हुए हर कदम पर चोट खाते-खाते और संघर्ष करते-करते होश वालों के भी होश छूट गए है। अर्थात् अब जीना आसान नहीं रह गया है। जीने के लिए जो भी था, मूल्यवान था, उसे छल-कपट से उन मालिकों ने रात के अंधकार में (संकट के समय) लूट लिया, जिन पर भरोसा था। अब पीड़ा सहते सहते कंठ रूकने लगा है, ऐसा लगता है कि सामने काल आ रहा है। अब जीना कठिन हो गया है। लोग कुछ कह नहीं पा रहे हैं। इस निराशा भरे वातावरण में कवि गीत गाना चाहता है ताकि व्यथा को रोका जा सके। कवि कहता है कि संसार हार मानकर स्वार्थ और अविश्वास के जहर से भर गया है। संसार से सहानुभूति, करूणा, उदारता, सहयोग, भाईचारा, आदि भावनाएँ लुप्त हो चुकी हैं। अब लोग आपस में एक दूसरे को अपरिचित निगाहों से देख रहे हैं। मानवता हाहाकार कर रही हैं। लोगों में जीने की इच्छा मर चुकी है। संसार में एकता, समता, सहानुभूति तथा प्रेम की लौ बुझ गई है। कवि मानवता की बुझती लौ को फिर से जलाने के लिए स्वयं जलना चाहता है। वह ऐसे गीत गाना चाहता है जो संसार में फैली निराशा में आशा का संचार कर सके।

शिल्प सौन्दर्य :- खड़ी बोली, अनुप्रास अलंकार (गीत-गाने, ठग-ठाकुर, लोग लोगों), मुहावरों का प्रयोग (होश छूटना, जहर से भरना), लयात्मकता तथा संगीतात्मकता, प्रतीकात्मकाता, लाक्षणिकता, मुक्त छंद, ठग-ठाकुर शोषक का प्रतीक है।

अभ्यास कार्य

प्रश्न :- (1) 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' गीत क्यों गाना चाहते है?

(2) ठग-ठाकुरों से कवि का संकेत किसकी ओर है?

(3) ठग-ठाकुरों ने किससे क्या लूट लिया है?

(4) 'जल उठो फिर सीचनें को' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(5) 'गीत गाने दो मुझे' कविता दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है -स्पष्ट कीजिए।

(ख) व्याख्या - चोट खाकर .... फिर सींचने को

(ग) काव्य-सौन्दर्य- भर गया है .... फिर सींचने को।

(ख) सरोज-स्मृति

देखा विवाह .... तेरा तर्पण।

मूल भाव :- 'सरोज स्मृति' कविता कवि निराला की दिवंगत पुत्री पर केंद्रित है। इस कविता के माध्यम से निराला का जीवन-संघर्ष एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके संबंध तथा पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध भी प्रकट हुआ है।

कवि अपनी स्वर्गीया पुत्री सरोज को संबोधित करते हुए कहता है कि तेरा विवाह सभी प्रकार की रूढ़ियों से मुक्त सर्वथा नवीन पद्धति से हुआ था। विवाह के समय कवि माता-पिता दोनों के कर्तव्य निभा रहा था। कवि कहता है कि पवित्र कलश के जल से तेरा स्नान कराया गया तब तू मुझे मंद मुस्कुराहट के साथ देख रही थी। ऐसा लगता था कि तेरे होंठों में बिजली की चमक फंसी हो। तुम्हारे हृदय में पति की सुंदर छवि थी। यह बात तुम्हारे श्रृंगार में मुखरित हो रही थी। विवाह के समय तेरा विश्वास तेरे उच्छ्वासें के साथ-साथ अंग-अंग में झलक रहा था अर्थात् तू अपने विवाह के समय पूर्ण आश्वस्त तथा प्रसन्न दिखाई दे रही थी। लज्जा व संकोच से झुकी हुई तेरी आँखों में एक नया प्रकाश उभर आया था, तेरे होंठों पर स्वाभाविक कंपन था। उस समय मेरे वसंत की प्रथम गीति का प्यास उस मूर्ति में साकार हो उठी थी। कवि कहता है मैंने अपनी कविताओं में सौदर्य के जिस निराकार भाव को अभिव्यक्त किया था, वह तुम्हारे रूप-सौन्दर्य में साकार हो उठा था। कविताओं में वही रस की धारा बनकर प्रवाहित होता रहता था। श्रृंगार के जिस गीत को मैनें अपनी स्वर्गीय पत्नी के साथ मिलकर गाया था, वह आज भी मेरे प्राणों में अनुरागपूर्ण उत्साह का संचार कर रहा है। ऐसा लगता है कवि की पत्नी का आलौकिक सौन्दर्य आकाश से उतरकर पुत्री सरोज के रूप में पृथ्वी पर आ गया हो। तेरा रूप सौन्दर्य कामदेव की पत्नी रति के समान अवर्णनीय था। तेरा विवाह संपन्न हो गया। इस विवाह में कोई आत्मीय जन नहीं थे, न ही उन्हें कोई निमंत्रण भेजा गया था। विवाह अत्यंत सादगी के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह में रात्रि जागरण नहीं हुआ न ही विवाह गीत गाए गये, न कोई चहल-पहल हुई। सर्वत्र एक मौन संगीत समाया हुआ था जो तुम्हारे नव जीवन में उतर आया था। कवि कहता है कि माँ के अभाव में मैंने तुझे वे सभी शिक्षाएँ दी जो माताएँ अपनी पुत्री को देती है। मैनें ही तेरी पुष्प सेज को भी तैयार की। उस समय कवि को कण्व ऋषि की पालित पुत्री शकुन्तला की याद आ गई वह भी माँ विहीन थी। किंतु उस घटना तथा यहाँ की स्थिति में अन्तर है। नानी की स्नेहमयी गोद में आ गई अर्थात तू नानी के पास आ गई। मामा-मामी का भरपूर स्नेह मिला। उन्होनें तुझ पर स्नेह की वर्षा उसी प्रकार की जिस प्रकार बादल धरती पर जल बरसाते हैं। वे सदा तेरे रक्षक और हित चिंतक बने रहे। वे सदा तेरे कामों में लगे रहे। तेरी माँ उस कुल की लता थी, जहाँ तू कली के रूप में खिली तथा फली-फूली तथा तेरा पालन-पोषण हुआ। अंत समय तू उसी गोद अर्थात् नानी की गोद में आ गई थी और तूने सदा-सदा के लिए मृत्यु का वरण कर अपनी आँखे मूंद ली थी। कवि कहता है कि मैं तो सदैव से भाग्यहीन था। तू ही मेरा एकमात्र सहारा थी। युग के बाद जब तू मुझसे बिछुड़ गई तो दु:ख मेरे जीवन की कथा बन गयी। मेरे जीवन में सदैव दु:ख ही भरा रहा कभी सुख देखने को नहीं मिला। जीवन में मिले दु:खों और अभावों के कारण कवि अपनी पुत्री के प्रति कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर पाया। वह पश्चाताप करते हुए कहता है कि मेरे कवि कर्म पर वज्रपात

हो जाए तब भी मेरा सिर श्रद्धा से झुका रहेगा। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए मेरे समस्त सत्कार्य शीतकाल में पाला पड़ने से कमल की तरह नष्ट हो जाएं तब भी कोई चिंता नहीं है। मैं अपने विगत जीवन के सभी कार्यो का फल तुझे अर्पित कर तेरा तर्पण कर रहा हूँ अर्थात् तेरा श्राद्ध कर रहा हूँ। तेरे प्रति यही मेरी श्रद्धांजलि है।

शिल्प-सौन्दर्य - भाषा-खड़ी बोली, संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, अलंकार-अनुप्रास (नतनयनों, रागरंग, रतिरूप, सदा समस्त), पुनरूक्ति प्रकाश (अंग-अंग, थर-थर-थर) मानवीकरण (मूर्ति-धीति) उत्प्रेक्षा एवं उदाहरण (भरे जलद..... अपार) उपमा (शीत के से शतदल) रूपक (आकाश .... मही)

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1 :- 'मेरे बसंत की प्रथम गीति', के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

2. आकाश बदलकर बना मही में 'आकाश' और 'मही' शब्द किसकी और संकेत करते है?

3. 'वह लता वहीं की जहाँ कली तू खिली, स्नेह से हिली, पली', पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है?

4. शकुन्तला के प्रसंग के माध्यम से कवि निराला क्या संकेत करना चाहते हैं?

5. कवि निराला की श्रृंगारिक कल्पना किस रूप में साकार हुई हैं? सरोज स्मृति कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

6. कवि निराला की सरोज-स्मृति कविता आम आदमी के जीवन संघर्षो से किस प्रकार मेल खाती है?

(ख) **व्याख्या** - मुझ भाग्यहीन .... तेरा तर्पण।

(ग) **काव्य सौन्दर्य** - माँ की कुल .... अन्य कला।

सच्चिदानंद हीरानंद वातस्यायन 'अज्ञेय'

(क) यह दीप अकेला

यह दीप .... पंक्ति को दे दो।

मूल भाव - 'यह दीप अकेला' कविता में दीप के माध्यम से कवि व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने की बात कर रहा है। मनुष्य में अतुलनीय सहनशीलता और संघर्ष की क्षमता है। समाज में उसके विलय से समाज और राष्ट्र मजबूत होगा।

व्याख्या बिन्दु - दीप अकेला होने के बावजूद प्रेम से भरा व गर्व से परिपूर्ण होने के कारण अपनों से अलग है। वह मदमाता है क्योंकि वह सर्वगुण सम्पन्न है यदि उसे पंक्ति में सम्मिलित कर लिया जाए तो उस दीप की शक्ति, महत्ता तथा सार्थकता बढ़ जाएगी। दीप व्यक्ति का प्रतीक है, कवि उसे पंक्ति में लाकर मुख्यधारा से जोड़ना चाह रहा है। दीप के लिए पनडुब्बा, समिधा, मधु, गोरस, अंकुर, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत विश्वास तथा अमृत-पूतपय आदि उपमानों का प्रयोग किया गया है। ये सभी उपमान एक स्नेह भरे दीप के लिए पूर्णतया उपयुक्त है। पनडुब्बा के रूप में वह सच्चे मोतियों का लाने वाला है अर्थात् खतरों से खेलने वाला है, तो समिधा (यज्ञ की लकड़ी) बन कर संघर्षशील तथा दृढ़निश्चयी है। मधु एवं गोरस के रूप में माधुर्य एवं पवित्र अमृतमय दुग्ध के समान सुख देने वाला स्नेहशील, परोपकारी है। वह अंकुर की तरह स्वयं पैदा होकर विशाल सूर्य को निडरता से ताकता है, वह उत्साही है यह स्वयं ब्रहमा का रूप में अर्थात दीप (मनुष्य) स्वयं तक ही सीमित नही है। उसे सांसारिक गतिविधियों में शामिल करके सर्वजन हिताय प्रयोग में लाया जाए तो सम्पूर्ण मानवता लाभान्वित हो सकेगी। 'यह अद्वित्तीय यह मेरा, यह मैं स्वयं विसर्जित' पंक्ति के द्वारा कवि दीप को 'स्व' का भाव प्रदान करता हुआ कहता है कि व्यक्ति अपनी अलग पहचान बनाते हुए समाज हित में समर्पित हो जाए तो अत्याधिक श्रेयस्कर होगा। व्यक्तिगत सत्ता का यदि सामाजिक व राष्ट्रीय सत्ता में विलय हो जाए तो समाज, राष्ट्र एवं व्यक्ति सभी का उत्थान होगा।

दीप प्रकाश का, ज्ञान का तथा सभ्यता का प्रतीक है। कविता में इसे सामाजिक इकाई अर्थात व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। जब कहीं समाज में निंदा, अपमान, घृणा तथा अनादर एवं उपेक्षा का अंधकार फैलता है, तो दीप उसे प्रकाशमान कर अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी करूणामय होकर, द्रवित होकर, जागरूकता का परिचय देता हुआ, अनुराग से देखता हुआ, सभी को गले लगाने वाली ऊँची उठी भुजाओं वाला बनकर आत्मीयता का परिचय देता है। वह सदैव जागृत तथा श्रद्धा से युक्त रहता है। अंधेरे में प्रकाश की किरण बनकर निंदा, अपमान, घृणा और अवज्ञा को दूर करता है, तथा अनुकूल वातावरण तैयार करता है।

शिल्प सौन्दर्य - भाषा-खड़ी बोली, तत्सम शब्दावली, अनुप्रास अलंकार, रूपक (पनडुब्बा, समिधा, गोरस, अंकुर) लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति, माधुर्य एवं ओज गुण, प्रतीकात्मकता-दीप प्रतीक है व्यक्ति का, प्रगीत शैली, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

(1) दीप अकेला के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए बताइए कि उसे कवि ने स्नेह भरा, गर्वभरा एवं

मदमाता क्यों कहा है?

(2) 'यह अद्वितीय - यह मेरा - यह मैं स्वयं विसर्जित'' पंक्ति के आधार पर व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए।

(3) यह दीप अकेला कविता का मूल भाव लिखिए।

(ख) व्याख्या (1) यह वह विश्वास .... पंक्ति को दे दो।

(2) यह मधु है .... पंक्ति को दे दो।

(ग) काव्य-सौदर्य - यह प्रकृत, स्वयंभू .... पंक्ति को दे दो।

(ख) मैनें देखा, एक बूँद

मैंने देखा .... नश्वरता के दाग से।

मूलभाव :- कवि ने इस कविता के माध्यम से जीवन में क्षण के महत्व को तथा क्षणभंगुरता को प्रतिष्ठापित किया है। बूँद जब तक समुद्र में रहती है उसका कोई अस्तित्व नही होता किंतु जब वह अलग होती है तो सूर्य के स्पर्श से रंगकर सार्थक हो जाती है।

व्याख्या बिंदु :- कवि कहता है एक बूँद का सागर से अलग होने का अर्थ है कि अब उसका अस्तित्व समाप्त होने वाला है, वह शीघ्र नष्ट होने वाली है। बूँद सागर से अलग होकर स्वयं नष्ट हो जाती है, सागर नष्ट नहीं होता। समुद्र(सागर) से कवि का आशय ब्रहम से है जहाँ से बूँद रूपी जीव क्षणभर अर्थात् कुछ समय के लिए अलग होता है और कुछ रंगीन पल व्यतीत कर नश्वरता को प्राप्त होता है अर्थात् मुक्ति को प्राप्त होता है।

सागर की एक बूँद लहरों के टकराने से ऊपर उछल कर अलग हो गई। सूर्य की लालिमा में रंगकर बूँद को पुनः सागर में समाना निरर्थक प्रतीत नहीं होता क्योंकि उस एक क्षण वह अस्त होते हुए सूर्य की आग से रंग कर समाप्त हो गई, लेकिन बूँद ने क्षणभर के लिए अपनी स्वच्छंदता का आनंद लिया। उसने अपनी नश्वरता के दाग से मुक्ति पा ली। उसी प्रकार अपने क्षणभंगुर जीवन को परमब्रहम के प्रकाश से आलोकित कर मनुष्य को नश्वरता अर्थात् मृत्यु के भय से मुक्ति अनुभव करनी चाहिए।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा - खड़ी बोली, तत्सम शब्दावली, अनुप्रास अलंकार, बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता (बूँद व्यक्ति का, सागर परम् ब्रहम का) दार्शनिक तत्व की अभिव्यक्ति, मुक्त छंद।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न 1. 'रंग गई क्षण भर ढलते सूरज की आग से' पंक्ति के आधार पर बूँद के क्षण भर रंगने की सार्थकता बताइए।

2. क्षण के महत्व को उजागर करते हुए कवित का मूल भाव लिखिए।

3. मैनें देखा एक बूँद कविता में कवि ने सत्यता के दर्शन कैसे किए है?

(ख) व्याख्या :- मैने देखा .... नश्वरता के दाग से।

केदारनाथ सिंह
बनारस

इस शहर में .... बिल्कुल बेखबर।

मूलभाव :- केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' में प्राचीनता, आध्यात्मिकता एवं भव्यता के साथ-साथ आधुनिकता का अपूर्व समन्वय है। कविता बसंत आने पर धार्मिक, सांस्कृतिक वैभव, आयोजनों एवं मिथकीय आस्थाओं का परंपराबोध कराती है।

व्याख्या बिन्दु- बनारस एक बहुत प्राचीन शहर है। पौराणिक ग्रंथों एवं दंतकथाओं मे बनारस को काशी नाम से संबोधित किया जाता है। कवि कहता है कि बनारस में बसंत का आगमन अचानक होता है। बसंत के आगमन पर लहरतारा या मडुवाडीह मोहल्लों में धूल का एक बवंडर उठता है, जिससे इस महान एवं पुराने बनारस शहर की जीभ किरकिराने लगती है। बसंत का प्रभाव दशाश्वमेध घाट के पत्थरों पर भी दिखाई देने लगता है। बसंत के आगमन और लोगों के स्नान ध्यान, पूजा-अर्चना से घाट का अंतिम पत्थर भी अपनी कठोरता छोड़ कर नरम हो जाता है। सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखो में नमी तथा भिखारियों निराश आँखो में उत्साह एवं उनके खाली कटोरों में सिक्कों की चमक दिखाई देने लगती है। घाट पर आये श्रद्धालु भिखारियों के खाली कटोरों को दानस्वरूप कुछ न कुछ देकर भर देते है। इस तरह इन कटोरों में बसंत उतरता है।

इस शहर के साथ एक मिथकीय आस्था जुड़ी हुई है कि एवं गंगा का सानिध्य पाकर मानव को जीवन मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल जाता है, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। इसलिए प्रतिदिन असंख्य शवों को अपने कंधों पर लादकर लोग बनारस की तंग गलियों से गंगा के किनारे दाह-संस्कार के लिए ले जाते है।

बनारस तीव्र गति वाला शहर नही हैं, यहाँ सभी कुछ धीमी गति से संपन्न होता है। यहाँ के निवासियों के स्वभाव में भागमभाग नही है। धीरे-धीरे कार्य करने की विशेषता ने सारे समाज को एकता के सूत्र में मजबूती से बाँध रखा है। घाट पर बँधी नाव और तुलसीदास की चरण-पादुकाओं के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है। यहाँ जो परंपराएं, आस्थाएं विश्वास, भक्ति और श्रद्धा है उनमें सैकड़ो वर्षो से कुछ भी परिवर्तन नही हुआ है। परंपरागत जीवन वैसा ही चल रहा है, जैसे चलता आया है। बनारस एक अद्‌भुत शहर है। इस की रिक्तता और पूर्णता दर्शाने के लिए कवि कहता है कि यह आधा फूल में, आधा शव में आधा नींद में आधा शंख में है। आधा होना और आधा न होना इस शहर का रहस्य

है। राख, रोशनी, आग, पानी, धुएँ, खुशबू और आदमी के उठे हाथों के स्तंभो के द्वारा कवि कहना चाहता है कि यह शहर आस्था के स्तंभो तथा काशी गंगा के सानिध्य में मोक्ष की अवधारणा पर खड़ा है। सैकड़ो वर्षो से यहाँ के निवासी एक पैर पर खड़े होकर साधना करते हुए अज्ञात सूर्य को अर्ध्य देते आ रहे है, अर्थात् यहाँ के लोग सदा से धर्म-कर्म में लगे हुए है। इसी से सांस्कृतिक विरासत बनी हुई है।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा - खड़ीबोली, **अलंकार** - अनुप्रास, पुनरूक्ति प्रकाश (रोज-रोज, धीरे-धीरे, ऊँचे-ऊँचे)मानवीकरण (बनारस का), बिम्बों का प्रयोग, लाक्षणिकता, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1:- बनारस शहर के लिए जो मानवीय क्रियाएँ इस कविता में आई हैं उनका व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए?

2. बनारस में बसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

3. खाली कटोरों में बसंत का उतरना से क्या आशय है?

4. बनारस कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति का मिलाजुला रूप बनारस है।

(ख) व्याख्या - जो है वह खड़ा है .... हाथों के स्तंभ।

2. अद्‌भुत है .... आधा नही है।

3. शताब्दियों से .... बिल्कुल बेखबर।

(ख) दिशा

हिमालय किधर .... किधर है।

मूलभाव- केदारनाथ सिंह द्वारा रचित यह कविता बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। बच्चे का भी अपना यथार्थ होता है।

व्याख्या बिन्दु - कवि स्कूल के बाहर पतंग उड़ाते हुए बच्चे से पूछता है कि हिमालय किधर है। पतंग उड़ाने में मस्त बच्चे से यह प्रश्न पूछना असामयिक है, फिर भी बालक स्वाभाविक रूप से उत्तर देता है कि जिधर उसकी पतंग भागी जा रही है। लेखक ने पहली बार जाना कि हिमालय किधर है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का अपना यथार्थ होता है। बच्चे भी यथार्थ को अपने ढंग से देखते है, उस बच्चे का यथार्थ पतंग की दिशा में है। कवि बच्चे के बाल सुलभ ज्ञान पर मुग्ध हो उठता है। कवि चाहता है कि हम बच्चों से कुछ न कुछ सीख सकते है।

शिल्प सौन्दर्य - भाषा-खड़ी बोली, पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार (उधर-उधर), प्रश्न अलंकार (हिमालय किधर है?) संवादात्मक शैली, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1 :- दिशा कविता के आधार पर बताइये कि बच्चे का उधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

2. दिशा कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना यथार्थ होता है।

3. बालक पतंग की ओर हिमालय की दिशा क्यों बताता है? बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखिए।

4. व्याख्या - हिमालय किधर है? .... किधर है।

विष्णु खरे

एक कम

1947 के बाद .... रह सकते हो।

मूलभाव :- इस कविता में कवि विष्णु खरे ने स्वतंत्रता की बाद की भारतीय जीवन शैली पर प्रकाश डाला है। स्वतंत्रता के बाद लोगों ने राष्ट्रीय भावना तथा सामाजिकता को छोड़कर भ्रष्ट तरीके अपनाएं और अमीर हो गए, किंतु रह गए ईमानदार लोग जो चाय, रोटी और पैसो के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाने को मजबूर हैं।

व्याख्या बिन्दु :- उनका मानना है कि हमारे सेनानियों ने आजादी से पूर्व एक सच्चे, सुखी तथा शांतिप्रिय समाज की कल्पना की और इस हेतु आत्म बलिदान भी किया था। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या उनका स्वप्न साकार हो सका? अमीर बनने की होड़ में लोगों ने अपने स्वाभिमान, आत्मा की आवाज, अपने सम्मान तथा मानवीय मूल्यों (आपसी विश्वास, भाईचारा, सामूहिकता तथा समन्वय की भावना) के स्थान पर धोखाधड़ी, आपसी खींचतान तथा परस्पर वैमनस्य की भावना को अपना लिया है। लोग अशोभनीय तरीको का सहारा लेकर मालामाल, आत्मनिर्भर तथा गतिशील हो गए है यह सभ्य समाज को मान्य नही है। लोग निर्लज्ज और पतित हो गए है। इस कविता में कवि बेईमानों के बीच जी रहे एक ईमानदार व्यक्ति (कोढ़ी, कंगाल, भिखारी के माध्यम से) के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहा है। वह स्वयं को तथा भिखारी को ईमानदार के रूप में प्रस्तुत करके कुछ न कर पाने की स्थितियों में ऐसे लोगों के जीवन संघर्ष कम से कम एक व्यवधान को कम करने का प्रयास कर रहा है तथा भ्रष्टाचारियों को बेपर्दा करके एक सभ्य, शिष्ट, ईमानदार तथा प्रगतिशील समाज का निर्माण करने की प्रेरणा दे रहा है।

शिल्प सौन्दर्य - भाषा खड़ीबोली, तत्सम शब्दावली **अंलकार** - अनुप्रास (कंगाल, कोढ़ी, नंगा, निर्लज्ज निरांकाक्षी, हर होड़) संदेह अलंकार, मुहावरे का प्रयोग (हाथ फैलाना) लाक्षणिक, विशेषणों का प्रयोग, प्रतीकात्मकता, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न 1. 1947 के बाद भारतीय समाज में क्या परिवर्तन आया?

2. हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

3. 'मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी या हिस्सेदार नहीं' से कवि विष्णु खरे का क्या अभिप्राय है?

4. एक कम कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की जीवन शैली को किस रूप में रेखांकित किया है? लिखिए।

5. बदलते परिवेश में ईमानदार व्यक्ति की छवि धूमिल होती जा रही है। - क्या आप सहमत है?

(ख) **व्याख्या** - 1947 के बाद से .... मामूली धोखेबाज

(ग) **काव्य-सौन्दर्य** - (1) कि अब जब .... बच्चा खड़ा है।

(2) मैं तुम्हारा विरोधी .... रह सकते हो।

सत्य

जब हम सत्य .... इंद्रप्रस्थ लौटते हुए।

मूलभाव :- 'सत्य' कविता में कवि ने पौराणिक संदर्भो एवं पात्रों के द्वारा जीवन में सत्य के महत्व को स्पष्ट करना चाहा है। कवि कहना चाहता है कि हम जैसे समाज में जीवन यापन कर रहे है, उसमें सत्य की पहचान करने में तथा उसे पाने में कितने असमर्थ सिद्ध हो रहे हैं, यह बताना उतना ही कठिन है, जितना सत्य को पकड़ पाना।

व्याख्या बिन्दु :- कवि कहता है कि सत्य केवल पुकारने से प्राप्त नहीं हो सकता, इसे प्राप्त करने के लिए कठोर तप और साधना करनी पड़ती है, उसके प्रति निष्ठावान होना पड़ता है। उसे अनुभव करना व पहचानना पड़ता है। कविता में विदुर सत्य का प्रतीक हैं और युधिष्ठिर सत्य के प्रति निष्ठावान व्यक्ति का। सत्य को पाने के लिए ही युधिष्ठिर विदुर को पुकार रहे थे। महाभारत का यह प्रसंग बताता है कि सत्य कटु और नग्न होता है उसका सामना होने पर मन विचलित होने लगता है। सत्य के प्रति मन में निष्ठा होनी चाहिए तभी सत्य का साक्षात्कार होने पर उसका आलोक, उसकी शक्ति हमारी आत्मा में समाहित हो सकेगी। कवि कहता है कि सत्य कभी दिखाता है और कभी ओझल जाता है। सत्य का रूप वस्तु-स्थिति, घटनाओं और पात्रों के अनुसार बदलता रहता है। जो एक व्यक्ति के लिए सत्य है, आवश्यक नहीं कि दूसरे व्यक्ति के लिए भी वह सत्य ही हो। इसीलिए सत्य की पहचान और उसकी पकड़ अत्यंत कठिन होती है। युधिष्ठिर सत्य के प्रति दृढ़ संकल्पी थे, इसी कारण वे सत्य को प्राप्त कर सके। सत्य और संकल्प का संबंध आवश्यक है। दृढ़ संकल्प शक्ति से ही सत्य को आत्मा की शक्ति के रूप में पहचाना जा सकता है। संकल्प के अभाव में सत्य को नहीं पाया जा सकता।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा-खड़बोली, अंलकार-अनुप्रास (हटता जाता, देखती दृष्टि, प्रकाश-पुंज), पुनरूक्ति प्रकाश (बार-बार, धीरे-धीरे, कभी-कभी), मानवीकरण (सत्य शायद जानना चाहता है), उदाहरण (युधिष्ठिर जैसा, प्रकाश जैसा), रूपक (प्रकाश-पुंज), विरोधाभास (न पहचानने में पहचानते हुए), छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न 1 :- सत्य हमसे परे क्यों और किस प्रकार हटता चला जाता है?

2. सत्य का दिखना और ओझल होने से कवि का क्या तात्पर्य है?

3. सत्य और संकल्प के परस्पर संबंध पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. सत्य बोलना, सत्य सुनना, सत्य को सहन करना और सत्य का पालन करना आज के बदलते परिवेश में अत्यंत मुश्किल क्यों है?

(ख) व्याख्या

(1) जब हम सत्य को .... वे नहीं ठिठकते।

(2) हम कह नहीं सकते .... इंद्रप्रस्थ लौटते हुए।

(ग) काव्य-सौन्दर्य

(1) हम कह नहीं सकते .... उसी को छुअन है।

रघुवीर सहाय

वसंत आया

जैसे बहन 'दा'.. बसंत आया।

मूलभाव :- 'वसंत आया' कविता में कवि ने आज के मनुष्य की आधुनिक जीवन-शैली पर व्यंग्य किया है। मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूट गया है। वसंत ऋतु का आना अब अनुभव करने के बजाय कैलेंडर से जाना जाता है।

व्याख्या बिंदु :- वसंत के आगमन के विषय में कवि कहता है कि सुबह की सैर करते समय किसी बंगले के आगे लगे अशोक वृक्ष पर कोई चिड़िया छोटी बहन की तरह चहचहाएं तथा सड़क के किनारे पेड़ों से गिरे पीले-सूखे पत्ते पैरों के नीचे चरमराएं तथा खिली हुई हवा फिरकी की तरह झूमती हुई, गरम पानी में नहाई हुई सी आये तो समझ लेना चाहिए कि वसंत आ गया है। कैलेंडर की तिथि देखकर तथा दफ्तर में छुट्टी होने के कारण वसंत पंचमी आने का प्रमाण मिल जाता है। इस कविता में कवि की चिंता है कि मनुष्य आधुनिकता एवं अतिव्यस्तता के कारण प्रकृति और मौसम में आने वाले परिवर्तनों से अनभिज्ञ हो गया है। प्रकृति के सौंदर्य, हरियाली, पुष्प, कोयल, भौरें, रंग, रस, गंध, आम के बौर तथा ढाक के दहकते वनों आदि से कटता जा रहा है।

शिल्प-सौन्दर्य :- भाषा - खड़ीबोली, देशज (तद्भव) शब्दों और क्रियाओं का प्रयोग, अनुप्रास अलंकार (पियराये पत्ते, हुई हवा.............), पुनरूक्ति प्रकाश (बड़े-बड़े, चलते-चलते), उपमा (गरम पानी से नहाई, फिरकी-सी) मानवीकरण, (खिली हुई हवा), बिबों का प्रयोग, प्रकृति चित्रण, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

प्रश्न :- 1. 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है?

2. रघुवीर सहाय ने वसंत आया कविता के माध्यम से मनुष्य की किस जीवन शैली को व्यंग्य का निशाना बनाया है और क्यों?

3. प्रकृति मनुष्य की सहचरी है, इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए?

(ख) व्याख्या - और यह कैलेंडर .... वसंत आया।

(ग) काव्य-सौन्दर्य - ऐसे किसी बंगले .... चली गई।

तोड़ो

तोड़ो तोड़ो तोड़ो .... गोड़ो गोड़ो गोड़ो।

मूल भाव - 'तोड़ो' उद्‌बोधन कविता हैं। इसमें कवि सृजन हेतु भूमि को तैयार करने के लिए चट्‌टाने, ऊसर और बंजर को तोड़ने का आह्‌वान करता है। मन के भीतर की ऊब भी सृजन में बाधक हैं कवि उसे भी दूर करने की बात करता है।

व्याख्या बिंदु - चरती, परती, धरती को ऊर्वरा ऊबरा बनाने के लिए पत्थर, चट्‌टानों, बंजर-ऊसर को तोड़ना पड़ता है। इसी प्रकार मन मे व्यापत ऊब और खीज को तोड़ना पड़ता है। धरती में पत्थर और चट्‌टान तथा मन के भीतर की ऊब और उदासी सृजन में बाधक है। धरती को खेती योग्य बनाने के लिए खोदने-पाटने, गुड़ाई-बुवाई करने की आवश्यकता है। इसी तरह मन में व्याप्त खीज को बाहर निकालने पर सृजन होगा। मन की ऊब और खीज रचनात्मकता में बाधक है। इस कविता के माध्यम से कवि विध्वंस के लिए नहीं सृजन के लिए प्रेरित कर रहा है। वह मानव-मन की खीज और ऊब को उसके मन से निकाल कर नए सृजन के लिए तैयार करना चाहता है।

शिल्प सौन्दर्य - भाषा-खड़ीबोली, अलंकार - पुनरूक्ति प्रकाश (तोड़ो-तोड़ो, आधे-आधे, गोड़ो-गोड़ो), रूपक (मन के मैदानों में), प्रतीको और बिबों का प्रयोग, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1 - तोड़ो कविता में 'पत्थर' और चट्‌टान किसके प्रतीक है?

2. कवि को धरती और मन की भूमि में क्या-क्या समानताएँ दिखाई पड़ती है?

3. कविता का प्रारंभ तोड़ो तोड़ो तोड़ो से हुआ है और अंत गोड़ो गोड़ो से विचार कीजिए कवि ने ऐसा क्यों किया?

4. 'तोड़ो' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

(ख) **व्याख्या** - तोड़ो तोड़ो तोड़ो .... आधे आधे गाने।

(ग) **काव्य सौन्दर्य** - ये ऊसर बंजर .... गोड़ो गोड़ो गोड़ो।

प्राचीन कवि
तुलसीदास

भरत-राम का प्रेम

(1) पुलकि सरीर .... पिआसे नैन ।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत छंद कवि तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अयोध्या कांड का अंश है। राम वन गमन के उपरान्त भरत के मनोभाव का वर्णन है। अपने प्रभु श्री राम के विषय में बोलते समय उनका शरीर पुलक से भर जाता है और नेत्र अश्रु पूरित हो उठते है। वह श्री राम के स्वभाव की चर्चा करते हुए कहते है कि उनका हृदय कोमल और निर्मल है। उनके व्यक्तित्व की विशेषताएं बताते हैं कि वे अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते, खेल में स्वयं हार कर मुझे जिताते है। ऐसा करना मेरे प्रति उनके प्रेम और अनुराग का परिचायक है। बचपन से ही उन्होनें मेरा साथ दिया है। भरत कहते है कि मेरे नेत्र सदा श्री राम के दर्शन के लिए लालायित रहते है।

2) विधि न सकेउ .... मुनि रघुराउ।।

व्याख्या बिन्दु : भरत भाव विभोर हो कर कहते है कि संभवत: ईश्वर के लिए मेरे प्रति श्रीराम का प्रेम असहनीय था, इसी कारण उन्होंने माता के दुर्व्यवहार को बहाना बना हम दोनों को अलग कर दिया। माता की कुबुद्धि के कारण ही राम वन गए। भरत कहते हैं कि माता के प्रति अभद्र विचार और अपशब्द सर्वथा अनुचित है। अपने चरित्र का सही आकलन स्वयं कठिन है। चरित्र की पवित्रता का निर्णय अन्य ही करते है। माता को अधम और स्वयं को उत्तम मानना अनुचित है। जिस प्रकार कोदो की बाली से उत्तम धान उत्पन्न नहीं हो सकता और घोंघा श्रेष्ठ मोती को जन्म नही दे सकता, उसी प्रकार दुराचारी माता के गर्भ से चरित्रवान सदाचारी पुत्र का जन्म संभव नहीं है। श्री राम और मेरे अलगाव का कारण मेरे पूर्व जन्म के पाप कर्म हैं। माता के साथ बुरा व्यवहार और अपशब्दों का प्रयोग कर मैनें उन्हें दुखी और पीड़ित किया है। मेरे उद्धार का एक मात्र साधन मेरे गुरू और श्रीराम है। मेरे वचनों की सत्यता और पवित्रता से मुनि विशिष्ठ और श्री राम परिचित है।

3) भूपति मरन .... सहावइ काहि।।

व्याख्या बिन्दु :- राम के वन गमन के पश्चात् सब दुखी है। भरत माताओं और अयोध्या वासियों के दुख का मूल कारण स्वयं को मानते हैं। राजा दशरथ ने राम वियोग में प्राण त्याग दिए। राजा की

मृत्यु और माता की कुबुद्धि का साक्षी समस्त संसार है। राम के वनवास के कारण अयोध्या के नागरिक विरह अग्नि में जल रहे है। मेरे कारण ही श्री राम, लक्ष्मण और सीता मुनि का वेष धारण कर वन को चले गए, वे बिना पादुका पैदल चले गए। भगवान् शंकर इस बात के साक्षी है कि मैं सब के दुख का कारण होने पर भी जीवित हूँ। निषाद राज की भक्ति और श्रद्धा को जानकर भी मेरा कठोर हृदय नहीं पिघला। श्री राम के प्रताप से मार्ग में आने वाले सर्प और बिच्छु भी अपना विष त्याग देते है।

ऐसे दयालु, श्री राम लक्ष्मण और सीता के साथ शत्रुता का व्यवहार किया उस कैकेयी के पुत्र भरत को ईश्वर अवश्य दंड देगा।

शिल्प सौन्दर्य :-

भाषा-अवधी, चौपाई दोहा छंद, भक्ति भावना, नीरज नयन (रूपक, अनुप्रास)

अनुप्रास अलंकार :- खेल खुनिस, स्नेह संकोच, मातुभंदि, साधु सुचि (अनुप्रास)

मुकता .... काली (दृष्टांत अलंकार)

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1 :- 'मैं जानऊँ निज नाथ सुभाऊ' में राम के चरित्र की किन किन विशेषताओं का उल्लेख है?

2. राम के प्रति अपने श्रद्धा भाव तथा अनन्य भक्ति को भरत ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

3. 'महीं सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति के आधार पर भरत की मनोदशा स्पष्ट कीजिए।

4. सब के दुख का कारण भरत किसे मानते है और क्यों?

ख) व्याख्या

पुलकि समीर .... पिआसे नैन।।

ग) काव्य सौन्दर्य

1) फरह कि कोदव बालि सुसाली
मुकता प्रसव कि संबुक काली।।

2) पुलकि समीर सभा भए ठाढ़े।
नीरत नयन नेह जल बाढ़े।।

पद

1) जननी निरखति .... प्रीति सिखी सी।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत पद तुलसीदास कृत गीतावली से है। राम वन गमन के पश्चात् माता कौशल्या की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया गया है। राम के शैशव काल की जूतियाँ, धनुष बाण आदि को देखकर माता कौशल्या का दु:ख बढ़ जाता है। वह उन्हें के बार बार अपने हृदय से लगाती है। उनके कक्ष में जाकर वह यह कहकर जगाने लगती है कि अनुज और सखा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं उठों और अपने भाइयों, मित्रों के साथ मिलकर अपनी रूचि का भोजन ग्रहण करो। राम को कमरे में न देख अचानक राम वन गमन प्रसंग के स्मरण से वह दु:ख वेदना के कारण, स्तब्ध और चित्रवत् हो जाती है।

माता कौशल्या की दशा नृत्य में मग्न उस मोरनी की भांति हैं जो नृत्य के अंत में अपने पैरों को देखकर रोने लगती है। भाव यह है कि माँ कौशल्या की विरह वेदना का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

2. राधौ एक .... बड़ो अंदेसो।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत पद में अश्व के बहाने माता कौशल्या की वेदना का मार्मिक मित्रण है। किस प्रकार अश्वों को देखने के बहाने अयोध्या लौटने को कहती हैं। वास्तव में माता राम को देखने मिलने की आकांक्षी है। राम के प्रिय अश्वों की दु:खी अस्वस्थ अवस्था उनकी चिंता का कारण है। माता कौशल्या कहती हैं जिन अश्वों की देखभाल तुम स्वयं अपने कर-कमलों से करते थे तुम्हारे स्पर्श के अभाव में उनकी दशा हिमपात हुए कमल के समान है। माता कौशल्या पथिक से अनुरोध करती हैं कि वन में यदि राम से भेंट हो तो उन्हें अश्वों की दशा से अवगत करा देना।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा ब्रज, अलंकार-अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश (बार-बार) उपमा (चित्र लिखी सी, सिखी सी), रूपक (कर-पंकज), उत्प्रेक्षा (तदापि......हिम मारे)

अभ्यास कार्य

क) 1. राम वन गमन के उपरान्त राम के शैशव काल की वस्तुओं को देखकर माता कौशल्या की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

2. 'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति में माता की करुण दशा की अभिव्यक्ति है। स्पष्ट कीजिए।

ख) **व्याख्या-**

1. जननी निरखति .... सिखी सी।।

ग) **काव्य सौन्दर्य-**

1. कबहुं समुझि .... प्रीति सिखी सी।।

2. राघौ एक .... बार-बार चुचकारी।

जायसी

बारहमासा

1. अगहन मास .... धुआं, हम लाग।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत छंद सूफी कवि जायसीकृत प्रबंधकाव्य 'पद्मावत' के बारह मासा का अंश है। इसमें नागमति की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण है। अगहन महीने की विशेषताएँ बताते हुए नागमति पर उसके प्रभाव की अभिव्यक्ति है। शीतऋतु के इस माह की रात लम्बी और दिन छोटा होता है। प्रियतम के वियोग में नागमति को दिन भी रात की ही भांति दुखदायी प्रतीत होती है। विरह वेदना असहनीय है। उसका शरीर विरह अग्नि में जलकर भस्म हो रहा है। नागमति का रूप, रंग, यौवन और सौन्दर्य प्रिय के साथ चला गया। शीत से बचने के लिए जगह-जगह जलाई गई आग नायिका के शरीर को और मन को दग्ध कर रही है। नागमति की इस अवस्था से, उसकी वेदना से, रत्नसेन (नागमति का पति) अनभिज्ञ है। विरह अग्नि का धुआँ लगने के कारण उसका शरीर काला पड़ गया है। वह भँवरे और काग से अपने प्रिय तक उसका संदेश पहुँचाने का अनुरोध करती है कि नायिका विरह में जल गई है और उसके धुँए से वे काले पड़ गए हैं।

2. पूस जाड़....... समेटहु पंख।

व्याख्या बिन्दु- पूस मास की शीत में विरह के कारण नागमति की मरणासन्न अवस्था की अभिव्यंजना है। शीत का प्रभाव बढ़ गया है, सूर्य के ताप में भी कमी प्रतीत होती है। इस समय शीत और पति वियोग के कारण नागमति का हृदय कांप रहा है। बिस्तर भी हिमालय समान ठंडा/बर्फीला हो गया है। भयंकर सर्दी से बचने का एक मात्र उपाय प्रिय से मिलन है। नागमति का कहना कि चकवा और चककी केवल रात को वियोग में रहते है, प्रात: उनका पुन: मिलन हो जाता है। मेरा और प्रिय का मिलन नहीं होता। इस अवस्था में जीवित रहना कठिन है। विरह रूपी बाज, मुझ निरीह पर झपटने के लिए तत्पर है। शरीर का सारा रक्त अश्रु बन बह गया है। नागमति पति से मरणासन्न विरही पक्षी के (अपने) पंखों को समेटने का आग्रह करती है। प्रिय मिलन की उत्कट इच्छा की अभिव्यक्ति है।

3. लागेउ माँह............... उड़ावा झोल।।

व्याख्या बिन्दु - माघ महीने में नागमति की विरह अवस्था, उसके दुख, वियोग की अभिव्यक्ति है। माघ महीने की भयंकर सर्दी (पाला पड़ने वाली) का चित्रण किया गया है। अत्याधिक शीत से बचने का एक मात्र उपाय प्रिय मिलन है, जो कि सूर्य के ताप के समान है। जिस प्रकार माघ महीने में फूलों में रस भरना आरंभ होता है, उसी प्रकार मेरा हृदय भी भावनाओं से ओत-प्रोत है। नागमति प्रियतम से भ्रमर रूप में आकर मिलने का आग्रह करती है। शीत के कारण नेत्रों से बहते अश्रु ओले के समान प्रतीत होते हैं। हवा चलने से गीले वस्त्र बाण की भांति चुभ रहे हैं। पति वियोग में नागमति न तो किसी प्रकार का श्रृंगार करती है और न ही आभूषण धारण करती है। विरह वेदना के कारण शरीर दुर्बल, तिनके की भांति हल्का हो गया है। जिसे विरहाग्नि जलाकर राख की भाँति उड़ाना चाहती है।

4. फागुन पवन .... धरैं जहँ पाउ।।

व्याख्या बिंदु- फागुन मास में नागमति के विरह की चरम सीमा की अभिव्यक्ति है। प्रिय मिलन की उत्कट इच्छा एवं उनके प्रति अनन्य प्रेम की अभिव्यंजना है। मिलन के इस मौसम में विरह असहनीय है। नागमति का शरीर पत्तों के समान पीला पड़ गया है। पौधे नवीन पत्तों और कोंपलों से भर रहे हैं। लोग परस्पर फाग खेल रहें हैं, गायन और नृत्य में मग्न हैं। सभी का हृदय उल्लास से भरा हुआ है। नागमति को ऐसा प्रतीत हो रहा है कि होली उसी के हृदय में जल रही है। उसका शरीर जल कर राख हो गया है। उसे इस बात का कोई दु:ख नहीं है। वह पवन से अनुरोध करती है कि मेरे शरीर की राख को उड़ा कर प्रिय के मार्ग में बिछा दे, राख पर चलने से मुझे चरण स्पर्श का अनुभव होगा।

शिल्प सौन्दर्य-

भाषा अवधी, चौपाई दोहा छन्द, सूफी काव्य की मसनवी शैली, विप्रलंभ श्रृंगार रस (वियोग श्रृंगार) अलंकार-अनुप्रास, उत्प्रेक्षा (जरै विरह बाती, जानहूं सेज हिमवचल बूढ़ी) उपमा (तन जस मोरा, क्रेन नीरू) रूपक (बिरह सैचान, विरह पवन), विरोधाभास (सियरि अग्नि) नागमति के विरह का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन।

विशेष- बारह मासा में रत्नसेन और नागमति के लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम (आत्मा-परात्मा के मिलन) की अभिव्यंजना है।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1. अगहन मास में नागमति की विरह दशा का वर्णन कीजिए।
2. नागमति किसको और क्यों अपना संदेशवाहक बनाती है?
3. माघ महीने में विरह असहनीय क्यों है तथा नागमति की अवस्था कैसे हो गई है?
4. फागुन मास में नागमति किससे और क्या अनुरोध करती है? इस अनुरोध से उसकी किस भावना का परिचय मिलता है?
5. चकवा और चकवी के उदाहरण से नागमति की किस व्यथा की अभिव्यक्ति हुई है?
6. वृक्षों से पत्तियाँ तथा वनों से ढाखे किस माह में गिरते हैं इससे विरहिणी का क्या संबंध है?

ख) काव्य सौन्दर्य

1. सियरि अग्नि .... धुआँ हम लाग।।
2. बिरह सैचान .... नहीं छाँड़ा।।
3. रकत ढरा .... समेटुं पंख।।

4. पिय सौं .... धुआँ हम लाग।। 5.

5. यह तन जारौं.................... धरैं जहँ पाउ।।

6. तुम्ह बिन्दु .... उड़ावा झोल।।

विद्यापति

पद

1. के पतिआ .... कातिक मास।।

व्याख्या बिन्दु – प्रस्तुत पद में सावन मास में नायिका की विरह वेदना का चित्रण है। कृष्ण गोकुल त्याग मथुरा चले गए हैं। विरहिणी राधा अपनी सखी से पूछती है कि क्या कोई ऐसा नहीं है जो पिया तक मेरा संदेश ले जाए। श्री कृष्ण जाते समय मेरा हृदय अपने साथ ले गए हैं। नायिका का हृदय वियोग के असह्य दु:ख को सहन नहीं कर पा रहा है। नायिका को लगता है कि उसके दारूण दु:ख पर जगत विश्वास नहीं करेगा। ऐसे में कवि विद्यापति राधा को धैर्य और आशा धारण करने के लिए कहते हैं। और उसे विश्वास दिलाते हैं कि कार्तिक मास में उनका मिलन अवश्य संभव होगा।

2. सखि हे.......... मीलल एक।

व्याख्या बिन्दु – नायिका कहती हैं कि प्रेम के अनुभव और आनन्द के प्रतिक्षण नूतन स्वरूप वर्णनातीत है। आजीवन कृष्ण दर्शन पर भी नेत्र अतृप्त हैं। उनकी मधुर वाणी, को सुनने के लिए कान सदा उत्सुक रहते हैं। वाणी/वचनों और प्रेम की चिर नवीनता के कारण अनुभव सम्पूर्ण नहीं है। मिलन की तीव्र इच्छा सदा बनी रहती है। प्रेम का वास्तविक स्वरूप जानना कठिन है। विद्यापति कहते हैं कि लाखों व्यक्तियों में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसका प्रेमानुभव सम्पूर्ण है, अर्थात वह तृप्त है। प्रेम में पूर्ण संतोष असंभव है क्योंकि प्रेमानुभूति नित्य नवीन होती है।

3. कुसुमित कानन .... लखिमादेइ–रमान।।

व्याख्या बिन्दु– सखी राधा की विरह वेदना का वर्णन उनके प्रियतम कृष्ण के सामने कर रही है। कमल मुखी सुन्दरी राधा खिले फूलों को देखकर आँखे मूँद लेती है तथा कोयल की मधुर आवाज को सुनकर कान ढक लेती है। मिलन के प्रतीक दृश्य राधा के लिए कष्टदायी है। राधा का शरीर कृष्ण वियोग में अत्यंत दुर्बल और शक्तिहीन हो गया है। अश्रु पूरित नेत्र प्रतिपल कृष्ण की प्रतीक्षा करते हैं। विरह में राधा का शरीर कृष्ण पक्ष की चौदस के चांद के समान क्षीण हो गया है।

विद्यापति कहते हैं राजा शिवसिंह विरह के प्रभाव से परिचित हैं, इसी कारण लाखीमा देवी के साथ रमण करते हैं।

शिल्प सौन्दर्य

भाषा मैथिली, वियोग श्रृंगार रस, माधुर्य गुण।,अलंकार – अनुप्रास, यमक (हरि–हर), रूपक (कमल मुखी), उपमा (चौदसि चांद समान) परिकर (गुन सुंदरि), विरोधाभास (लाख...... गेल) राधा के विरह का, उसकी मनोदशा का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन।

अभ्यास कार्य

क) 1. राधा के दु:ख का कारण क्या है?

2. कोयल और भ्रमर के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है?

3. राधा के प्राण तृप्त न होने का क्या कारण है?

ख) व्याख्या-

1. जनम अवधि .... परस न गेल।।

2. कुसुमित कानन .... झांपइ कान।।

ग) काव्य सौन्दर्य-

1. मोर मन .... अपजस लेल।।
2. तोहर बिरह .... चौदसि चांद समान।।
3. कुसुमित कानन .... झांपइ कान।।
4. सेह पिरिति अनुराग .... नूतन होय

केशवदास

रामचंद्रिका

(क) दंडक

बानी जगरानी .... तदपि नई नई।

व्याख्या बिन्दु - प्रस्तुत पंक्तियों में केशवदास ने माँ सरस्वती की उदारता और वैभव का गुणगान किया है। देवी सरस्वती की उदारता अपरंपार है उसे शब्दों में बांध कर सीमित नहीं किया जा सकता। वह सदैव नयापन लिए हुए है। अत: न तो कोई उसका गुणगान कर सका है, न कर सकता है और न कोई कर सकेगा। यह करने में देवता, सिद्ध, ऋषिराज, अनुभवी, तपस्वी भी हार चुके हैं। चार मुख वाले ब्रह्मा जी, पांच मुख वाले शिवजी तथा षट्मुख कार्तिकेय (पति, पुत्र तथा नाती)हैं। वे भी उनकी महिमा का वर्णन नहीं कर पाये क्योंकि माँ सरस्वती की उदारता हर क्षण हर पल नए-नए रूपों में परिवर्तित होती है। उनकी उदारता अपरिमित है इसलिए उसका वर्णन असंभव है।

ख. लक्ष्मण-उर्मिला

सब जाति फटी .... जटी पंचवटी।

व्याख्या बिन्दु- इस छंद में कवि ने पंचवटी के माहात्मय का सुंदर वर्णन किया है। लक्ष्मण और उर्मिला के संवाद द्वारा पंचवटी के सात्विक वातावरण का चित्रण करते हुए कवि कहता है कि यहाँ आने पर दु:खों का निवारण होता है। कपटी और धूर्त व्यक्ति निष्कपट और सदाचारी बन जाते हैं, पापियों के पाप नष्ट हो जाते हैं। ज्ञान की प्राप्ति होती है। प्राकृतिक सौन्दर्य से सुख की प्राप्ति तथा मोक्ष का आनंद उत्पन्न होता है। कवि कहता है कि पंचवटी शिव की जटाओं के समान कल्याणकारी है।

ग) अंगद

सिंधु तर यो .... लंका जराई-जरी।

व्याख्या बिन्दु- इन पंक्तियों में मंदोदरी (रावण की पत्नी) द्वारा श्री रामचंद्र के बल, महिमा एवं प्रताप का वर्णन किया गया है। मंदोदरी अपने पति रावण से सीता जी को श्री राम के पास वापस भेजने का अनुरोध करती है किंतु रावण हठी होने के कारण सीता जी को श्रीराम के पास वापस भेजने को तैयार नहीं था। अत: मंदोदरी रावण को उलाहना देकर उसे श्रीराम के बल एवं प्रताप का आभास करा रही है। वह कहती है कि उनके वानर अर्थात् हनुमान ने समुद्र लांघ लिया, लक्ष्मण द्वारा सीता की रक्षा के लिए खींची गई रेखा को रावण नहीं लांघ सका, रावण हनुमान को बाँध नहीं सका, श्री राम की सेना ने समुद्र बाँध कर पुल बना लिया। तुमने (रावण ने) हनुमान की पूँछ को जलाना चाहा वह तो संभव न हो सका पर लंका जल गई। मंदोदरी के कहने का तात्पर्य यह है कि रावण, श्रीराम के समाने तुम्हारा बल और प्रताप बहुत कम है अत: तुम सीता को वापस भेज दो।

शिल्प सौन्दर्य- भाषा- ब्रजभाषा, तत्सम् शब्दावली, **अलंकार**-अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, अतिशयोक्ति, यमक (धूजटी जटी) रूपक- (दुख की दुपटी, अघऔघ की बेरी), सवैया छंद।

अभ्यास कार्य

प्रश्न क)

1. माँ सरस्वती की उदारता किसी से भी क्यों नहीं बखानी गई?
2. चारमुख, पांच मुख और षटमुख किन्हें कहा गया है? और उनका देवी सरस्वती से क्या संबंध है?
3. कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?
4. 'तेलनि तूलनि पूंछि जरी न जरी, जरी लंक जराई-जरी' के साथ कौन सी घटना जुड़ी है?

ख) व्याख्या-

बानी जगरानी .... तदपि नई नई।।

ग) काव्य सौन्दर्य-

1. सब जाति .... छूटी चटी।
2. अघऔघ की बेरी .... जटी पंचवटी।।
3. तेलनि तूलनि .... लंक-जराई-जरी।

घनानंद

(क) कवित्त

बहुत दिनान .... सुजान को।।

व्याख्या बिन्दु - इस कवित्त में कवि अपनी प्रेयसी सुजान से मिलने की अभिलाषा प्रकट कर रहा है। बहुत दिन तक प्रेयसी के आने की प्रतीक्षा करते-करते तथा उस छबीले मनभावन के शीघ्र आने की सूचना जैसी झूठी बातों पर विश्वास करने से कवि उदास हो गया है। कवि के 'चाहत चलन ये संदेसों ले सुजन को' कहने से तात्पर्य यह है कि सुजान के दर्शन की अभिलाषा में कवि के प्राण अधरों तक आकर अटक गए हैं क्योंकि यह सुजान के आगमन की सूचना लेने के पश्चात ही प्रस्थान करना चाहते है।

आनाकानी आरसी .... कान खोलि है।

व्याख्या बिंदु- प्रस्तुत कवित्त में कवि नायिका से कहता है कि तुम कब तक मिलने में आनाकानी करती रहोगी। मुझमें और तुममें एक प्रकार की होड़-सी चल रही है। कवि मौन होकर यह देखना चाहता है कि सुजान कब तक कवि को प्रति उत्तर न देने के प्रण का पालन कर सकती है। कवि को पूर्ण विश्वास है कि उसके हृदय की 'कूक भरी मूकता' नायिका को बोलने के लिए बाध्य कर देगी। कवि मुहावरेदार भाषा में प्रेयसी की निष्ठुरता पर व्यंग्य करता है कि वह कब तक कानों में रुई डालकर बैठी रहेगी, कभी तो उसकी पुकार उसके कानों तक पहुँचेगी।

शिल्प-सौंदर्य- भाषा- ब्रजभाषा, अनुप्रास अलंकार, पुनरुक्ति प्रकाश, श्लेष (सुजान और घनआनंद), मुहावरों का प्रयोग (कूक भरी मूकता), (पैज पड़ी, रुई दिए रहोगै), वियोग श्रृंगार रस, कवित्त छंद।

(ख) सवैया

तब तौ छवि .... बीच पहार परे।

व्याख्या बिंदु - प्रस्तुत सवैये में कवि ने विरह और मिलन की अवस्थाओं की तुलना की है। कवि कहता है कि संयोग के समय में तो हम तुम्हें देखकर जीवित रहते थे, अब वियोग में अत्यंत व्याकुल रहते हैं। कवि कहता है कि संयोग की अवस्था में जो नेत्र पहले तो प्रेयसी सुजान के सौन्दर्य-रस का पान करके जिया करते थे, वही वियोग की अवस्था में सोच-सोच कर जले जा रहे है, अर्थात् संयोगकाल में नेत्र तथा हृदय अति प्रसन्न रहते थे और अब वियोग के समय वे दु:ख के कारण जले जा रहे हैं। सुजान के बिना सुख के सभी साजो-सामान व्यर्थ लग रहे हैं। जहाँ संयोग की अवस्था में हार भी पहाड़ के समान मिलन में बाधक लगता था वहीं वियोगावस्था में प्रेम के मध्य पहाड़ (अनेक व्यवधान, बाधाएँ) आ गए हैं।

पूरन प्रेम को .... बांचि न देख्यौ।

व्याख्या बिंदु- प्रस्तुत सवैये में कवि ने अपनी प्रेयसी सुजान को पत्र लिखकर उसके प्रति प्रेम का

प्रकटीकरण किया है। उस पत्र में कवि ने प्रेयसी के चरित्र के सुन्दर स्वरूप का विशेष रूप से चित्रण किया था। कवि ने हृदय रूपी प्रेम पत्र पर किसी अन्य कथा का उल्लेख तक न किया। ऐसे हृदय रूपी पत्र को जब अपनी प्रेयसी सुजान को सप्रेम भेंट किया तो प्रेयसी सुजान ने उसे पढ़कर भी नहीं देखा और अनजान की तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

शिल्प-सौन्दर्य- भाषा- ब्रजभाषा, अलंकार-अनुप्रास, यमक (तोष- आनंद, संतोष), श्लेष (घन आनंद व सुजान), रूपक (हियो हितपत्र), वियोग श्रृंगार रस, मुहावरों का प्रयोग, सवैया छंद।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1. घनानंद ने "चाहत चलन से संदेसो लै सुजान को" क्यों कहा है?
2. कवि मौन होकर प्रेमिका के कौन से प्रण पालन को देखना चाहता है?
3. पठित सवैये के आधार पर बताइये प्राण पहले कैसे पल रहे थे और अब क्यों दुखी हैं?
4. कवि घनानंद ने किस प्रकार की पुकार से 'कान खोलिहैं' की बात की है?

(ख) व्याख्या-

1. बहुत दिनान को .... लै सुजान को।।
2. पूरन प्रेम को .... बांचि न देख्यौ।
3. आनाकानी आरसी .... कान खोलिहैं।।

(ग) काव्य-सौन्दर्य-

1. अधर लगे हैं आनि .... लै सुजान को।
2. रुई दिए रहोगे .... कान खोलिहैं।
3. जब तौ छवि .... महादु:ख दोष भरे।
4. तब हार पहार .... पहार परे।
5. सो घनआनंद .... बांचि न देख्यौ।

पूरक पुस्तक - अंतराल
सूरदास की झोपड़ी
-प्रेमचन्द

स्मरणीय बिन्दु

सूरदास की झोपड़ी 'प्रेमचन्द के उपन्यास' रंगभूमि' का एक अंश है। 'सूरदास' इस का मुख्य पात्र है। वह अंधा है तथा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह करता है। उसके साथ एक बालक मिठुआ भी रहता है। उसे गांव के जगधर और भैरों अपमानित करते रहते है।? भैरों की पत्नी का नाम सुभागी है। भैरों उसे मारता-पीटता है। वह ताड़ी पीता है और नशे में चूर होकर सुभागी को पीटकर अपना पुरुषार्थ दिखाता है। उसकी मारपीट से तंग आकर सुभागी सूरदास की झोपड़ी में शरण ले लेती है। भैरों उसे मारने सूरदास की झोपड़ी में घुस आता है किंतु सूरदास के हस्तक्षेप के कारण उसे मार नहीं पाता। इस घटना को लेकर पूरे मोहल्ले में सूरदास की बदनामी होती है। जगधर और भैरों सूरदास के चरित्र पर उंगली उठाते हैं। इस घटनाचक्र से सूरदास फूट-फूटकर रोता है। जगधर भैरों को उकसाना है क्योंकि वह सूरदास से ईर्ष्या करता है। सूरदास और सुभागी के संबंधों को लेकर पूरे मोहल्ले में हुई बदनामी से भैरों स्वयं को अपमानित अनुभव करता है और बदला लेने का निश्चय करता है। एक दिन वह सूरदास के रुपयों की थैली उठा लाता है तथा रात को झोपड़ी में आग लगा देता है।

सूरदास की झोपड़ी में आग लगने पर जगधर उससे पूछता है- ''सूरे, क्या आज चूल्हा ठंडा नहीं किया था?'' इस पर सूरदास व्यंग्य में उत्तर देता है- चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?'' सूरदास की मन:स्थिति अत्यंत निराशाजनक थी। उसे उसकी जीवन भर की पूंजी के जल जाने का गम था। इससे उसकी सारी योजनाओं पर पानी फिर गया था। अब उसे अपनी सारी मनोकामनाएं बिखरती नजर आ रही थी। वह बहुत दु:खी था, विस्मित था तथा निराशा, ग्लानि चिंता और क्षोभ के सागर में गोता लगा रहा था। इसके बावजूद उसे मन में किसी से बदला लेने की भावना न थी।

सूरदास की झोपड़ी फूस की बनी हुई थी। इस झोपड़ी के साथ गहरा लगाव था। झोपड़ी के साथ ओर सूरदास की अभिलाषाओं का अंत हो गया था। सूरदास संचित धन से पितरों का पिडंदान करना चाहता था, मिठुआ का ब्याह और गाँव के लिए एक कुआं बनवाना चाहता था। उसकी झोंपड़ी

में आग लग जाने से अब उसकी यह जमा पूँजी भी नष्ट हो गई। झोंपड़ी के जल जाने के बाद जो राख शेष बची थी। वह देखने में फूस की राख थी, पर वास्तव में वह इन अभिलाषाओं की राख थी जो इसके साथ दफन हो गई थी।

सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त रखना चाहता था क्योंकि एक अंधे भिखारी के लिए गरीबी इतनी लज्जा की बात नहीं, जितना धन का होना। इसलिए रुपयों की थैली को अपना मानने से इंकार कर देता है। भैरों द्वारा रुपये चुराए जाने पर सूरदास सोच रहा था- रुपये मैंने ही तो कमाए थे, क्या फिर नहीं कमा सकता? यही न होगा, जो काम इस साल होता, वह कुछ दिनों के बाद होगा, वे मेरे रुपये थे ही नहीं. शायद पिछले जन्म से मैंने भैरों के रुपये चुराए होंगे। यह उसी का दंड मिला है। यही सोचकर सूरदास अत्यंत दु:खी था। तभी उसे घीसू द्वारा मिठुआ को यह कहते सुनाई पड़ा- 'खेल में रोते हो।' यह चेतावनी सुनते ही सूरदास को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसका हाथ पकड़कर किनारे पर खड़ा कर दिया हो। उसे लगा कि यह जीवन भी तो एक खेल है और मैं इस खेल में रो रहा हूं। सच्चे खिलाड़ी कभी नहीं रोते, बाजी हारते हैं, चोट खाते है, धक्के सहते है, पर मैदान में डटे रहते हैं। खेल में रोना कैसा? खेल हंसने व दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नहीं। वह उठ खड़ा हुआ विजय-गर्व की तरंगब के साथ झोपड़ी की राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा। अब उसकी मनोदशा उस खिलाड़ी के समान हो गई जो एक बार हारने के बाद पुन: पूरे उत्साह से खेल को जीतने के लिए कमर कस लेता है।

मिठुआ सूरदास से पूछता है कि क्या हम बार-बार झोपड़ी बनाते रहेंगे तब सूरदास 'हाँ' में उत्तर देता है। अंत में मिठुआ पूछता है- और जो कोई सौ लाख बार (आग) लगा दे? तब सूरदास सरलता से उत्तर देता है- "हम भी सौ लाख बार बनाएंगे।" इस कथन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सूरदास में निर्णय लेने की क्षमता है, हार न मानने की प्रवृत्ति है, कर्मशील है, मन में प्रतिशोध लेने की भावना नहीं है, ग्रामीण जीवन एवं संघर्ष का प्रतीक, सहृदय एवं परोपकारी, दायित्व का पालनकर्ता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता? इस कथन के आधार पर सूरदास की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।
2. जगधर के मन में किस तरह ईर्ष्या का भाव जगा और क्यों?
3. सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?
4. भैरों द्वारा रुपये चुराए जाने पर सूरदास क्या सोचता है?
5. भैरों ने सूरदास की झोपड़ी क्यों जलाई?

6. सूरदास ने रुपयों किन-किन कामों के लिए जमा किए थे?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. सूरदास की झोपड़ी से लगने वाली आग की तुलना किससे की गई है, और क्यों?
2. सूरदास की झोपड़ी में आग किसने लगाई यह जानने के लिए जगधर क्यों बेचैन था?
3. सच्चे खिलाड़ियों के विषय में लेखक के क्या विचार है?
4. सुभागी रात भर कहां छिपी रही थी? उसे क्या दु:ख था?

निबंधात्मक प्रश्न

1. ''यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।'' संदर्भ सहित विवेचना कीजिए।
2. 'सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय-गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा' इस कथन के संदर्भ में सूरदास की मनोदशा का वर्णन कीजिए।
3. 'तो हम सौ लाख बार बनाएंगे।' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र की विवेचना कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. झोपड़ी की राख ठंडी होने पर सूरदास ने राख में क्या टटोला। उसका किसी से प्रतिशोध न लेना क्या इंगित करता है? पाठ के आधार पर समझाइए।
2. जगधर द्वारा पैसे लौटाने की बात करने पर भैरों ने क्या-क्या तर्क दिए। सूरदास के विषय में उनकी क्या विचारधारा थी?
3. 'अब चाहे वह मुझे मारे या निकाले पर रहूँगी उसी के घर'-कथन के संदर्भ में सुभागी के चरित्र की विवेचना कीजिए।

आरोहण

– संजीव

स्मरणीय बिन्दु

'आरोहण' संजीव की एक ऐसी कहानी है जो पहाड़ी क्षेत्रों के मेहनतकश लोगों की जिंदगी को रेखांकित करती है। आरोहण कहानी में लेखक ने पर्वतारोहण की जरूरत और वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया है। पर्वतीय प्रदेश के रहने वालों के जीवन-संघर्ष तथा प्राकृतिक परिवेश से उनके संबंधों को चित्रित किया है। उसने दर्शाया है कि किस तरह पर्वतीय प्रदेशों में प्राकृतिक आपदा, भूस्खलन, पत्थरों के खिसकने से वहाँ का पूरा जीवन एवं समाज नष्ट हो जाता है। 'आरोहण' पहाड़ी लोगों की जीवनचर्या का भाग है, किन्तु आश्चर्य तब होता है जब उन्हें यह पता चलता है कि यही आरोहण उनकी आजीविका का प्रबंध भी कर सकता है। इस कहानी में इस बात का भी वर्णन है कि मैदानी भागों की तुलना में पर्वतीय प्रदेशों की जिंदगी कितनी कठिन, जटिल, दुखद और संघर्षमय होती है।

प्रायः लोग रोजगार की तलाश में अपना घर छोड़कर बाहर जाते ही रहते हैं और रोजगार पाकर समय-समय पर अपने घर लौटते रहते हैं। तब उनके मन में हर्ष और गर्व का भाव होता है। पर रूपसिंह जब ग्यारह वर्ष पश्चात् अपने घर लौटता है तब उस पर एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक की भावना होने लगती है। वह मसूरी के पर्वतारोहण संस्थान में चार हजार रुपये महीने की अच्छी नौकरी पा गया था। जब वह गाँव लौटता है तब उसके साथ उसके गॉड फादर कपूर साहब का बेटा शेखर कपूर भी है। वे दोनों देवकुंड के स्टॉप पर उतरते है और रूपसिंह के गाँव माही जाने की योजना बनाते है। घर लौटते हुए रूपसिंह को लाज आ रही है क्योंकि वह घर से सामान्य परिस्थितियों में नहीं गया था, बल्कि बड़े भाई भूपदादा को धक्का मारकर घर से भाग गया थां अपनत्व की भावना इसलिए क्योंकि गाँव में उसका अपना परिवार रहता है। शेखर के सामने झिझक इसलिए हो रही थी क्योंकि गाँव में अभी तक पक्की सड़क नहीं बन पाई थी।

ग्यारह साल पूर्व जब गाँव में भू-स्खलन हुआ तथा भूपसिंह के माँ, बाबा, खेत, घर सब मलवे में दब गए। किसी तरह भूपदादा बच गया। कोई सहारा न होने के कारण धीरे-धीरे मलवा हटाया और थोड़ी बहुत खेती शुरू की। शैला और भूप दोनों ने मिलकर मेहनत की। दोनों के संयुक्त प्रयासों से खेती बढ़ती चली गई। बर्फ जमी न रहे, इसके लिए उन्होंने खेतों को ढलवां बनाया। हिमांग पर्वत पर चढ़कर उन्होंने झरना देखा, जो सूपिन नदी में गिर रहा था। इसे मोड़ देने से उनकी पानी की समस्या

हल हो सकती थी। किन्तु बीच में पहाड़ था। फिर उन दोनों ने पहाड़ को काटकर बड़ी मेनहत से झरने को खेतों की तरफ मोड़ने में सफल हुए। उन्होंने अपनी मेहनत से नयी जिंदगी की कहानी लिख डाली।

सैलानी शेखर और रूपसिंह घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था। घोड़े वाला लड़का केवल 9-10 वर्ष का था। उसका नाम महीप था। वह अपन पिता भूपसिंह से नाराज होकर और अलग रहकर घोड़े की आय से जीवन-यापन कर रहा था। इतनी कच्ची उम्र, उस पर घोड़े वाल धंधा और ये खतरनाक रास्ते। हम जवान होकर भी घोड़े पर जा रहे हैं और यह पंद्रह किलोमीटर पैदल। यह एक प्रकार से बाल मजदूरी है। पेट के लिए इसे क्या-क्या नहीं करना पड़ता। पता नहीं यह बर्फ के दौरान क्या करता होगा? हम भी बाल मजदूरों के बारे में सोचते हैं। कोई भी बालक मजदूरी करता हुआ हमें अच्छा नहीं लगता। बच्चों की यह उम्र तो पढ़ने-लिखने और खेलने की होती है। ये ही बच्चे कल के नागरिक है देश का भविष्य हैं।

इसके पश्चात दोनों के बीच चढ़ाई की बातें होने लगी। पर्वतारोहण का प्रसंग छिड़ जाने के बाद रूपसिंह ने पत्थर की जाति का वर्णन किया। पत्थर की जाति से आशय यह है कि पत्थर किस प्रकार का है। पत्थर की जाति से ही उसकी मजबूती का पता चलता है। तभी उसमें चढ़ाई के लिए रस्सी को फंसाया जाता है। तभी सपोर्ट बनती है। पहाड़ों के विभिन्न प्रकार हैं- इग्नियस, मेटामारफिक, सिलिका, ग्रेनाइट, सैंडस्टोन। थोड़ी देर बार उन्हें पर्वतारोहण के अध्याय को बंद करके घोड़े पर बैठना पड़ा क्योंकि महीप हीरू-वीरू पर बैठने की जल्दबाजी कर रहा था। तभी रूपसिंह को शैला की याद आ गई। शैला इतनी सुंदर थी कि उसकी गुलामी बजा लाने में वह खुद को धन्य मानता, जबकि वो खुद बैठकर स्वेटर बुना करती। रूपसिंह उसकी भेंड़ें हाँका करता, उसके लिए बुरुस के फूल तोड़ लाता, जो उसे बेहद पसंद थे, सेब या आड़ू कहीं मिल गए तो सबसे पहले उसे लाकर देता। बदले में वह देवता का प्रसाद या मक्की की रोटी देती। जो स्वेटर बुना जा रहा था। वह भूप दादा के लिए था। आखिर तक उसे खुश रखने की तमाम कोशिशें बेकार चली जाती। इस 'लव स्टोरी' में वह तो राम-सीता के बीच लक्ष्मण की ही भूमिका निभा रहा था। जिस दिन भूप दादा नहीं आते थे उस दिन शैला को खुश रखने की तमाम कोशिशें बेकार चली जाती।

रूपसिंह ने मसूरी के पर्वतारोहण संस्थान में पहाड़ों पर चढ़ना भली प्रकार सीखा था। पर वहाँ वह आधुनिक उपकरणों की सहायता से पहाड़ों पर चढ़ता था। यहां सिर्फ पेड़-पत्थरों के नाम-मात्र सपोर्ट से शरीर का संतुलन बनाए रखना उसे कठिन प्रतीत हो रहा था। इसके अलावा यहां के पहाड़ और वहां के पहाड़ में अंतर भी था। यहां के पहाड़ की चढ़ाई खड़ी थी। यही कारण था रूपसिंह थोड़ी ही देर में हांफ गया था। इसक विपरीत रूप का बड़ा भाई भूपसिंह न जाने बनमानुष थे या रोबोट। वे चढ़ाई चढ़ते समय जिस धैर्य, आत्मविश्वास, ताकत और कुशलता से मांसपेशियों और अंगों का उपयोग कर रहे थे, वह रूपसिंह और शेखर के लिए हैरत की चीज थी। वे खुद तो ऊपर चढ़ ही रहे थे साथ ही अपने मफलर के सहारे रूप को भी खींचे लिए जा रहे थे। उनहें ऊपर पहुंचने

में घंटे भर का समय लगा। वहां रूप को छोड़कर फिर नीचे उतरे और उसी प्रकार शेखर को ऊपर लेकर आए। उनके इस साहस और आत्मविश्वास को देखकर रूपसिंह उनके सामने बौना पड़ गया था। भूपदादा स्नेहशील, धैर्यशाली, परिश्रमी था।

जब रूप सिंह ने बूढ़े तिरलोक सिंह को यह बताया कि पर्वतारोहण संस्थान पहाड़ पर चढ़ने की नौकरी के लिए उसे चार हजार रुपये प्रति मास तनख्वाह देती है तब बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब लगा क्योंकि पर्वतीय प्रदेशों में पहाड़ पर चढ़ना आम बात है। पहाड़ी लोग प्रतिदिन न जाने कितनी बार पहाड़ों पर चढ़ते और उतरते हैं उसे लगता है कि इस काम के लिए नौकरी पर रखना और चार हजार रुपये खर्च करना सरकार की मूर्खता है।

इस कहानी को पढ़कर हमारे मन में पहाड़ों पर स्त्री की दयनीय स्थिति की छवि बनती है। वह बहुत परिश्रमी एवं कामकाजी होती है। शैला विवाह से पूर्व भेंड़े चराती थी तथा खेती का काम करती थी। उसे भूपदादा के साथ मिलकर पहाड़ों की तथा खेती का काम करती थी। उसने भूपदादा के साथ मिलकर पहाड़ों को काटकर झरने का रूख मोड़ा। खेतीबाड़ी का विस्तार किया। पहाड़ी स्त्री कम पढ़ी-लिखी, सीधी सरल किन्तु स्वाभिमानी होती है। वह छल-कपट से दूर रहती है। पहाड़ी स्त्रियां भावुक होती हैं जैसे शैला ने की थी।

पहाड़ों में जीवन अत्यंत कठिन होता है। यहाँ के निवासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे-पानी की समस्या, ईंधन की कमी, शिक्षा के लिए उचित साधनों की कमी, रोजगार के साधनों में कमी, स्वास्थ्य सेवाओं में कमी, बिजली की पर्याप्त सुविधा नहीं। इन समस्याओं को दूर करके उनके जीवन स्तर को सुधारा जा सकता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पत्थर की जाति से लेखक का क्या आशय है? उसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखिए।
2. बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब क्यों लगा?
3. रूपसिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूपसिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया था?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. रूपसिंह घर लौटते हुए किस मनः स्थिति में था और क्यों?
2. 'राम और सीता की जोड़ी में मैं सिर्फ लक्ष्मण था।' इस कथन के पीछे रूपसिंह की कौन-सी पीड़ा छिपी थी?
3. 'आरोहण' कहानी का उद्देश्य बताइए।

4. पर्वतारोहण पर्वतीय प्रदेश के लोगों की आजीविका का साधन है। 'आरोहण' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

5. रूप ने भूपदादा को पहाड़ से क्यों धकेला था?

निबंधात्मक प्रश्न

1. पहाड़ों की चढ़ाई में भूपदादा का कोई जवाब नहीं। उनके चरित्र की विशेषताएं बताइए।

2. यूं तो प्रायः लोग घर छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं, परदेश जाते हैं। किन्तु लौटते समय रूपसिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक क्यों घेरने लगी?

3. शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई जिंदगी की कहानी लिखी?

4. सैलानी (शेखर और रूपसिंह) घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था? क्या आप भी बाल मजदूरों के बारे में सोचते हैं?

5. इस कहानी को पढ़कर आपके मन में पहाड़ों पर स्त्री की स्थिति की क्या छवि बनती है? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. 'पहाड़ों पर जन जीवन अत्यंत कठिन होता हैं'' पाठ के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

2. पर्वतीय प्रदेशों में भूस्खलन व पहाड़ों का खिसकना लोगों के जीवन को नष्ट कर देता है। ''आरोहण' कहानी के आधार पर विवेचना कीजिए।

3. पारिवारिक परिस्थितियों ने महीप को समय से पहले ही व्यस्क बना दिया था। इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

बिस्कोहर की माटी

-विश्वनाथ त्रिपाठी

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुत पाठ लेखक द्वारा लिखित उनकी आत्मकथा 'नंगातलाई का गाँव' का एक अंश से लिया गया है। लेखक ने अपनी आयु के कई पड़ाव पार करने के पश्चात अपने जीवन में माँ, गाँव और आसपास के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन करते हुए ग्रामीण जीवन शैली, लोक कथाओं, लोक मान्यताओं को पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश की है।

कोइयाँ एक प्रकार का जलपुष्प है। इसे कुमुद और कोकाबेली भी कहते हैं। यह पानी में उगता है। शरदऋतु में जहाँ-जहाँ भी पानी होता है, कोइयाँ फूल वहाँ उग जाता है। यह फूल बिसनाथ के गाँव में बहुत होता है। शरद की चाँदनी में सरोवरों में चाँदनी का प्रतिबिंब और खिली हुई कोइयाँ की पत्तियाँ एक हो जाती है। इसकी गंध अत्यंत मादक होती है। यह मुख्यत: शरद ऋतु में होता है।

लेखक पहले यह सोचा करता था कि कोइयाँ उनके यहाँ होती है। यह भ्रम तब टूटा जब एक बार वैष्णों देवी के दर्शन के लिए जाते समय पंजाब में रेलवे लाइन के दोनों ओर इसे खिले हुए देखा। शरद में ही हरसिंगार का फूल लगता है। गाँव के बच्चे ज्ञात-अज्ञात वनस्पतियों को छूते पहचानते थे। लेखक के अनुसार बच्चे का माँ से संबंध बिलकुल अलग होता है। बच्चा जन्म लेते ही अपने भोजन के रूप में माँ का दूध ही ग्रहण करता है। इसी दूध से उसका पोषण और विकास होता है। नवजात शिशु के लिए माँ का दूध अमृत के समान है। बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना ही नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन चरित्र होता है। इसी दूध का बच्चे के व्यक्तित्व पर, बच्चे के संस्कारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चा सुबकता है, रोता है, माँ को मारता है, माँ भी कभी-कभी मारती है, बच्चा माँ से चिपटा रहता है, माँ चिपटाए रहती है। माँ के पेट से रस, गंध, स्पर्श भोगता है, अपनी जगह ढूँढ़ता है। बच्चे के जब दाँत निकलते हैं तब हर चीज को दाँत से काटते हैं, यही टीसना है। चाँदनी रात में खटिया पर बैठी माँ जब बच्चे को दूध पिलाती है तब बच्चा दूध ही नहीं, चाँदनी को भी पीता है। उसे चांदनी माँ जैसी ही पुलक-स्नेह ममता देती है। माँ के अंग से लिपटकर बच्चे का दूध पीना, जड़ के चेतन होने यानी मानव जन्म लेने की सार्थकता है।

बिसनाथ अभी दूध पीता बच्चा था कि उसका छोटा भाई आ गया। उसका दूध कट गया। तब माँ के दूध पर छोटे भाई का कब्जा हो गया। बिसनाथ को पड़ोस की कसेरिन दाई ने पाला-पोसा

था। वे तीन बरस तक कसेरिन दाई के साथ लेटे चाँद को देखते रहे अर्थात् माँ के स्थान पर उसे कसेरिन दाई के सम्पर्क में रहना पड़ा। यह एक प्रकार से बिसनाथ पर अत्याचार था।

लेखक ने दिलशाद गार्डन के डियर पार्क में बत्तखों को देखा था। बत्तख जब अंडा देने को होती है तब पानी को छोड़कर जमीन पर आ जाती है। इसके लिए एक सुरक्षित बाड़ा था। उसने यह भी देखा कि एक बत्तख कई अंडों को से रही है। वह अपने पंख फैलाकर उन्हें दुनिया की नजरों से बचाकर रखती है। यही स्थिति माँ की भी होती है। माँ भी बच्चों का पालन-पोषण करती है उसे दुनिया की नजरों से बचाकर रखती है। बत्तख अंडों को अपनी चोंच से बड़ी सतर्कता, कोमलता से अपने डैनों के अंदर छुपा लेती है। इसी प्रकार माँ भी बच्चे को अपने अंग में छुपा लेती है। बत्तख की निगाह कौवे की ताक पर भी रहती है। बत्तख माँ और मानव-शिशु माँ की ममता अपने बच्चों पर होती है। यही दोनों में समानता है।

चिलचिलाती गर्मियों में लेखक सब को सोता पाकर भरी दोपहर में चुपचाप घर से बाहर निकल जाता। कभी लू भी लग जाती थी जिसके लिए माँ धोती या कमीज से गांठ लगाकर प्याज बांध देती थी। लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना पिया जाता, आम को भूनकर या उबाल कर गुड़ या चीनत में उसका शरबत पीना, देह में लेपना, नहाना किया जाता था। कच्चे आम को भूनकर या उबाल कर उससे सिर धोया जाता।

बिस्कोहर में बरसात अचानक नहीं आती। पहले बादल घिरते हैं, फिर उनमें गड़गड़ाहट होती है। फिर पूरा आकाश बादलों से ऐसे घिर जाता है कि दिन में ही अंधेरा हो जाता है। तबला, मृदंग और सितार का अनूठा संगीत मिश्रित होता है। बरसात कई दिन तक होने के कारण दीवार गिर गई, घर धंस गया। बरसात आती है तब सभी पशु-पक्षी पुलकित हो उठते हैं। पहली वर्षा में नहाने पर दाद-खाज, फोड़ा-फुंसी ठीक हो जाते है। बरसात में तरह-तरह के कीड़े निकल आते हैं। कभी-कभी उमस के कारण मछलियाँ मरने लगती हैं।

घास पात से भरे मैदानों, तालाब के आसपास नाना प्रकार के साँप मिलते हैं। साँप से डर लगता है। डोंड़हा और मजगिदवा विषहीन होते हैं। डोंड़हा को मारा नहीं जाता। उसे सांपों में वामन जाति का मानते हैं। धामिन भी विषहीन है। सबसे खतरनाक गोंहुअन है जिसे फेंटाश कहते हैं। 'घेर कड़ाइच', 'भटिहा' खतरनाक साँप होते हैं।

लेखक को प्रकृति से बहुत प्रेम है। इस पाठ में अनेक प्रकार के फूलों की जानकारी दी गई है। 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं। गाँव में अब भी अनेक रोगों का इलाज फूलों के द्वारा किया जाता है। गाँव में फूलों की गंध से साँप, महामारी, देवी, चुड़ैल आदि का संबंध जोड़ा जाता है। गुड़हल का फूल देवी का फूल माना जाता है। नीम के पत्ते और फूल चेचक में रोगी के पास रखे जाते हैं। बेर के फूल सूंघने से बर्रे, ततैया का डंक झड़ जाता है। आम के फूल भी अनेक रोगों में दवा का काम करते हैं।

लेखक के गाँव के पूरब टोले के पोखर में कमल खिलते हैं। हिंदुओं के यहाँ भोजन कमल-पत्र पर परोसा जाता है। कमल-पत्र को 'पुरइन' भी कहते हैं। कमल की नाल को 'भसीण' कहते हैं।

कमल-ककड़ी को सामान्यत: अभी भी गाँव में नहीं खाया जाता। कमल का बीज गट्टा अवश्य खाया जाता है।

लेखक अपने एक रिश्तेदार के घर बढ़नी गया था। उसने अपनी उम्र में काफी बड़ी औरत को देखा। बेशक दस वर्ष का था। वह औरत अत्यंत रूपवती थी। उस औरत के सौंदर्य का आकर्षक इस प्रकार हावी हुआ कि उसे समस्त प्रकृति में वही औरत नजर आने लगी। वह जूही की लता बन गई, चाँदनी के रूप में लगी, जिससे फूलों की खुशबू आ रही थी, तब प्रकृति सजीव नारी बन गई थी और बिसनाथ उसमें आकाश, चाँदनी, सुगंध सब कुछ देख रहे थे। प्रकृति उनके हृदय में बसी थी।

लेखक के पास अप्राप्ति की अनेक ऐसी स्मृतियाँ हैं। लेकिन जिस औरत को देखकर वह समस्त प्रकृति के सौंदर्य को भूल गया था उससे अपनी भावनाओं का इजहार न कर सका। वह सफेद रंग की साड़ी पहने रहती है। घने काले केश संवारे हैं। उसकी आँखों में पता नहीं कैसी आर्द्र व्यथा है। वह सिर्फ इंतजार करती है। संगीत, नृत्य, मूर्ति, कविता, स्थापत्य, चित्र की गरज हर कला रूप के अस्वाद में वह मौजूद है। लेखक के लिए हर दु:ख-सुख से जोड़ने की सेतु है। इस स्मृति के साथ मृत्यु का बोध सजीव तौर पर जुड़ा हुआ है।

आज माताएँ अपने नवजात शिशओं को अपना दूध नहीं पिलाना चाहतीं। इसके पीछे उनकी यह सोच है कि दूध पिलाने से शरीरिक बनावट पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा जो नौकरी करती हैं, वे अपने बच्चों को आया के सहारे छोड़ कर चली जाती हैं। जिससे बच्चे माँ के दूध से वंचित हो जाते हैं। इस प्रवृत्ति का माँ और शिशु पर बुरा प्रभाव पड़ता है। दोनों भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ पाते हैं। दूध पिलाना स्नेह का परिचायक है। माँ का दूध बच्चे के लिए पूर्ण भोजन है।

(लघूत्तरात्मक प्रश्न)

1. कोइयाँ किसे कहते हैं? उसकी विशेषताएं बताइए।
2. विश्वनाथ पर क्या अत्याचार हो गया?
3. गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए। क्या आप भी उन उपायों से परिचित हैं?
4. लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है?
5. बिस्कोहर में हुई बरसात को जो वर्णन बिसनाथ ने किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
6. ऐसी कौन-सी स्मृति है जिसके साथ लेखक को मृत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. बिस्कोहर गाँव में साँपों की प्रजातियाँ कौन-सी थी? उनके विषय में सोचकर लेखक को कैसा लगता था?

2. 'बच्चा दूध ही नहीं चाँदनी भी पी रहा है, चाँदनी भी माँ जैसी ही पुलक-स्नेह-ममता दे रही है।' आशय स्पष्ट कीजिए।

3. कमल का प्रयोग किस-किस रूप में किया जाता है?

4. करेसिन कौन थी? उसके साथ छत पर लेटकर तीन वर्ष के बिसनाथ को कैसा अनुभव होता था?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन-चरित्र होता है'। टिप्पणी कीजिए।

2. 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं।' कैसे?

3. 'प्रकृति सजीव नारी बन गई' इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताएँ स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. वर्तमान समय समाज में माताएँ नवजात शिशु को दूध नहीं पिलाना चाहती। बच्चे के लिए माँ का दूध क्यों आवश्यक है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

2. लेखक ने प्राकृतिक सौन्दर्य और प्राकृतिक आपदाओं का साथ-साथ वर्णन किया है। इस विरोधाभास से लेखक का क्या उद्देश्य है?

3. गाँव शहर की तरह सुविधायुक्त नहीं होते बल्कि प्रकृति पर अधिक निर्भर रहते हैं। पाठ के आधार पर ग्रामीण जीवन-शैली का वर्णन कीजिए।

अपना मालवा : खाऊ उजाड़ू सभ्यता में

–प्रभाष जोशी

स्मरणीय बिन्दु

यह पाठ जनसत्ता के 1 अक्टूबर 2006 के 'कागद कारे' स्तंभ से लिया गया है। इस पाठ में लेखक ने मालवा प्रदेश की मिट्टी, वर्षा, नदियों की स्थिति, उद्‌गम एवं विस्तार तथा वहाँ के जनजीवन एवं संस्कृति को चित्रित किया है। जो मालवा अपनी सुख समृद्धि और सम्पन्नता के लिए प्रसिद्ध था, वही अब खाऊ–उजाड़ू सभ्यता में फंसकर उलझ गया है। यह सभ्यता यूरोप और अमेरिका देन हैं इस पाठ में पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत किया है।

मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती है तब के जन–जीवन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। लोगों को आवागमन में परेशानी होती है। अब धरती ज्यादा पानी को सोख नहीं पाती है। बारिश के कारण गेहूँ ओर चने की फसल को बहुत फायदा होता है। सोयाबीन की फसल गल जाती है। कई नदियों में बाढ़ आ जाती है और उसका पानी शहरों में लोगों के घरों, दुकानों आदि में घुस जाता है। ज्यादा बरसात से लोग उकता जाते हैं।

मालवा में पहले काफी पानी गिरता था, पर अब वहां वैसा पानी नहीं गिरता। इसका एक कारण यह हो सकता है कि प्रकृति से बहुत छेड़छाड़ की जा रही है। उद्योगों से निकलने वाली गैसों ने पृथ्वी के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियत बढ़ा दियाहै। इससे मौसम में काफी परिवर्तन आ गया है। वायु प्रदूषण भी तेजी से फैलता जा रहा है। कारखानों ने पर्यावरण को बहुत अधिक प्रदूषित कर दिया है। इससे वर्षा पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है।

पश्चिमी शिक्षा के कारण, अति आत्मविश्वास के कारण, अज्ञानता, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की उपेक्षा के कारण आज के इंजीनियर यह समझते हैं कि वे पानी का बेहतर प्रबंध करना जानते हैं और उनकी तुलना में पहले के लोग कुछ नहीं जानते थे। पर वे भ्रम के शिकार हैं। वे तो समझते हैं कि ज्ञान तो पश्चिम के रिनेसां के बाद ही आया। उन्हें भारतीय इतिहास की जानकारी नहीं है। मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज, रिनेसां से बहुत पहले हो गए हैं। उन्हें पानी की समस्या का हल करना आता था। ये राजा जानते थे कि इस पठार पर पानी को रोकना होगा। इसके लिए इन सबने तालाब

बनवाए, बड़ी-बड़ी बावड़ियां बनवाई ताकि बरसात का पानी रुका रहे और धरती के गर्भ के पानी को जीवंत रखा जा सके। हमारे आज के नियोजकों तथा इंजीनियरों ने तालाबों का महत्व नहीं समझा और उन्हें गाद से भर जाने दिया और जमीन के पानी को पाताल से भी निकाल लिया। इससे नदी-नाले सूख गए। पग-पग पर नीर वाला मालवा सूख गया।

नवरात्रि की पहली सुबह में मालवा में घट स्थापना की तैयारी है। गोबर से घर आंगन लीपने और मानाजी के ओटले को रंगोली से सजाने की सुबह है। यह समय नहाने-धोने और सजकर त्योहार मनाने में लगने का है, किन्तु आसमान में गड़गड़ाहट हो रही थी। पूरे रास्ते भर छोटे स्टेशनों पर महिलाओं की भीड़ थी। लेखक को लग रहा था कि इस बार मानसून जाते हुए भी बरसने की धौंस दे रहा है।

लेखक ने ओंकारेश्वर में देखा कि नर्मदा पर सीमेंट कंक्रीट का विशाल राक्षसी बांध बनाया जा रहा है। बांध बनाऐ जाने से उसके बहते वेग में व्यवधान उत्पन्न किया जा रहा था। नदी वेग से बहुत सुन्दर लगती है। नर्मदा के किनारे पर टूटे पत्थर उसके बहाव को रोकने की कोशिश का वर्णन कर रहे थे। ज्योतिर्लिंग का वह तीर्थ धाम वह नहीं लग रहा था जो कहा जाता है। बांध के निर्माण में लगी हुई बड़ी-बड़ी मशीनें और गुर्राते हुए ट्रक नदी के किनारे खड़े हुए थे। यही कारण है कि नर्मदा बांध बनने से चिढ़ी हुई थी और तिनतिन-फिनफिन करती बह रही थी।

वर्तमान युग औद्योगिक विकास का युग है। सभ्यता तेजी से विकसित होती जा रही है। नदियों की पवित्रता गंदे नाले में बदल रही है। मनुष्य की बढ़ती जरूरतें व जनसंख्या ने कूड़ा-करकट नदियों में प्रवाहित करने के बहाने ढूंढ़ लिए हैं। उद्योग-धंधों का मलवा भी नदियों के प्रवाहित कर दिया जाता है। वर्तमान में कई गंदे नाले नदियों से जाकर मिल जाते हैं और जल-प्रदूषण का कारण बनते हैं। हिंदू-सभ्यता का विकास नदियों की पावन धारणा से जुड़ा है। जितनी भी पूजा-सामग्री होती है, वह नदियों में प्रवाहित कर दी जाती है। इस प्रकार ये नदियाँ सड़े नालों में बदल जाती है। शिप्रा, चंबल, नर्मदा, चोरल आदि नदियों के यही हाल है। विकास की सभ्यता ने इन नदियों को गंदे पानी के नाले में बदल दिया है। इसके अन्य कारण महत्वाकांक्षाओं का बढ़ना, धार्मिक, आस्थाएं, बढ़ती जनसंख्या आदि हैं।

आज जिसे पश्चिमी प्रभाव में आकर हम विकास की औद्योगिक सभ्यता कह रहे है वह वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है। विकास की इस अंधी दौड़ ने हमारी पूरी जीवन-पद्धति को तहस-नहस करके रख दिया है। इसके बीज, यूरोप तथा अमेरिका में हैं। वे खाऊ-उजाडू सभ्यता में विश्वास करते हैं। वहां कोई जीवन-मूल्य नहीं है। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें अपनें जन-जीवन से अलग कर दिया है। सही मायने में हम उजड़ रहे हैं। हमारे नदी-नाले सूख गए हैं, पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। जिसके कारण विकास की औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता बनकर रह गई है। इस विकास ने धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है। वातावरण को गरम करने वाली ये गैसे सबसे ज्यादा यूरोप और अमेरिका से निकली हैं। अमेरिका अपनी खाऊ-उज़ाडू जीवन-पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा।

'नयी दुनिया' समाचारपत्र की लाइब्रेरी से कमलेश जैन और अशोक जोशी ने धरती के वातावरण को गरम करने वाली इस खाऊ-उजाडू सभ्यता की जो कतरने निकाली हैं उनसे यह पता चलता है कि मालवा की धरती गंभीर क्यों नहीं है और क्यों यहां डग-डग रोटी और पग-पग नीर नहीं है। क्यों हमारे समुद्रों का पानी गरम हो रहा है? क्यों हमारी धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है? क्यों हमारे मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है? क्यों लद्दाख में बर्फ की जगह पानी गिरा? क्यों बाड़मेर के गांव डूब गए। क्यों अमेरिका में अधिक गर्मी पड़ रही है? इसका कारण है गैसों द्वारा तापमान का बढ़ना।

लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता सिर्फ मालवा तक न रहकर सार्वभौमिक हो गई है। अमेरिका की खाऊ-उजाडू जीवन पद्धति ने दुनिया को इतना प्रभावित किया है कि हम अपनी जीवन-पद्धति, संस्कृति, सभ्यता तथा अपनी धरती को उजाड़ने में लगे हुए। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें अपनी जड़-जमीन से अलग कर दिया है। पर्यावरण को विनाश से बचाने के लिए पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत किया जा सकता है। (1) घर का कूड़ा-करकट इधर-उधहर न फेंकें। (2) फैक्ट्रियों का मलवा तथा धुआं व शोर से बचकर रहा जाए। वृक्षों का रोपण किया जाए। आवश्यकताओं को सीमित किया जाए। यूरोपीय-सभ्यता का अनुकरण न किया जाए। 'मुड़ों प्रकृति की ओर, बढ़ो मनुष्यता की ओर' इस विषय में चेतना जागृत की जाए।

''मालवा धरती गहन गंभीर, डग-डग रोटी, पग-पग नीर'' पंक्ति में लेखक ने प्राचीन मालवा की उस स्थिति की चर्चा की है जो सुखी व समृद्धिशाली थी मिट्टी, वर्षा, नदियाँ सभी सुख का आधार थे। मालवा अपनी सुख-समृद्धि एवं सम्पन्नता के लिए विख्यात था। प्राचनी मालवा की धरती गंभीरता से प्राकृतिक सुषमा को उकेरती थी। कदम-कदम पर जीवन हरियाली का प्रतीक था। इतना पानी था जो मालवा की सुख-समृद्धि का आधार था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मालवा में जब बरसात की झड़ी लगी रहती है, तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या असर पड़ता है?
2. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था। उसके क्या कारण हैं?
3. 'मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज, रिनसों के बहुत पहले हो गए।' पानी के रखरखाव के लिए उन्होंने क्या प्रबंध किए?
4. 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर नर्मदा के विभिन्न रूपों का वर्णन कीजिए।
5. 'नयी दुनिया' की लाइब्रेरी से किस तथ्य का पता चलता है?
6. 'अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ-उजाडू जीवन पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा।' इस घोषणा पर अपनी टिप्पणी दीजिए।
7. नवरात्र की पहली सुबह को लेखक ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. लेखक ने शिप्रा नदी को कालिदास की शिप्रा क्यों कहा है। उसकी क्या विशेषता है?
2. बचपन में पितृपक्ष और नवरात्र पर लेखक ने पानी को किस रूप में देखा था?

निबंधात्मक प्रश्न

1. हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी को नाले बना रही है।' क्यों और कैसे?
2. हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी का प्रबंध जानते हैं और पहले जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे?
3. लेखक को क्यों लगता है कि 'हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है?' आप क्या मानते हैं?
4. धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. 'अपना मालवा' पाठ का उद्देश्य स्पष्ट करें।
2. लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता सिर्फ मालवा तक सीमित न होकर सार्वभौमिक हो गई है-स्पष्ट कीजिए।
3. आधुनिक औद्योगिक विकास हमें अपनी जड़-जमीन से अलग कर रहा है। पर्यावरण को विनाश से बचाने के लिए आपके विचार से क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं?
4. 'मालवा' धरती गहन गंभीर उग-डग रोटी पग-पग नीर' मालवा के विषय में यह कहावत क्यों कही गई है?

अभिव्यक्ति और माध्यम

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

स्मरणीय बिन्दु

- जनसंचार के आधुनिक साधनों में अखबार पढ़ने के लिए, रेडियो सुनने के लिए टी.वी. देखने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने एवं देखने तीनों के लिए प्रयुक्त होता है।
- अखबार को पढ़ने और रुककर उस पर सोचने में एक अलग तरह की संतुष्टि मिलती है, टी. वी. के दृश्य जीवंतता का अहसास कराते हैं, रेडियो सुविधानुसार कहीं भी ले जाया सकता है और इंटरनेट सूचनाओं के विशाल भंडार का अद्‌भुत माध्यम है। यही कारण है कि अलग-अलग माध्यम होने के बावजूद इनमें से कोई भी समाप्त नहीं हुआ और इन सभी माध्यमों का लगातार विस्तार और विकास हो रहा है।
- **प्रमुख जनसंचार माध्यम :-** मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट
- **मुद्रित(प्रिंट) माध्यम-** आधुनिक जनसंचार माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम है। मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई लेकिन आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं, इसका आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया। भारत में पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था। मुद्रित माध्यम के अंतर्गत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि आती हैं।
- **मुद्रित (प्रिंट) माध्यम की खूबियाँ-** लिखे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, दोबारा पढ़ने की सुविधा है, रुचि अनुसार खबर को पहले या बाद में पढ़ सकते हैं, लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं, चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है। लिखित भाषा का विस्तार है। **खामियाँ-** केवल साक्षरों के लिए, तुरंत घटी घटनाओं का प्रकाशन असंभव, सीमित शब्द सीमा एवं स्थान, प्रकाशन के पश्चात सुधार संभव नहीं।
- मुद्रित (प्रिंट) माध्यम में लेखन के लिए कई बातों पर विशेष ध्यान देना पड़ता है- भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान, प्रचलित भाषा का प्रयोग, समय सीमा एवं शब्दसीमा का ध्यान, अशुद्धियों को शुद्ध करना एवं लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना।
- **रेडियो** - श्रव्य माध्यम है। इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है। रेडियो श्रोताओं द्वारा संचालित माध्यम माना जाता है इसलिए इसमें श्रोताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है।

रेडियो मूलतः एक रेखीय माध्यम है। इसी आधार पर रेडियो समाचार बुलेटिन का स्वरूप, ढांचा और शैली तय होती है।

- रेडियो संचार का सुलभ एवं सस्ता माध्यम है, इसे कहीं भी ले जाया सकता है, निरक्षर एवं दृष्टिविहीन भी इसका लाभ उठा सकते हैं। रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं है बुलेटिन प्रसारण के समय का इंतजार करना पड़ता है। रेडियो में भ्रामक और अरुचिकर बुलेटिन को बंद किया जा सकता है।
- **रेडियो समाचार की संरचना**– रेडियो समाचार की संरचना उलटा पिरामिड शैली पर आधारित होती है जिसमें समाचार को तीन हिस्सों में बाँटा जाता है– 1. इंट्रो/मुखड़ा (खबर का मुख्य हिस्सा), 2. बॉडी– (घटते महत्वक्रम में समाचार लिखना), 3. समापन (प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ)

उल्टा पिरामिड शैली

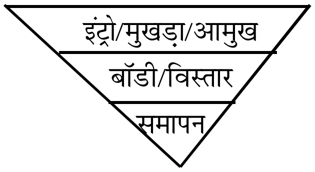

- **रेडियो समाचार लेखन की बुनियादी बातें**– साफ–सुथरी टाइप्ड कॉपी, उच्चारण में जटिल शब्दों का प्रयोग नहीं, अंकों को बोलने की सुविधा के लिए शब्दों में लिखें, संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग में सावधानी।
- **टेलीविजन**– देखने और सुनने का माध्यम है। इसमें दृश्यों की अहमियत सबसे ज्यादा है इसलिए टी.वी समाचार लेखन की बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन है। टेलीविजन के लिए लेखन में कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल किया जाता है। **खूबियाँ** – देखने एवं सुनने दोनों की सुविधा, जीवंतता, समाचारों का लगातार प्रसारण, तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी, प्रभावशाली।
- **कमियाँ** – भाषा–शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी, बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है, कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कभी–कभी सामाजिक उत्तेजना को भी जन्म दे सकता है, अपरिपक्व बुद्धि पर विपरीत प्रभाव संभव।
- **टी.वी. खबरों के विभिन्न चरण**– टी. वी. चैनल पर खबर देने का मूल आधार सूचना देना होता है। यह सूचना विभिन्न चरणों से गुजर कर दर्शक तक पहुँचती है। फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज, ड्राई एंकर, फोन–इन, एंकर–विजुअल, एंकर–बाइट, लाइव एंकर–पैकेज।
- रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा–शैली समाज के सभी वर्गों एवं स्तरों के अनुरूप होनी चाहिए। भाषा सरल एवं वाक्य छोटे हो। गैरजरूरी विशेषणों, कठिन शब्दों मुहावरों एवं भ्रामक शब्दों के स्थान पर सरल एवं आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हो। भाषा में प्रवाह हो, भाषा के स्तर एवं गरिम का ध्यान आवश्यक है।

- **इंटरनेट**- इंटरनेट ऐसा माध्यम है जिसका प्रयोग सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान प्रदान के लिए किया जा सकता है। समाचारों के संकलन, सत्यापन और पुष्टिकरण में इसका विशेष योगदान है।
- इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही इंटरनेट पत्रकारिता है। इसे वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है। विश्वस्तर पर इंटरनेट का प्रथम दौर 1982-1992, द्वितीय दौर 1993-2001 और 2002 से अब तक तृतीय दौर चल रहा है।
- भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर चल रहा है पहला दौर 1993 से तथा दूसरा 2002 से प्रारंभ माना जाता है। नई वेबभाषा- एचटीएमएल (हाईपर टेक्स्ट मार्क्डआप लैंग्वेज)।
- वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम, को जाता है। भारत की पहली साइट रीडिफ को माना जाता है। पत्रकारिता के लिहाज से एनडी. टी.वी., पायनियर, आजतक, टाइम्स ऑफ इंडिया, आईबीएन इत्यादि नियमित अपडेट होने वाली बेहतर साइट है।
- हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' से प्रारंभ हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। जागरण, अमर उजाला, नयी दुनिया, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि के वेब संस्करण उपलब्ध है। प्रभासाक्षी अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बी.बी.सी. है।
- हिंदी वेब जगत में कई पत्रिकाएँ- अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि चल रही हैं। हिंदी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या हिंदी फौंट की है। जब तक हिंदी 'की-बोर्ड' का मानकीकरण नहीं होता तब तक यह समस्या बनी रहेगी।
- इंटरनेट के माध्यम से एक सेकेण्ड में 56 किलोवाट यानी लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न (1 अंक)

1. जनसंचार के प्रमुख साधन कौन-कौन से हैं?
2. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन सा है?
3. मुद्रण की शुरुआत किस देश से हुई?
4. छापाखाना (प्रेस) का आविष्कार किसने किया?
5. भारत में पहला छापाखाना कब और कहां खुला?
6. भारत में 'छापाखाना' किसने और क्यों खोला?
7. मुद्रित माध्यम के अंतर्गत क्या-क्या आता है?
8. मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

9. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली में होती है?

10. समाचार कॉपी लेखन की कोई दो विशेषताएं बताइए?

11. टी.वी. के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त क्या है?

12. टी.वी. खबरों के प्रमुख चरण कौन-कौन से हैं?

13. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज से क्या तात्पर्य है?

14. 'एंकर पैकेज' क्या है?

15. टी.वी. के संदर्भ में 'नेट साउंड' से क्या अभिप्राय है?

16. दूरदर्शन समाचार वाचक के तीन गुण बताइए।

17. रेडियों एवं टेलीविजन समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए?

18. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है?

19. इंटरनेट पत्रकारिता के दो अन्य नाम बताइए।

20. नई वेबभाषा 'एचटीएमएल' का क्या अर्थ है?

21. इंटरनेट पत्रकारिता के लोकप्रिय होने का क्या कारण है?

22. इंटरनेट पत्रकारिता की दो नियमित अपडेट साइट के नाम लिखिए।

23. भारत की पहली पत्रकारिता साइट किसे माना जाता है?

24. वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किस साइट को जाता है?

25. हिंदी का संपूर्ण पोर्टल किसे माना जाता है?

26. हिंदी के किन्हीं चार अखबारों के नाम लिखिए जिनके वेब संस्करण उपलब्ध हैं।

27. कौन-सा अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ नेट पर उपलब्ध है?

28. आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट कौन सी है?

29. वेब में प्रकाशित किन्हीं दो साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

30. हिंद वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (5 अंक)

1. श्रोताओं और पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से जनसंचार का कौन-सा माध्यम सर्वाधिक सक्षम है? स्पष्ट कीजिए।

2. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन सा है? इसकी खूबियां और खामियां बताइए।

3. जनसंचार के एक प्रमुख साधन के रूप में रेडियो की भूमिका स्पष्ट करते हुए रेडियो समाचार की संरचना पर प्रकाश डालिए।

4. रेडियो के लिए समाचार लिखते समय किन-किन बुनियादी बातों पर ध्यान देना चाहिए?

5. जनसंचार के माध्यम के रूप में टेलीविजन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि टी.वी. पर प्रसारित समाचार किन-किन चरणों से गुजर कर दर्शकों तक पहुंचते हैं?

6. रेडियो एवं टेलीविजन समाचार लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?

7. इंटरनेट पत्रकारिता के स्वरूप एवं इतिहास पर प्रकाश डालिए।

8. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए 'हिंदी नेट' संसार का परिचय दीजिए।

9. 'इंटरनेट पत्रकारिता सूचनाओं को तत्काल उपलब्ध कराता है, परंतु इसके साथ इसके दुष्परिणाम भी हैं'' स्पष्ट कीजिए।

10. दूरदर्शन, इंटरनेट एवं प्रिंट माध्यम की विशेषताओं की तुलना कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. सिद्ध कीजिए कि संचार माध्यम जनता को जागरुक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. 'संचार वस्तुत: एक दुधारी अस्त्र है जिसका उपयोग बड़ी सावधानी से होना चाहिए।'' इस कथन पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

पत्रकारिता लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

स्मरणीय बिन्दु

- लोकतंत्र में अखबार एक पहरेदार, शिक्षक और जनमत निर्माण का कार्य करते हैं। अखबार पाठकों को सूचना देने, जागरूक और शिक्षित बनाने, उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। पत्रकार इस दायित्व की पूर्ति के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

- पत्रकारीय लेखन एवं सृजनात्मक साहित्यिक लेखन एक दूसरे से भिन्न हैं। पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं और मुद्दों से है जबकि साहित्यिक सृजनात्मक लेखन कल्पना को भी स्थान देता है। पत्रकारीय लेखन अनिवार्य रूप से तात्कालिक और अपने पाठकों की रुचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है जबकि साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है। पत्रकारिता के विकास में जिज्ञासा का मूलभाव सक्रिय होता है।

- अच्छे लेखन के लिए कई बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे- सीधी, सरल एवं प्रभावी भाषा का प्रयोग, गूढ़ से गूढ़ विषय की प्रस्तुति सरल, सहज और रोचक हो, विषय तथ्यों द्वारा पुष्ट हो, लेख उद्देश्य पूर्व हो।

- **पत्रकार के प्रकार** - 1. पूर्णकालिक (किसी समाचार संगठन के नियमित वेतनभोगी), 2-अंशकालिक (एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाले), 3. फ्रीलांसर (स्वतंत्र पत्रकार जो भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखे।

- किसी भी समाचार को लिखते हुए मुख्यत: छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है क्या हुआ? किसके साथ हुआ? कहां हुआ? कब हुआ? कैसे और क्यों हुआ? इन्हीं छह प्रश्नों को समाचार लेखन के छह ककार कहा जाता है। क्या, कौन, कब, कहां इंट्रो में, कैसे और क्यों बॉडी में तथा तथ्य और स्रोत समापन में होते हैं।

समाचार लेखन के छह प्रकार

मुखड़ा/आमुख - क्या, कौन, कब, कहाँ

बॉडी/विस्तार - कैसें, क्यों

समापन - तथ्य, स्रोत

- **फ़ीचर**- फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से मनोरंजन करना होता है। फ़ीचर लेखन की शैली काफी हद तक कथात्मक शैली की तरह होती है। आकार रिपोर्ट से बड़ा होता है। एक अच्छे और रोचक फ़ीचर के साथ फोटो, रेखांकन, आदि का होना जरूरी है। हलके-फुलके विषयों से लेकर गंभीर विषयों और मुद्दों पर भी फीचर लिखा जा सकता है।

- **फ़ीचर लेखन में ध्यान देने योग्य बातें**- पात्रों की मौजुदगी जरूरी है, प्रस्तुति ऐसी हो कि पाठक महसूस करें कि वह खुद देख और सुन रहा है, फ़ीचर की थीम सूचनाओं तथ्यों और विचारों से गुंथी होनी चाहिए। फ़ीचर में समाचार की तरह शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। अखबारों और पत्रिकाओं में 250 से 2000 शब्दों तक के फीचर होते है। फ़ीचर सारगर्भित होते हुए भी बोझिल नही होते। फीचर अतीत, वर्तमान और भविष्य से संबंद्ध हो सकता है। किसी भी महत्वपूर्ण खोज, उपलब्धि तथा उसके महत्व को भी फ़ीचर के माध्यम से समझाया जा सकता है। फ़ीचर का प्रारंभ आकर्षक एवं उत्सुकता पैदा करने वाला होना चाहिए प्रारंभ, मध्य और अंत स्वाभाविक तरीके से एक साथ बंधा हो, पैराग्राफ छोटे हों तथा एक पेराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस हो।

- **फ़ीचर के प्रकार** - समाचार बैकग्राउंड फ़ीचर, खोजपरक फ़ीचर, साक्षात्कार फ़ीचर, जीवन-शैली फ़ीचर, रूपात्मक फ़ीचर, व्यक्तिचित्र फ़ीचर, यात्रा फ़ीचर, विशेष कार्य फ़ीचर इत्यादि।

- **विशेष रिपोर्ट**- समाचार पत्र और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं। विशेष रिपोर्ट कई प्रकार की होती है। 1. **खोजी रिपोर्ट** - पत्रकार ऐसी सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन करके जनता के समक्ष लाता है जो पहले सार्वजनिक न हों। 2. **इन-डेप्थ रिपोर्ट** - सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है। 3. **विश्लेषणात्मक रिपोर्ट** - घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या 4. **विवरणात्मक रिपोर्ट** - समस्या का विस्तृत और बारीक विवरण

  आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उलटा पिरामिड शैली में ही लिखा जाता है लेकिन विषयानुसार फ़ीचर शैली का भी प्रयोग होता है। रिपोर्ट बड़ी हो तो उसे श्रृंखलाबद्ध कर कई किस्तों में छापा जाता है। विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

- **विचारपरक लेखन**- अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियां विचारपरक लेखन की श्रेणी में आते हैं। संपादकीय को अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते। संपादकीय लेखन

का दायित्व संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करता है।

- **स्तंभ लेखन**– कुछ लेखक अपने वैचारिक रुझान एवं आकर्षक लेखन शैली के लिए पहचाने जाते हैं। लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा देता है। स्तंभ का विषय चुनने एवं उसमें अपने विचार व्यक्त करने की लेखक को पूर्ण छूट होती है। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि वह लेखक के नाम से ही जाने पहचाने जाते हैं।

- **संपादक के नाम पत्र**– यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है। यह अखबार का एक स्थायी स्तंभ है जिसके जरिये पाठक विभिन्न मुद्दों पर न सिर्फ अपनी राय प्रकट करते हैं अपितु जन समस्याओं को भी उठाते हैं।

- **लेख**-संपादकीय पृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार और विषय विशेषज्ञ किसी विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं। इसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है लेकिन ये विचार तथ्यों पर आधारित होते हैं और लेखक अपने तर्कों के जरिये अपनी राय प्रस्तुत करता है।

- **साक्षात्कार (इंटरव्यू)** – पत्रकार साक्षात्कार के माध्यम से ही समाचार, फीचर विशेष रिपोर्ट और अन्य पत्रकारीय लेखन के लिए सामग्री एकत्रित करता है। साक्षात्मकार का एक स्पष्ट मकसद और ढांचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए न केवल ज्ञान पर्याप्त है अपितु संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए। साक्षात्कार को सवाल–जवाब अथवा एक आलेख की तरह से भी लिख सकते हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न (1 अंक)

1. पत्रकारीय लेखन क्या है?
2. लोकतांत्रिक समाज में अखबार कौन सी भूमिका निभाते हैं?
3. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?
4. पत्रकारिता के विकास में कौन–सा मूलभाव सक्रिय रहता है?
5. पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक–सृजनात्मक लेखन में क्या अंतर है?
6. पत्रकारीय लेखन की भाषा–शैली कैसी होनी चाहिए?
7. उलटा पिरामिड शैली से क्या तात्पर्य है?
8. समाचार लेखन के छह ककार से आप क्या समझते हैं?
9. अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य कोई दो बातें बताइए?

10. फ़ीचर से आप क्या समझते हैं?
11. फ़ीचर कितने प्रकार के हो सकते हैं?
12. फ़ीचर लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?
13. फ़ीचर को कैसे रोचक बनाया जा सकता है?
14. विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?
15. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है? उनके नाम लिखिए।
16. खोजी रिपोर्ट और इनडेप्थ रिपोर्ट में क्या अंतर है?
17. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?
18. विचारपरक लेखन के अंतर्गत कौन-सी सामग्री आती है?
19. संपादकीय लेखन क्या है?
20. स्तंभ लेखन की क्या विशेषता है?
21. संपादक के नाम पत्र कौन और क्यों लिखता है?
22. समाचार माध्यमों में साक्षात्कार क्यों महत्वपूर्ण है?
23. एक सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता में कौन से गुण होने आवश्यक हैं?
24. साक्षात्कार को लिखने की कौन सी शैली है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (5 अंक)

1. पत्रकारीय लेखन क्या है? स्पष्ट कीजिए।
2. पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में क्या अंतर है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. अच्छे लेखन के लिए किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।
4. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए।
5. समाचार लेखन के छह ककारों को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
6. फ़ीचर से क्या अभिप्राय है? फ़ीचर कितने प्रकार के होते हैं?
7. फ़ीचर का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
8. फ़ीचर लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।

9. विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते है? विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती हैं? स्पष्ट कीजिए।

10. टिप्पणी लिखिए- (क) स्तंभ लेखन, (ख) संपादक के नाम पत्र, (ग) लेख, (घ) संपादकीय।

11. एक अच्छे एवं सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता को किन-किन बातों पर ध्याना देना चाहिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. 'कन्या भ्रूण हत्या' विषय पर एक लेख लिखिए।

2. 'आप शैक्षिक भ्रमण हेतु किसी ऐतिहासिक नगर में गए हैं।'' इस आधार पर एक यात्रा फीचर तैयार कीजिए।

3. अपने पंसदीदा किसी अध्यापक/ अभिनेता अथवा खिलाड़ी के साक्षात्कार हेतु 10 प्रश्न तैयार कीजिए।

4. 'बढ़ते भ्रष्टाचार' के संदर्भ में संपादक के नाम एक पत्र लिखिए।

विशेष लेखन–स्वरूप और प्रकार

स्मरणीय बिन्दु

- एक समाचार पत्र या पत्रिका तभी संपूर्ण लगती है जब उसमें विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बारे में घटने वाली घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों के बारे में नियमित रूप से जानकारी दी जाए। इससे समाचार पत्रों में एक विविधता आती है और उसका कलेवर व्यापक होता है। इसलिए पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखकर समाचार पत्र सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य, विज्ञान, खेल इत्यादि विषयों की भी निरंतर और पर्याप्त जानकारी देते हैं।

- **विशेष लेखन**– यानी किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। समाचार पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो और टी.वी. में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी। विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं जैसे– अर्थ–व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान–प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य इत्यादिं

- **बीट**– संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि वह आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी है।

- विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नही है। यह बीट रिपोर्टिंग से आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना आवश्यक है।

- **बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर**– बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारी और रुचि होना ही पर्याप्त है और उसे सामान्य तौर पर सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है। यही कारण है कि बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विषय विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ भी आते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेख लिखने वाले सामान्यत: पेशेवर पत्रकार न होकर विषय विशेषज्ञ होते हैं। जैसे खेल के क्षेत्र में हर्ष भोगले, जसदेव सिंह और नरोत्तमपुरी आदि का नाम प्रसिद्ध है।

- **विशेष लेखन की भाषा शैली**- विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। जैसे- कारोबार और व्यापार में तेजड़िए, मंदड़िए, सोना उछला, चांदी लुढ़की, जैसे शब्दों का प्रयोग होता है, पर्यावरण से संबंधित लेख में आद्रता, टॉक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती विषयानुसार उलटा पिरामिड अथवा फीचर शैली या अन्य शैली का प्रयोग हो सकता है। विशेष लेख का पाठक वर्ग भी विशेष होता है अत: लेखक की कोशिश होनी चाहिए कि वह पाठक को विषय के बारे में ज्यादा विस्तार और गहराई से बताए। चाहे कोई भी शैली अपनाएं लेकिन मूल बात यह है कि किसी खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना ही चाहिए।

- सामान्य व्यक्ति कुछ भी खरीदता है, बैंक में जमा करता है या कोई आर्थिक योजना बनाता है तो उसका संबंध कारोबार या अर्थ जगत से होता है इसलिए अगर अखबार में आर्थिक पृष्ठ न हो तो उसे पूर्ण नही माना जाता है। इसी तरह खेल विशेषांक, खेल परिशिष्ठ भी महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि खेल पत्रकार अपनी भाषा-शैली से न केवल सूचनाएं देता है बल्कि ऊर्जा, जोश, रोमांच और उत्साह का संचार भी करता है।

- **विशेषज्ञता का अभिप्राय**- व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि सूचनाओं की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सकें। विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए स्वयं का अपडेट रहना, पुस्तकें पढ़ना, शब्दकोश एवं इनसाइक्लोपीडिया का सहारा लेना, सरकारी-गैरसरकारी संगठनों से संपर्क, निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवश्यक है।

- पिछले कुछ वर्षो में आर्थिक पत्रकारिता का महत्व काफी बढ़ा है क्योंकि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच रिश्ता गहरा हुआ है। आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारित की तुलना में काफी जटिल होती है क्योंकि आम लोगों को इसकी शब्दावाली का मतलब नहीं पता होता। आर्थिक पत्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह किस प्रकार सामान्य पाठक और जानकार पाठक दोनों को भलींभांति संतुष्ट कर सकता है। हमारा पाठक, दर्शक या श्रोता कौन है? हमारी बात उस तक पहुंच रही है या नहीं, तथ्यों और तर्कों में तालमेल है या नहीं ये तमाम बातें किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करती हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूरात्मक प्रश्न (1 अंक)

1. विशेष लेखन क्या है?

2. मुद्रित माध्यम, रेडियो और टी.वी. में अलग 'डेस्क' की व्यवस्था किसके लिए होती है?
3. 'बीट' से आप क्या समझते हैं?
4. 'बीट' रिपोर्टिंग एवं 'विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या मूलभूत अंतर है।
5. विशेष संवाददाता किसे कहते हैं?
6. बीट कवर करने वाले को क्या कहा जाता है?
7. अखबारों में विशेष लेख लिखने वाले कौन होते हैं?
8. किन्हीं तीन खेल विशेषज्ञों के नाम लिखिए।
9. विशेष लेखन की भाषा शैली की एक विशेषता बताइए।
10. विशेष लेखन के अंतर्गत आने वाले किन्हीं चार क्षेत्रों के नाम लिखिए।
11. 'व्यापार-कारोबार' से संबंधित भाषा के दो उदाहरण लिखिए।
12. वर्तमान समय में किस क्षेत्र में विशेष लेखन को प्राथमिकता दी जा रही है?
13. पत्रकारीय विशेषज्ञता से क्या अभिप्राय है?
14. 'खेल समाचार' की भाषा का एक उदाहरण दीजिए।
15. लेखन के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है?
16. सामान्य पत्रकारिता की तुलना में कौन सी पत्रकारिता जटिल है?
17. आर्थिक पत्रकार को विशेष रूप से किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
18. कौन सी मुख्य बात किसी भी लेखन को विशिष्ट बनाती है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (5 अंक)

1. विशेष लेखन से आप क्या समझते हैं? विशेष लेखन के अंतर्गत कौन-कौन से क्षेत्र आते हैं?
2. सिद्ध कीजिए कि विशेष लेखन के पाठक और भाषा शैली दोनो विशेष होते हैं?
3. बीट रिपोर्टिंग एवं विशेषीकृत रिपोर्टिंग के अंतर को स्पष्ट कीजिए।
4. विशेष लेखन के क्षेत्र में विशेषज्ञता किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है?
5. कारोबार और व्यापार (आर्थिक) से संबंधित पृष्ठ न होने पर किसी भी सामाचार पत्र को अपूर्ण क्यों माना जाता है?
6. समाचार पत्रों में 'खेल समाचार' की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. सिद्ध कीजिए कि ''आर्थिक पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में कठिन है।''
2. 'दसवीं बोर्ड परीक्षा का बदलता स्वरूप' विषय पर एक आलेख लिखिए।

सृजनात्मक लेखन कैसे बनती है कविता

स्मरणीय बिन्दु

- वाचिक परंपरा से जन्मी कविता आज लिखित रूप में मौजूद है। पारंपरिक लोरियों, मांगलिक गीतों, श्रमिकों द्वारा गुनगुनाए लोकगीतों ओर तुकबंदी में कविता के स्वर मुखरित होते हैं। कविता लेखन के संबंध में दो मत मिलते हैं।एक का मानना है कि अन्य कलाओं की तरह कविता लेखन की कला को प्रशिक्षण द्वारा नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि इसका संबंध मानवीय संवेदनाओं से है जबकि दूसरा मत कहता है कि अन्य कलाओं की भांति प्रशिक्षण के द्वारा कविता लेखन को भी सरल बनाया जा सकता है।
- कविता का पहला उपकरण शब्द है। कवि डब्ल्यू.एच. ऑर्डेन ने कहा कि 'प्ले विद द वर्ड्स' अर्थात कविता लेखन में सबसे पहले शब्दों से खेलना सीखें, उनके अर्थ की परतों को खोलें क्योंकि शब्द ही भावनाओं और संवेदनाओं को आकार देते हैं।
- बिंब और छंद (आंतरिक लय) कविता को इंद्रियों से पकड़ने में सहायक होते हैं। बाह्य संवेदनाएं मन के स्तर पर बिंब के रूप में बदल जाती हैं। छंद के अनुशासन की जानकारी के बिना आंतरिक लय का निर्वाह असंभव है। कविता की भाषा, बिंब, छंद, संरचना सभी परिवेश के इर्द-गिर्द घूमते हैं इसलिए वातावरण, परिवेश और संदर्भ के अनुसार ही भाषा, बिंब और छंद का चयन किया जाता है।
- **कविता लेखन के मुख्य घटक**- भाषा का सम्यक ज्ञान, शब्द विन्यास, काव्य शैलियों का ज्ञान, छंद विषयक बुनयादी जानकारी, समय विशेष की प्रचलित प्रवृत्तियों का ज्ञान, कम से कम शब्दों में अपनी बात करने की क्षमता आदि। नवीन दृष्टिकोण और प्रस्तुतिकरण की कला न हो तो कविता लेखन संभव ही नहीं है। प्रतिभा को किसी नियम या सिद्धांत द्वारा पैदा नहीं किया जा सकता किंतु परिश्रम और अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। कविता लेखन के यह घटक कविता लिखना भले ही न सिखाएं पर कविता की सराहना एवं कविता विषयक ज्ञान देने में सहायक है। शब्दों के साथ खेलना और उनकी तह तक जाने की प्रवृत्ति विद्यार्थी की रचनात्मक शक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अद्भुत भूमिका निभा सकते हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता से आप क्या समझते हैं?

2. कविता लेखन को अन्य कलाओं की तरह सिखाया क्यों नहीं जा सकता?
3. 'कविता लेखन' का सबसे पहला उपकरण किसे माना जाता है?
4. 'प्ले विद वर्ड्स' से क्या अभिप्राय है?
5. बिंब किस प्रकार कविता के अर्थ में सहायक होते हैं?
6. कविता के संदर्भ में वातावरण और परिवेश का क्या महत्व है?
7. कविता के लिए आवश्यक कोई दो घटक बताइए।
8. विद्यार्थी की रचनात्मक शक्ति और ऊर्जा को कैसे बाहर लाया जा सकता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता कैसे बनी? कविता-लेखन से संबंधित दो भिन्न मत क्या हैं?
2. कविता लेखन से शब्दों के महत्व पर प्रकाश डालिए।
3. कविता लेखन में छंदों एवं बिंबों की भूमिका स्पष्ट कीजिए
4. कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।
5. आपने जीवन में घटी ऐसी घटना जिसने आपके मन को स्पर्श किया हो उस अनुभूति को कविता में ढालने का प्रयास कीजिए।

नाटक लिखने का व्याकरण

स्मरणीय बिन्दु

- भारतीय परंपरा में नाटक को दृश्यकाव्य की संज्ञा दी गई है। नाटक साहित्य की वह विधा है जिसे पढ़ने, सुनने के साथ देखा भी जा सकता है। साहित्य की अन्य विधाएं अपने लिखित रूप में ही अंतिम रूप को पा लेती हैं किन्तु नाटक लिखित रूप में एक आयामी होता है तथा मंचन के पश्चात ही उसमें संपूर्णता आती है।
- नाटक का प्रथम अंग समय का बंधन है। समय का यह बंधन नाटक की रचना पर पूरा असर डालता है, इसीलिए नाटक को एक निश्चित समय सीमा में पूरा होना होता है। नाटक किसी भी काल से संबंध रखता हो उसके मंच निर्देश हमेशा वर्तमानकाल में ही लिखे जाते हैं।
- नाटक का द्वितीय अंग- शब्द है। शब्द को नाटक का शरीर कहा जाता है। नाटक में शब्द अपनी एक नई, निजी और अलग अस्मिता ग्रहण करता है।
- एक अच्छा नाटककार अधिकाधिक संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है। नाटक वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक होना चाहिए। एक अच्छा नाटक वही होता है जो लिखे गए शब्दों से ज्यादा वह ध्वनित करे जो लिखा नहीं गया है।
- एक अच्छे नाटककार को यह कला अवश्य आनी चाहिए कि वह घटना, स्थिति और दृश्य को इस क्रम में रखे कि कथा का विकास शून्य से शिखर की ओर हो।
- संवाद ही वह तत्व है जो एक सशक्त नाटक को एक कमजोर नाटक से अलग करता है।
- नाटक को सशक्त बनाने में चरित्र का विशेष योगदान होता है, इसलिए चरित्र विकास में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पात्र सपाट और सतही न होकर क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने वाले हों।
- जिस नाटक में असंतुष्टि, छटपटाहट प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक तत्वों की जितनी ज्यादा उपस्थिति होगी वह उतना ही सशक्त नाटक साबित होगा।
- नाटक देखते समय दर्शक मानसिक रूप से उस परिवेश में पहुँच जाता है जिससे संबंधित वह नाटक है। ऐसी स्थिति में संवाद स्वाभाविक होने पर उसके मर्म का स्पर्श करते हुए उसे ग्राह्य हो जाते हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. नाटक से आप क्या समझते हैं?
2. नाटक अपने किस रूप में संपूर्णता को प्राप्त करता है?
3. 'नाटक' साहित्य की अन्य विधाओं से कैसे अलग है?
4. 'समय के बंधन' का नाटक में क्या महत्व है?
5. नाटक के मंच निर्देश हमेशा वर्तमान में क्यों घटित होते हैं?
6. नाटक में नकारात्मक तत्वों की उपस्थिति क्यों आवश्यक है?
7. नाटक के मुख्य तत्व कौन-कौन से हैं?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'नाटक' किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. एक अच्छे नाटक की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?
3. 'नाटक स्वयं में एक जीवंत माध्यम है।' इस कथन के आलोक में नाटक में स्वीकार और अस्वीकार की धारण स्पष्ट कीजिए।
4. स्पष्ट कीजिए कि ''नाटक की कहानी बेशक भूतकाल या भविष्यत्काल से संबंधित हो, तब भी उसे वर्तमान काल में ही घटित होना पड़ता है।''
5. ''संवाद चाहे कितनी भी कठिन भाषा में क्यों न लिखे गए हो, स्थिति और परिवेश की मांग के अनुसार यदि वे स्वाभाविक जान पड़ते हैं तो दर्शकों तक पहुंचने में कोई मुश्किल नहीं है।'' क्या आप इस बात से सहमत है?

कैसे लिखें कहानी

स्मरणीय बिन्दु

- किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध व्यौरा जिसमें परिवेश हो, द्वंद्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिंदु हो, उसे कहानी कहा जाता है। कहानी जीवन का अविभाज्य अंग है। हर व्यक्ति अपनी बातें दूसरों को सुनाना और दूसरों की बातें सुनना चाहता है। कहानी लिखने का मूलभाव सबमें होता है, इसे कुछ लोग विकसित कर पाते हैं कुछ नहीं।
- जहां तक कहानी के इतिहास का सवाल है, वह उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास, क्योंकि कहानी, मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है। मौखिक कहानी की परंपरा बहुत पुरानी है। प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ अत्यंत लोकप्रिय थी क्योंकि यह संचार का सबसे बड़ा माध्यम थी। धर्म प्रचारकों ने भी अपने सिद्धांत और विचार लोगों तक पहुँचने के लिए कहानी का सहारा लिया था। शिक्षा देने के लिए भी पंचतंत्र जैसी कहानियाँ लिखी गईं जो जगप्रसिद्ध है।
- कहानी का केन्द्रीय बिन्दु कथानक होता है जिसमें प्रारंभ से लेकर अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख होता है। कथानक को कहानी का प्रारंभिक नक्शा माना जा सकता है। कहानी का कथानक आमतौर पर कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है। कहानीकार कल्पना का विकास करते हुए एक परिवेश, पात्र और समस्या को आकार देता है तथा एक ऐसा काल्पनिक ढांचा तैयार करता है जो कोरी कल्पना न होकर संभावित हो और लेखक के उद्देश्य से मेल खाता हो।
- कहानी में द्वंद्व के तत्व का होना आवश्यक है। द्वंद कथानक को आगे बढ़ता है तथा कहानी में रोचकता बनाए रखता है। कहानी की यह शर्त कि वह नाटकीय ढंग से अपने उद्देश्य को पूर्ण करते हुए समाप्त हो जाए, द्वंद्व के कारण ही पूर्ण होती है।
- हर घटना, पात्र और समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है। कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने के लिए आवश्यक है कि लेखक देशकाल और वातावरण का पूरा ध्यान रखें।
- पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा उतनी ही आसानी उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी।

- पात्रों का चरित्र चित्रण पात्रों की अभिरुचियों के माध्यम से, कहानीकार द्वारा गुणों का बखान करके, पात्र के क्रिया-कलापों, संवादों के माध्यम से किया जाता है।
- कहानी में संवाद का विशेष महत्व है। संवाद ही कहानी को और पात्र को स्थापित एवं विकसित करते हैं साथ ही कहानी को गति देते हैं, आगे बढ़ाते हैं, जो घटना या प्रतिक्रिया कहानीकार होती हुई नहीं दिखा सकता, उसे वह संवादों के माध्यम से सामने लाता है।
- कथानक के अनुसार कहानी चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) की ओर बढ़ती है। सर्वोत्तम यह है कि चरमोत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करे तथा उसे लगे कि उसे स्वतंत्रता दी गई है, उसने जो निष्कर्ष निकाले हैं वह उसके अपने हैं।
- कहानी लिखने की कला को सिखने का सबसे अच्छा और सीधा रास्ता यह है कि अच्छी कहानियां पढ़ी जाएं और उनका विश्लेषण किया जाए।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्क प्रश्न

1. कहानी क्या है?
2. प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ क्यों लोकप्रिय थीं?
3. कहानी का केन्द्र बिन्दु किसे कहते हैं?
4. कथानक क्या है?
5. कहानी को रोचक बनाने में कौन सा तत्व सहायक होता है?
6. कहानी प्रामाणिक बने इसके लिए क्या आवश्यक है?
7. कहानी में संवाद क्यों महत्वपूर्ण हैं?
8. कहानी लिखने की कला को कैसे सीखा जा सकता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कहानी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ क्यों लोकप्रिय हुईं?
2. 'कहानी का केन्द्र बिन्दु कथानक होता है।' इस कथन पर प्रकाश डालिए।
3. स्पष्ट कीजिए कि संवाद पात्रों के चरित्र को उद्घाटित तो करते ही हैं साथ में कहानी को गति भी देते हैं।
4. सिद्ध कीजिए- 'कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने में देशकाल और वातावरण का चित्रण अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।'
5. कहानी के विभिन्न तत्वों का विवेचन कीजिए।
6. कहानी में चरमोत्कर्ष का चित्रण अत्यंत सावधानीपूर्वक करना क्यों आवश्यक है?

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

स्मरणीय बिन्दु

- नए ओर अप्रत्याशित विषयों के बारे में कम से कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है। अप्रत्याशित लेखन का आशय यांत्रिक हस्त कौशल से नहीं अपितु उसका आशय भाषा के सहारे किसी विषय पर विचार करने और उस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुगठित रूप में अभिव्यक्त करना है।
- अप्रत्याशित लेखन प्राय: एक चुनौती की तरह लगने लगता है क्योंकि ज्यादातर लोग आत्मनिर्भर होकर लिखित रूप में अभिव्यक्ति का अभ्यास ही नहीं करते। रंटत की बुरी आदत अभ्यास का मौका ही नहीं देती और हम दूसरों द्वारा तैयार की गई सामग्री को ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर देते हैं। मौलिक अभ्यास को बाधित करने वाली यह निर्भरता हमारे अंदर लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित नहीं होने देती।
- लिखने का कोई विशेष फॉर्मूला नहीं होता, परंपरागत विषयों से हटकर लिखने का अभ्यास ही दक्षता दिला सकता है।
- लिखने से पूर्व दो तीन मिनट सोचकर यह विचार कर लें कि किन विचारों को हम विस्तार दे सकते हैं। यह तय कर लेने के पश्चात एक आकर्षक-सी शुरूआत पर विचार करें। बात सिलसिलेवार आगे बढ़े इसकी एक रूपरेखा भी हमारे जेहन में होनी चाहिए। वस्तुत: सुसंबद्धता किसी भी तरह के लेखन का एक बुनियादी नियम है। सुसंबद्धता होने के साथ-साथ सुसंगत होना आवश्यक है। अगर हमारी दो बातें आपस में ही एक-दूसरे का खंडन करती हों, तो यह लेखन और अभिव्यक्ति दोनों का अक्षम्य दोष है।
- सामान्यत: निबंधों या आलेखों/प्रश्नोत्तरों में जहाँ 'मैं' शैली का प्रयोग वर्जित है, वही अप्रत्याशित लेखन में 'मैं' की आवाजाही बेरोकटोक चल सकती है।

अभ्यास कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से आप क्या समझते हैं?

2. रटंत कुटेव (बुरी लत) क्यों है?
3. रटंत की आदत किस प्रकार मौलिक प्रयास को बाधित करती है?
4. अप्रत्याशित लेखन हेतु ध्यान रखने योग्य किन्हीं दो बातों का उल्लेख कीजिए।
5. लेखन के संदर्भ में 'सुसंबद्ध' और 'सुसंगत' से क्या अभिप्राय है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'नऐ और अप्रत्याशित लेखन' से क्या अभिप्राय है? क्या अप्रत्याशित लेखन की कोई विशेष तकनीक (फॉर्मूला) है?
2. 'रटंत' की आदत से क्या अभिप्राय है? इसे कुटेव क्यों कहा गया है?
3. 'नए और अप्रत्याशित' विषयों पर लेखन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है?

अथवा

'नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के लिए किस प्रकार तैयारी करनी चाहिए?
4. लेखन के संदर्भ में 'सुसंबद्ध' और 'सुसंगत' से क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अपठित बोध

गद्यांश (10 अंक), काव्यांश (5 अंक)

निर्देश :-

1. दिए गए गद्यांश को पढ़कर मूल भाव समझने का प्रयास करें।
2. मूलभाव समझने के उपरान्त छात्र संभावित उत्तरों को रेखांकित करें।
3. सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्यांश/पद्यांश पर आधारित हो।
4. छात्र प्रश्नों के उत्तर सामान्य, सरल भाषा में लिखें।
5. उत्तर का अनावश्यक विस्तार न करें।
6. काव्यांश के प्रश्नों का उत्तर कविता की पंक्तियों में न देकर छात्र सामान्य सरल भाषा में लिखें
7. गद्यांश का शीर्षक संक्षिप्त एवं सार्थक हो।

अभ्यास कार्य

क) मैं सड़क हूँ! अहिल्या जैसे मुनि के शाप से पाषाण हो गई थी, मैं भी वैसे ही मानो किसी के शाप से चिर-निद्रित बड़े भारी अजगर की तरह बन पर्वतों में होकर, पेड़ों की छाया के नीचे से, सुविस्तृत प्रान्तर के ऊपर से, देश-देशान्तर को वेष्टन करती हुई बहुत दिनों से जड़-निद्रा में सोई हुई हूँ। असीम धैर्य के साथ धूल में लोटकर शाप की अंतिम घड़ियों की प्रतीक्षा कर रही हूँ। मैं हमेशा से स्थिर हूँ, अचल हूँ, हमेशा से एक ही करवट से सो रही हूँ, किन्तु फिर भी मुझे एक घड़ी के लिए भी विश्राम नहीं, इतनी भी छुट्टी नहीं कि अपनी इस कठिन और सूखी सेज पर एक भी कोमल, स्निग्ध हरी घास उगा सकूँ। इतना भी समय नहीं कि अपने सिरहाने के पास बहुत छोटा-सा नीले रंग का एक वन-फूल खिला सकूँ। बोल नहीं सकती, पर अन्धे की तरह सभी कुछ अनुभव कर रही हूँ। रात और दिन पैरों की आहट, सिर्फ पैरों की आहट! मेरी इस जड़-निद्रा में हजारों-लाखों चरणों के शब्द दिन-रात दुःस्वप्न की तरह घूमते रहते हैं। मैं चरणों के स्पर्श से उनके हृदय को पढ़ सकती हूँ। मैं समझ जाती हूँ कौन घर जा रहा है, कौन काम पर जा रहा है, कौन आराम के लिए जा रहा है, कौन उत्सव में जा रहा है और कौन श्मशान को जा रहा है। जिसके सुख की गृहस्थी है, स्नेह की छाया है, वह कदम-कदम पर सुख की तस्वीर खींचता चलता है, हर कदम पर आशा के बीच बोता जाता है। जान पड़ता है जहाँ-जहाँ उसके पैर पड़े मानो वहां क्षण भर में ही एक-एक लता अंकुरित और पुष्पित हो उठेगी। जिसके घर नहीं, आश्रय नहीं, उसे पद-क्षेप में न आशा है, न अर्थ है। उसके कदम में न दायां है, न बायां है, उसके पैर बहते रहते हैं, मैं चलूं तो क्यों और ठहरूँ तो किस लिये? उसके पद-क्षेप से मेरी सूखी धूल मानो ओर सूख जाती है।

दुनिया की कोई भी कहानी मैं पूरी नहीं सुन पाती। आज सैकड़ों-हजारों वर्षों से मैं लाखों-करोड़ों लोगों की कितनी हँसी, कितने गाने, कितनी बातें सुनती आई हूँ, पर थोड़ी-सी सुन पाती हूँ। बाकी

को सुनने के लिए कान खड़े करती हूँ, तब देखती हूँ, वह आदमी ही अब नहीं रहा। ऐसी कितनी ही बरसों की कितनी टूटी-फूटी बातें, कितने बिखरे हुए गाने, मेरी धूल के साथ धूल बन गये हैं, मेरी धूल के साथ उड़ते रहते हैं, इसे क्या कोई जान सकता है। वह सुनो कोई गा रही है- ''कहूँ-कहूँ पर कह नहीं पाई।'' - अहा, जरा ठहरो, गाने को पूरा कर जाओ, पूरी बात सुन लूँ!

1. गद्यांश में 'मैं' किस के लिए प्रयुक्त हुआ है। और उसकी तुलना अहिल्या से क्यों की गई है? 2
2. चरणों के स्पर्श से सड़क क्या-क्या जान पाती है? 2
3. सड़क ने अपने स्वरूप के विषय में क्या कहा है? 2
4. सड़क दुनिया की कोई भी बात पूरी क्यों नहीं सुन पाती? 2
5. सड़क ने दु:स्वप्न किसे कहा है और क्यों? 2
6. 'असीम' तथा 'पुष्पित' शब्दों में से क्रमश: उपसर्ग-प्रत्यय अलग करें। 1
7. गद्यांश में आए ऐसे दो शब्द लिखिए जिनका अर्थ क्रमश: 'पत्थर' और 'सहारा' है? 1
8. सड़क के लिए प्रयुक्त कोई दो विशेषण लिखिए। 1
9. सड़क यात्री से क्या अनुरोध करती है? 1
10. गद्यांश का उचित शीर्षक दें। 1

ख) भाषा का भावना से गहरा सम्बन्ध है और भावना तथा विचार व्यक्तिव के आधार हैं। यदि हमारे भावों और विचारें को पोषक रस किसी विदेशी या पराई भाषा से मिलता है तो निश्चय ही हमारा व्यक्तिव भी भारतीय या स्वदेशी न होकर अभारतीय या विदेशी ही हो जाएगा। प्रत्येक भाषा और प्रत्येक साहित्य अपने देश-काल और धर्म से परिचित तथा विकसित होता है। उस पर अपने महापुरुषों और चिंतकों का उनकी अपनी परिस्थतियों के अनुसार ही प्रभाव पड़ता है। कोई दूसरा देश-काल और समाज भी उस सुंदर स्वास्थ्यकारी संस्कृति से प्रभावित हो, यह आवश्यक नहीं है। अतएव व्यक्ति के व्यक्तिव का समुचित विकास और उसकी शक्तियों को समुचित गति अपने ही पठन-पाठन में मिल सकती है। इसका कारण यह भी है कि मातृभाषा में जितनी सहज गति संभव है और इसमें जितनी कम-शक्ति-समय की आवश्यकता पड़ती है, उतनी किसी भी विदेशी या पराई भाषा में नहीं है।

यह भी सच है कि हमारे देश के प्रतिभाशाली और होनहार लोग पश्चिमी भाषा और साहित्य में अपनी क्षमता को देख कर स्वयं भी चकित रह जाते हैं, जिनकी वह अपनी मातृभाषा नहीं है। यह भी मानना पड़ेगा कि इन परिश्रमी लोगों ने अपनी जो शक्ति, समय और तन्मयता पराई भाषा के लिए खपाई, वह यदि मातृभाषा के लिए प्रयोग की गई होती तो एक अद्‌भुत चमत्कार ही हो गया होता। माइकेल मधुसूदन दत्त का दृष्टांत आपके सामने है। प्रतिभा के स्वामी इस बंगला कवि ने अंग्रेजी में

काव्य रचना करके कीर्ति और गौरव कमाने के लिए भी भारी परिश्रम और प्रयत्न किया। यह तथ्य उनको तब समझ में आया जब वे इंग्लैंड यात्रा के लिए गए। बहुत अच्छा लिखकर भी भी द्वितीय श्रेणी के लेखक और कवि से अधिक कुछ नहीं हो सके। यदि चाहते तो अपनी भाषा में कृत्तिव के बल पर वे सहज ही प्रथम श्रेणी के कवियों में प्रतिष्ठित हो सकते थे। यह सब पता चलने के बाद उन्होंने अपनी भाषा में लिखने का निर्णय किया। प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है। श्रीमती सरोजनी नायडू यदि अपनी मातृभाषा में काव्य रचना करती तो निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्री होने का गौरव प्राप्त करती। मैं देखती हूं कि उच्च ज्ञान-विज्ञान का माध्यम अंग्रेजी होने पर भी पिछले डेढ़-सौ करोड़ लोगों में अंग्रेजी में एक भी रवीन्द्रनाथ, शरत्चंद्र, महावेदी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रनन्दन पंत और उमाशंकर जोशी आदि पैदा न कर सका। राष्ट्रभाषा उन्नति की द्योतक होती है।

1. भाषा का सम्बन्ध किससे होता है और कैसे? 2
2. व्यक्तित्व का समुचित विकास किस प्रकार होता है? 2
3. राष्ट्र की उन्नति किसमें निहित है? 2
4. कवि के अनुसार सरोजनी नायडू सर्वश्रेष्ठ कवयित्री क्यों नहीं बन पायीं? 2
5. माइकल मधुसूदन का दृष्टांत क्या सिखाता है? 2
6. लेखक ने ज्ञान-विज्ञान के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा किसे माना है? 2
7. 'कीर्ति' और उन्नति के विलोम शब्द लिखिए। 1
8. 'राष्ट्रीय' शब्द में से प्रत्यय अलग कर उससे दो नवीन शब्द बनाइए। 1
9. गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए। 1

ग) सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तंभ हैं- प्रथम सुसंस्कार और द्वितीय सत्संगति। सुसंस्कार भी पूर्व जीवन की सत्सगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श मात्र से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत् सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं। परिणामत: सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- ''महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो।''

वस्तुत: चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है। चरित्रवान, व्यक्ति समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुरजी की उक्ति अक्षरश: सत्य है कि सुचरित्र के बीच हमें भले ही वंश-परम्परा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। अनुवांशिक परम्परा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते, वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता।

व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र-संकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है। आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के एक आचरक घटक हैं- इस बात को विस्मृत कर देते हैं।

1. सत्संगति कुमार्गी को कैसे सुधारती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 2
2. चरित्र के बारे में विदुर के क्या विचार हैं? 2
3. व्यक्ति विशेष का चरित्र समूचे राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है? 2
4. व्यक्ति के चरित्र-निर्माण में किस-किस का योगदान होता है? 2
5. संगति के संदर्भ में पारस के उल्लेख से लेखक क्या प्रतिपादित करना चाहता है? 2
6. व्यक्ति सुसंस्कृत कैसे बनता है? स्पष्ट करें। 1
7. आचरण उच्च बनाने के लिए व्यक्ति को क्या प्रयास करना चाहिए? 1
8. उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1
9. गद्यांश में से कुसंगति और सुलभ के विलोम छाँटिए। 1
10. 'चरित्रवान' और परिवेश में से क्रमश प्रत्यय और उपसर्ग अलग करें। 1

घ) इस देश में किसी समय विद्या की जो धारा साधना के दुर्गम तुंग-श्रृंग से निर्झरित होती थी उस एक धारा ने संस्कृति के रूप में देश के समस्त स्तरों को अभिसिक्त किया है। इसके लिए उसे यांत्रिक नियम से शिक्षा विभाग का कारखाना नहीं खोलना पड़ा, शरीर में जैसे प्राण शक्ति की प्रेरणा से मोटी धमनियों की रक्तधारा छोटी-बड़ी नाना आयतनों की शिराओं के द्वारा समस्त अंग-प्रत्यगों में प्रवाहित होती रहती है, उसी तरह हमारे देश के सम्पूर्ण समाज-शरीर में एक ही शिक्षा स्वाभाविक प्राण क्रिया से निरन्तर संचारित हुई है। उसका नाड़ी रूप वाहन कोई स्थूल था तो कोई बहुत ही सूक्ष्म किन्तु फिर भी वे नाड़ियां एक कलेवर की ही थी और रक्त भी उसका अपना प्राण पूर्ण रक्त था।

अरण्य स्वयं जिस मिट्टी से प्राण ग्रहण करके जीवित है, उसी मिट्टी को वह खुद भी प्रतिदिन प्राणों का उपादान पर्याप्त रूप में देता है। उसे बराबर प्राणमय बनाये रखता है। ऊपर की डाली पर वह जो फल देता है, नीचे की मिट्टी में उसकी तैयारियाँ भी उसकी अपनी दी हुई हैं। अरण्य की मिट्टी इसीलिए आरण्यिक बनी रहती है, नहीं तो वह विजातीय मरुभूमि। जिस भूमि में वह उभिद-स्वाद परिव्याप्त नहीं है, वहां पेड़ पौधे शायद ही पैदा होते हो, और हो भी जाए तो वे उपवास के मारे टेढ़े-मेढ़े और मरे से हो जाते हैं। हमारे समाज की वन-भूमि में किसी जमाने में उच्चशीर्ष वनस्पति का दान नीचे की भूमि पर नित्य ही बरसा करता था। आज देश में पाश्चात्य शिक्षा जल रही है, भूमि को वह अपने उपादानों से उपजाऊ नहीं बना रहीं। जापान आदि देशों के साथ हमारा यही लज्जाजनक और दु:खप्रद भेद है। हमारे देश अपनी शिक्षा की भूमिका बनाने के विषय में उदासीन हैं। यहां देश की शिक्षा और देश का विशाल हृदय या मन एक दूसरे से विच्छिन्न है। प्राचीन काल में हमारे देश के

बड़े-बड़े शास्त्रज्ञ विद्वानों के साथ निरक्षर ग्राम वासियों की मन प्रकृति का ऐसा परस्पर विरोध नहीं था। उस शास्त्रज्ञान के प्रति उसके मन में अनुकूल अभिमुखता तैयार हो गयी थी, उस भोज में उनका भी अर्द्ध भोजन था नित्य: और वह केवल प्राण से ही नहीं; बल्कि बचे हुए भाग के रूप में।

1. यांत्रिक नियम से कौन सा कारखाना नहीं खोलना पड़ा? 2
2. आज देश में कैसी शिक्षा चल रही है? 2
3. अरण्य के जीवित रह पाने का कारण क्या है? 1
4. निरक्षर शब्द में से उपसर्ग अलग कर उससे नवीन शब्द बनाइए। 1
5. गद्यांश का उचित शीर्षक दें। 1
6. शिक्षा के विषय में उदासीनता का क्या प्रभाव पड़ता है? 2
7. पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव बताइए। 2
8. अरण्य की विशेषता क्या है? 2
9. विद्या की धारा ने संस्कृति का रूप कैसे धारण किया? 2

अपठित काव्यांश

अभ्यास कार्य

क) जिंदगी वहीं तक नहीं, ध्वजा
जिस जगह विगत युग ने गाड़ी,
मालूम किसी को नहीं अनागत
नर की सुविधाएँ सारी।
'सारा जीवन नप चुका' कहे जो,
वह दासता प्रचारक है।
नर के विवेक का शत्रु,
मनुज की मेधा का संहारक है।
जो कहे, सोच मत स्वयं,
बात जो कहूं, मानता चल उसको,
नर की स्वतंत्रता की मणि का,
तू कह आरति प्रबल उसको।
नर की स्वतंत्र चिन्तन से जो डरता,
कादर्प अविचारी है
बेड़ियाँ बुद्धि को जो देता
जुल्मी है, अत्याचारी है।

1. 'सारा जीवन नप चुका' से कवि का आशय क्या है? 1
2. मनुज की मेधा का संहारक कौन है? 1
3. कवि के अनुसार अत्याचारी और कायर कौन है? 1
4. अत्याचारी किसे कहा गया है? 1
5. बुद्धि को बेड़ियाँ देने का क्या आशय है? 1

ख) एक दिन पत्तियों ने भी कहा था,
डाल?
डाल में क्या है कमाल?
माना वह झूमी, झुकी, डोली है
ध्वनि-प्रधान दुनिया में
एक शब्द भी वह कभी बोली है?
लेकिन हम हर-हर स्वर करती हैं,

मर्मर स्वर मर्मभरा भरती हैं,
नूतन हर वर्ष हुई,
पतझर में झर
बहार-फूट फिर छहरती हैं,
विथकित-चित्त पंथी का
शाप-ताप हरती हैं।
लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं-
रंग लिए, रस लिए, पराग लिए-
हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,
हम पर बौराए हैं।
सबकी सुन पाई है,
जड़ मुसकराई है!

1. कविता में पेड़ के विभिन्न अंग क्या कर रहें और क्यों? 1
2. फूल अपने आपको, डालों से, पत्तियों से श्रेष्ठ क्यों मानता है? 1
3. फूल, पत्ते, किस सत्य से अनभिज्ञ हैं? 1
4. जड़ की मुस्कान का रहस्य क्या है? 1
5. ''लेकिन हम हर-हर स्वर करती हैं'' इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए। 1

(ग) निर्मम कुम्हार की थापी से
कितने रूपों में कुटी-पिटी,
हर बार बिखेरी गई किंतु,
मिट्‌टी फिर भी तो नहीं मिटी
आशा में निश्छल पल जाए, छलना में पड़कर छल जाए,
सूरज दमके तो तब जाए, रजनी ठुमके तो ढल जाए,
यों तो बच्चों की गुड़िया-सी भोली मिट्‌टी की हस्ती क्या,
आंधी आए तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए,
फसलें उगतीं, फसलें कटतीं, लेकिन धरती चिर उर्वर है।
सौ बार बने, सौ बार मिटे, लेकिन मिट्‌टी अविनश्वर है।
मिट्‌टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है!
विरचे शिव, विष्णु, विरंचि विपुल
अगणित ब्रह्माण्ड हिलाए हैं,

पलने में प्रलय झुलाया है
गोदी में कल्प खिलाए हैं।
रो दे तो पतझर आ जाए, हंस दे तो मधुऋतु छा जाए,
झूमे तो नंदन झूम उठे, थिरके तो ताण्डव शरमाए,
यों मदिरालय के प्याले सी मिट्टी की मोहक मस्ती क्या,
अधरों को छूकर सकुचाए, ठोकर लग जाए छहराए।

1. कविता में कवि ने मिट्टी के किस स्वरूप पर प्रकाश डाला है? 1
2. मिट्टी की महिमा किसमें है और कैसे? 1
3. कुम्हार के लिए निर्मम शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है? 1
4. ''विश्वास अमर हो जाता है''। का आशय स्पष्ट करें। 1
5. कविता में आए उपमा अलंकार अथवा मानवीकरण का उदाहरण छांटिए। 1

घ) इन दिनों छटपटा रहा है वह
अच्छा लगने वाली बातों के अलावा
और सब कुछ तो हो रहा है
इन दिनों वाले समय में
यह आखिरी तनाव
यह आखिरी पीड़ा
यह अंतिम कुंठा
यह अंतिम भूख
पर कहां?
चले जाते हैं सिलसिले
बढ़ी जाती है बेकरारी
गुजर जाते हैं दिन-पर-दिन
अनचीन्हें - से
भीड़ के विस्फोट में गुम होने से पहले
आएगा क्या, कोई, ऐसा दिन एक
उसका अपने वाला भी?
जिस दिन की सारी बातें
अथ से इति तक
अच्छी लगने वाली हों उसे
उस दिन भी हवा वैसे ही चले

वैसे ही चले दुनिया भी
लोग भी वही करें
रोटियाँ भी वैसे ही पकें
जैसा वह चाहे
जैसा वह कहे।

1. कवि की छटपटाहट का कारण क्या है? 1

2. कवि कैसे दिन की प्रतीक्षा में है? 1

3. 'अर्थ से इति तक' कवि का क्या अभिप्राय है? 1

4. कवि क्या चाहता है उसने अपना भाव किन पंक्तियों में व्यक्त किया है? 1

5. 'अच्छी लगनी वाली बातों के अलावा और सब कुछ तो हो रहा है।'' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।
   1

व्यावहारिक लेखन

निबन्ध लेखन - 10 अंक

निर्देश :-

1. निबन्ध का शीर्षक अवश्य लिखें।
2. निबंध उपशीर्षकों में न लिखकर अनुच्छेद में लिखें।
3. विषयानुसार लाभ-हानि, प्रभाव-दुष्प्रभाव समस्या और समाधान का विवेचन करें।

अभ्यास-कार्य

साहित्यिक निबंध

क) साहित्यकार का सामाजिक उत्तरदायित्व

ख) हमारा साहित्य और समाज

ग) मेरा प्रिय कवि

घ) साहित्य और संस्कृति

नारी विषयक निबन्ध

क) महिला आरक्षण

ख) आज की नारी और मानसिक तनाव

ग) नारी सुरक्षा और आज का समाज

घ) आधुनिक नारी की उपलब्धियों

सूक्ति परक निबंध

क) 'ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोए' वाणी का माधुर्य

ख) जहां सुमति तहं सम्पत्ति नाना

ग) बुरा जो देखन मैं चला, मुझसे बुरा न कोय

घ) कर्म ही पूजा है।

सामान्य विषयों पर आधारित निबंध

क) मोबाइल फोन और इंटरनेट का प्रभाव

ख) अंग्रेजी के बोझ से दबती हिन्दी

ग) प्रथम सुख नीरोगी काया

घ) आधुनिक जीवन शैली में विज्ञापन का स्थान

भारत विषयक निबंध

क) नवीन आर्थिक नीति–उदारीकरण

ख) भारत का बदलता स्वरूप

ग) आधुनिक परिवेश और हमारी संस्कृति

घ) जातिवाद: एक अभिशाप

समस्या प्रधान निबंध

क) महानगरीय जीवन: संभावित खतरे और समाधान

ख) बढ़ती जनसंख्या : सिकुड़ते साधन

ग) भ्रष्टाचार का दानव

घ) आधुनिक नारी की सुरक्षा समस्या

ङ) काला धन : एक सामाजिक अभिशाप

विज्ञान सम्बन्धी निबंध

क) केबल टी.वी. और हमारी संस्कृति।

ख) वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति की दौड़ में हमारा स्थान

ग) समाचार पत्र: प्रिंट मीडिया और उसकी उपयोगिता।

घ) पृथ्वी से इत्तर जीवन की खोज

पत्र लेखन - 5 अंक

निर्देश :-

1. सम्पादक को पत्र लिखते समय 'दैनिक समाचार पत्र' न लिखकर समाचार पत्र का नाम लिखें।
2. समस्या समाधान का अनुरोध सम्बन्धित विभाग अधिकारी से करें, सम्पादक से नहीं।

समाचार सम्पादक को पत्र

क) निरंतर बढ़ती मंहगाई की ओर सराकर का ध्यान आकृष्ट करने हेतु किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखें।

ख) सम्पादक, नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली को अपने क्षेत्र में अनियमित जल आपूर्ति के सम्बन्ध में पत्र लिखें।

ग) सम्पादक जनसत्ता को घरेलू गैस उपभोक्ता संघ की ओर से गैस सिलिंडर की चोरी के सम्बन्ध में पत्र लिखें।

घ) आपके शहर में परिवहन व्यवस्था ठीक नहीं है। इस समस्या की ओर संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए स्थानीय समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखें।

विभिन्न विभागों से सम्बन्धित शिकायती पत्र/सूचना पत्र/अनुरोध पत्र

क) पानी का मीटर बंद हो जाने की शिकायत करते हुए दिल्ली जल बोर्ड के कार्यपालक अभियंता को पत्र लिखें।

ख) महानगर टेलीफोन निगम दिल्ली के प्रबंधक को घर में फोन कनेक्शन लगवाने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखें।

ग) बस यात्रा में आपकी साथ वाली सीट पर बैठे यात्री का सामान आपके पास रहा गया है। इस सामान की सूचना देने हेतु डी.टी.सी. के प्रबंधक को पत्र लिखें।

घ) आपके क्षेत्र में महिलाओं को छेड़ने व उनका पर्स और चैन खींचने की घटनाओं की सूचना देते हुए पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखें।

आवेदन पत्र

क) देना बैंक के कार्यालय सहायक के रिक्त पद हेतु बैंक के महप्रबंधक को आवेदन पत्र लिखें।

ख) एम.टी.एन.एल. में टेलीफोन ऑपरेटर के रिक्त पद हेतु एम.टी.एन.एल. के एच.आर.डी. अधिकारी को आवेदन पत्र लिखें।

ग) डी.ए.वी. स्कूल करोलबाग के प्रधानाचार्य को पुस्तकालय सहायक के रिक्त पद के संदर्भ में आवेदन पत्र लिखें।

घ) केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय में कनिष्ठ टंकण पद हेतु टंकण विभाग अधिकारी को पत्र लिखें।